हिंदी पुस्तक-10

(दसवीं कक्षा के लिए)

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਦੁਆਰਾ ਮੁਫ਼ਤ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਵਿਕਾਊ ਨਹੀਂ ਹੈ।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

प्रथम संस्करण : 2016..................1,56,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

लेखन एवं संपादन	:	**डॉ.नीरू कौड़ा**
	:	**डॉ. रविदत्त**
	:	**डॉ. मीनाक्षी वर्मा**
	:	**श्री विनोद कुमार**
संपादन एवं संशोधन	:	**डॉ. सुनील बहल**
विषय संयोजन	:	**श्रीमती मनजीत कौर**
चित्रांकन	:	**अमरजीत सिंह वालिया**

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा मैस: होलीफेथ इंटरनैशनल प्रा. लि. जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केन्द्रित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.), 2005 तथा पंजाब पाठ्यचर्या की रूपरेखा (पी.सी.एफ.), 2013 सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षणिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी की नौवीं कक्षा तक की पाठ्य-पुस्तकों का नवीकरण किया जा चुका है।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक 'हिंदी पुस्तक-10' को चार भागों में बाँटा गया है- कविता भाग, कहानी भाग, निबंध भाग तथा एकांकी भाग। विषय वस्तु में विविधता तथा नवीनता है। पाठों का चयन विद्यार्थियों के बौद्धिक व मानसिक स्तरानुकूल किया गया है। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति के साथ-साथ पंजाब के गौरव व संस्कृति को विशेष रूप से स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त पुस्तक में विकलांगों में आत्मविश्वास जागृत करना, देश के शक्ति बोध एवं सौन्दर्य बोध को सुदृढ़ करना, लोकतंत्र की प्रतिष्ठा, बुज़ुर्गों का सम्मान, भ्रष्टाचार उन्मूलन में सजगता लाना, पर्यावरण संरक्षण, नशों के दुष्परिणाम आदि विषयों को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक पाठ किसी न किसी मानवीय मूल्य को विकसित करता ही है। विद्यार्थियों में सत्य, धर्म, कर्मठता, साहस, परिश्रम, त्याग, चरित्र, न्याय, देशभक्ति आदि गुणों का संचार करने के साथ-साथ वैज्ञानिक व तार्किक दृष्टिकोण को उजागर करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में पाठ के अभ्यास से पूर्व कठिन शब्दों के अर्थ दिए गए हैं ताकि विद्यार्थी विषय को सरलता से समझ सकें तथा उनका शब्द भंडार बढ़े।

पाठों का चयन जितना महत्वपूर्ण होता है, उनका अभ्यास कार्य भी उतना ही महत्व रखता है। अभ्यासों को निम्नलिखित शीर्षकों से प्रस्तुत किया गया है-

(क) विषय बोध : 'विषय बोध' शीर्षक के अन्तर्गत बोधात्मक प्रश्नों को प्रधानता दी गयी है। विद्यार्थियों को एक-दो, तीन-चार तथा छह-सात पंक्तियों में उत्तर लिखने के लिए कहा गया है ताकि वे पाठों के अर्थबोध, आशय आदि को स्पष्ट कर सकें।

(ख) भाषा बोध : इसके अंतर्गत पाठ्यक्रमानुसार व्याकरण की इकाइयों को व्यावहारिक रूप से शामिल किया है। व्याकरण के अंतर्गत पूछे गए प्रश्न पाठों पर आधारित हैं। इसके साथ ही यथोचित स्थान पर मुहावरे, लोकोक्तियों तथा पंजाबी से हिंदी में अनुवाद को भी शामिल किया गया है।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति : विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता व सृजनात्मकता का विकास करने के उद्देश्य से ही रचनात्मक अभिव्यक्ति को अभ्यास का अंग बनाया गया है। इससे विद्यार्थियों को स्वाभाविक रूप से चिंतन व मनन करके अपनी अभिव्यक्ति को सरल व सीधे ढंग से प्रकट करने का अवसर मिलेगा। इससे उनकी लेखन प्रतिभा का विकास होगा।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता : इसके अंतगर्त विद्यार्थियों को पाठ से जुड़ी गतिविधियाँ करने का सुअवसर मिलेगा। इससे उनका पाठ से भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित होगा तथा विषय में रुचि बढ़ेगी। इन क्रियाओं से उनकी रचनात्मकता बढ़ेगी व कल्पनाशक्ति को नई उड़ान मिलेगी।

(ङ) ज्ञान विस्तार : इसके अन्तर्गत पाठ्य विषय से सम्बन्धित वाँछित अतिरिक्त जानकारी दी गयी है जिससे विद्यार्थी तथा अध्यापक दोनों वर्ग लाभान्वित होंगे।

परीक्षा में केवल विषय बोध व भाषा बोध से सम्बन्धित प्रश्न ही पूछे जायेंगे। पाठ्येतर सक्रियता, रचनात्मक अभिव्यक्ति व ज्ञान विस्तार का उपयोग विद्यार्थी की प्रतिभा निखार हेतु सी.सी.ई. के अन्तर्गत किया जाये।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में समर्थ सिद्ध होगी एवं विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास करने में सहायक सिद्ध होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अध्यापकों एवं अभिभावकों द्वारा भेजे गए सुझाव बोर्ड द्वारा साभार स्वीकार किए जायेंगे।

चेयरपर्सन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	पाठ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
	कविता भाग		
1.	दोहावली	तुलसीदास	1
2.	पदावली	मीराबाई	7
3.	नीति के दोहे	रहीम, बिहारी एवं वृन्द	12
4.	हम राज्य लिए मरते हैं	मैथिलीशरण गुप्त	19
5.	गाता खग	सुमित्रानंदन पंत	26
6.	जड़ की मुसकान	हरिवंशराय बच्चन	31
	कहानी भाग		
7.	ममता	जयशंकर प्रसाद	37
8.	अशिक्षित का हृदय	विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'	47
9.	दो कलाकार	मन्नू भंडारी	59
10.	नर्स	कला प्रकाश	71
11.	(i) माँ का कमरा **(लघु कथा)**	श्याम सुंदर अग्रवाल	81
	(ii) अहसास **(लघु कथा)**	उषा. आर.शर्मा	85
	निबंध भाग		
12.	मित्रता	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	91
13.	मैं और मेरा देश	कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'	103
14.	राजेन्द्र बाबू	महादेवी वर्मा	115
15.	सदाचार का तावीज़	हरिशंकर परसाई	124
16.	ठेले पर हिमालय	डॉ. धर्मवीर भारती	133
17.	श्री गुरु नानक देव	डॉ. सुखविन्द्र कौर बाठ	141
	एकांकी भाग		
18.	सूखी डाली	उपेन्द्रनाथ अश्क	149
19.	देश के दुश्मन	जयनाथ नलिन	178

(कविता भाग)

पाठ-1

तुलसीदास

(सन् 1532-1623)

कवि-परिचय

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण धारा की राम-भक्ति शाखा के मूर्धन्य कवि थे। वे अपने समय के प्रतिनिधि कवि थे। उनका समूचा काव्य समन्वय की भावना से निहित है। उन्होने अपने समाज को 'रामचरितमानस' जैसे महाकाव्य के द्वारा भक्ति, ज्ञान और समाज सुधार का उपदेश दिया। उन्होंने 'राम-राज्य' का एक आदर्श जनता के सम्मुख रखा, इसलिए उन्हें लोक नायक 'व' युग द्रष्टा 'व' युग स्रष्टा भी कहा जाता है।

तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में पिता आत्मा राम तथा माता हुलसी के घर बताया जाता है। बचपन में जल्दी ही माता पिता का देहान्त होने के कारण इन्हें संघर्ष का सामना करना पड़ा। नरहरिदास नामक महात्मा ने इनका पालन पोषण किया। प्रारम्भिक शिक्षा भी इनकी देखरेख में ही

हुई। काशी के महान विद्वान शेष सनातन ने इन्हें वेद शास्त्रों व इतिहास-पुराण का ज्ञान दिया। एक बहुत बड़े विद्वान बनकर तुलसी राजपुर लौटे। इनकी विद्वता से प्रभावित होकर दीनबन्धु पाठक ने अपनी सुन्दर और विदुषी पुत्री रत्नावली का विवाह इनसे कर दिया। ऐसा कहा जाता है कि इन्होने अपनी पत्नी के प्रति अगाध आसक्ति के कारण उससे फटकार खाने पर घर छोड़ दिया। तुलसी राम भक्त हो गए।

रचनाएँ : - गोस्वामी तुलसीदास के मुख्य रूप से बारह ग्रंथ प्रसिद्ध हैं जिनमें दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस व विनय पत्रिका प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त रामललानहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, कृष्ण गीतावली, वैराग्य संदीपनी तथा रामाज्ञा प्रश्नावली छोटे ग्रंथ हैं। इन्होंने ब्रज, अवधी व संस्कृत भाषा अपनायी। इस महान कवि का निधन सन् 1623 में हुआ।

पाठ-परिचय : प्रस्तुत पाठ में तुलसीदास जी के भक्ति एवं शिक्षाप्रद दोहे लिए गए हैं। भक्ति से सम्बन्धित दोहों में कवि ने प्रभु श्री राम के चरित्र की महानता दर्शाते हुए राम भक्ति के महत्व पर प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त विभिन्न शिक्षाप्रद दोहों में कवि ने स्वार्थ, ईर्ष्या, लोभ एवं क्रोध को छोड़कर समभाव से जीने का उपदेश दिया है। **प्रथम** दोहे में कवि तुलसीदास अपने गुरु के चरणों की धूल से अपने मन रूपी शीशे को साफ करते हुए श्री राम जी के पावन यश का गान करने को कह रहे हैं जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों फलों की प्राप्ति होती है। **दूसरे** दोहे में श्री राम के नाम रूपी मणियों से बने दीपक को अपने हृदय में रखने का उपदेश देते हैं। जिस दीपक से हृदय के भीतर और बाहर उजाला हो जाएगा अर्थात अज्ञान का नाश हो जाएगा। **तीसरे** दोहे में संतों की तुलना हंस से की गई। जिस तरह हंस नीर-क्षीर विवेक करता है अर्थात दूध और पानी को अलग कर देता है उसी प्रकार संत भी इस संसार को जिस में गुण और दोष-विकार है, वे गुण रख कर दोषों और विकारों को छोड़ देते हैं। **चौथे** दोहे में श्री राम के चरित्र की महानता की बात है, जिन्होने वृक्षों पर रहने वाले वानरों को भी पूरा मान-सम्मान दिया। **पाँचवें** दोहे में तुलसीदास जी कहते हैं कि ईश्वर से प्रेम करने से, संसार के सभी लोगों से समता रखने से तथा विभिन्न विकारों को छोड़ने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है। **छठे** दोहे में संतों की संगति की महिमा गायी गयी है। **सातवें** दोहे में गोस्वामी जी स्वार्थी और ईर्ष्यालु व्यक्ति के भाग्य की बात करते हैं कि जो दूसरों के सुख व समृद्धि को देखकर ईर्ष्या की आग में जलने लगता है, उसका कभी भी हित नहीं हो सकता। **आठवें** दोहे में भगवान से उसके भक्त को बड़ा दिखाते हुए तुलसीदास कहते हैं कि श्री राम जी ने तो लंका जाने के लिए पुल की मदद ली परन्तु उनके भक्त हनुमान जी बिना पुल के ही इतने विशाल समुद्र को लांघ गए। **नौवें**

दोहे में नीति की बात बताई गई है कि यदि आपका गुरु, वैद या मंत्री भय या किसी लोभ वश आपकी हर बात ज्यों की त्यों मान लेते हैं तो समझ लीजिए आपका धर्म, शरीर या राज्य नष्ट होने वाला है। यह दोहा रावण के संदर्भ में कहा गया है जिसके मन्त्री उसे सही सलाह न देकर डर के कारण उसकी हर बात पर जी हाँ कहते थे, इसी कारण रावण का शीघ्र ही नाश हो गया। **अन्तिम** दोहे में कवि ने परमात्मा पर विश्वास करके भक्ति करने पर बल दिया है।

तुलसीदास (दोहावली)

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि।। 1

राम नाम मनी दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरु हुँ, जौ चाहसि उजियार।। 2

जड़ चेतन गुन दोषभय, बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि विकार।। 3

प्रभु तरुतर कपि डार पर, ते किए आपु समान।
तुलसी कहुँ न राम से, साहिब सील निधान।। 4

तुलसी ममता राम सो, समता सब संसार।
राग न रोष न दोष दुःख, दास भए भव पार।। 5

गिरिजा संत समागम सम, न लाभ कछु आन
बिनु हरि कृपा न होइ सो, गावहिं वेद पुरान। 6

पर सुख संपति देखि सुनि, जरहिं जे जड़ बिनु आगि।
तुलसी तिन के भाग ते, चलै भलाई भागि।। 7

साहब ते सेवक बड़ो, जो निज धरम सुजान।
राम बाँध उतरै उद्धि, लांघि गए हनुमान।। 8

सचिव वैद गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भयु आस।
राज, धर्म, तन तीनि कर, होइ बेगिही नास।। 9
बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि विनु द्रवहिं न राम।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ, जीवन लह विश्राम।। 10

शब्दार्थ

सरोज = कमल**; रज** = धूल; **मुकुरु** = दर्पण; **द्रवहिं** = पसीजना, द्रवित होना; **फल चारि** = (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार फल); **मनी दीप** = मणि से बना दीपक **; देहरी** = दहलीज; **बिस्व** = संसार; **पय** = दूध; **परिहरि** = दूर करना; **बारि** = पानी; **कपि** = बन्दर; **राग** = प्रेम; **जड़** = मूर्ख; **उद्धि** = समुद्र; **सचिव** = मंत्री।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) तुलसीदास जी के अनुसार राम जी के निर्मल यश का गान करने से कौन से चार फल मिलते हैं ?

(2) मन के भीतर और बाहर उजाला करने के लिए तुलसी कौन सा दीपक हृदय में रखने की बात करते हैं ?

(3) संत किस की भाँति नीर-क्षीर विवेक करते हैं ?

(4) तुलसीदास के अनुसार भव सागर को कैसे पार किया जा सकता है ?

(5) जो व्यक्ति दूसरों के सुख और समृद्धि को देखकर ईर्ष्या से जलता है, उसे भाग्य में क्या मिलता है ?

(6) रामभक्ति के लिए गोस्वामी तुलसीदास किसकी आवश्यकता बतलाते हैं ?

II. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(1) प्रभु तरुतर कपि डार पर, ते किए आपु समान।
तुलसी कहुँ न राम से, साहिब सील निधान।।

(2) सचिव, वैद, गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भयु आस।
राज, धर्म, तन तीनि कर, होइ बेगिही नास।

(ख) भाषा-बोध

(1) निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखें :

संपति =	____________	भलाई =	____________
सेवक =	____________	लाभ =	____________

(2) निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाएँ :

दास	=	____________	निज	=	____________
गुरु	=	____________	जड़	=	____________

(3) निम्नलिखित के विशेषण शब्द बनाएँ :

धर्म	=	____________	मन	=	____________
भय	=	____________	दोष	=	____________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

(1) अपने विद्यालय के पुस्तकालय से गोस्वामी तुलसीदास से सम्बन्धित पुस्तकों से उनके जीवन की अन्य घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

(2) तुलसीदास द्वारा रचित दोहों की ऑडियो या वीडियो सी.डी. लेकर अथवा इंटरनेट से इन दोहों को सुनकर आनन्द लें और स्वयं भी इन को याद कर लय में गाने का अभ्यास करें।

(3) इंटरनेट के माध्यम से राष्ट्रीय दूरदर्शन पर दिखाए 'तुलसीदास' के जीवन पर आधारित सीरियल को ग्रीष्म अवकाश में देखें।

(घ) ज्ञान-विस्तार

इस पाठ का प्रथम दोहा 'श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि। बरनऊँ रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि।।' — श्री हनुमान चालीसा का प्रथम दोहा है। गोस्वामी तुलसीदास श्री हनुमान जी के परम भक्त थे। हनुमान चालीसा भी तुलसीदास द्वारा रचित है। हनुमान के पिता का नाम केसरी व माता का नाम अंजना था। हनुमान जी को महाबली व श्री राम के अनन्य भक्त के रूप में चित्रित किया गया है। लक्ष्मण मूर्छा के समय संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी को जीवन दान दिलाने, सीता जी के बारे में पता लगाने के लिए विशाल समुद्र को पार कर लंका में पहुंचना, रावण के अभिमान को चूर-चूर कर सोने की लंका को जलाने वाले हनुमान जी के पराक्रम की अनेक गाथाएं हैं। उन्होंने जहाँ राम जी के आदर्श सेवक के रूप में अपने कर्त्तव्य की पूर्ति की, वहाँ सुग्रीव के साथ आदर्श मित्रता भी निभायी।

****

पाठ–2
मीराबाई
(सन् 1498–1573)

कवयित्री-परिचय

मीराबाई हिंदी भक्तिकाल की कृष्ण भक्त कवयित्री हैं। उनके काव्य में कृष्ण भक्ति के साथ साथ थोथी कुल मर्यादा तथा अन्धी नैतिकता के प्रति विद्रोह है। उन्होंने सोलहवीं शती में नारी स्वतन्त्रता का बिगुल भी बजा दिया। उन्हें नारी विमर्श की महान क्रान्तिकारी कवयित्री के रूप में देखा जा सकता है।

मीरा का जन्म सन् 1498 में जोधपुर (राजस्थान) के कुड़की गाँव में राव रत्नसिंह राठौर के घर हुआ। बचपन में ही माँ के निधन के कारण इनका पालन–पोषण इनके दादा दूदा जी ने किया। मीरा के दादा जी श्री कृष्ण के भक्त थे। उनकी कृष्ण भक्ति से प्रभावित होकर मीरा बचपन से ही श्री कृष्ण भक्ति में लीन हो गई। मीरा का विवाह मेवाड़ के राणा साँगा के सबसे बड़े पुत्र भोजराज के साथ हुआ। परन्तु विवाह के कुछ वर्ष बाद ही यह विधवा हो गई। इस दुखद घटना ने मीरा को संसार से विरक्त कर दिया। वैधव्य ने भक्ति के संस्कारों को पल्लवित किया और मीराबाई उस समय के

राजघरानों की मर्यादा को छोड़ साधु सन्तों के बीच रहने, मन्दिरों में कीर्तन करने और नाचने गाने लगी। राजपूती शान के विरुद्ध आचरण से परिवार के सभी लोग मीरा से रुष्ट हो गए। इनके देवर ने तो कई बार मीरा को मरवाने की चेष्टा भी की, पर श्री कृष्ण जी की कृपा से मीरा हर बार बच गई। परिवार के लोगों के व्यवहार से दु:खी होकर मीरा वृन्दावन और फिर द्वारिका चली गयीं। वहीं उन्होंने देह त्याग दी। इनकी मृत्यु का वर्ष विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग बताया है।

रचनाएँ : मीराबाई की 'राग गोविन्द', 'राग सोरठा के पद', 'नरसी जी का मायरा', 'गीत गोविन्द की टीका' तथा मीरा की पदावली — ये रचनाएँ मानी जाती हैं। इनमें से 'मीरा पदावली' मीराबाई की प्रमुख रचना है। उनकी भक्ति में माधुर्य भाव है। शैली मुक्तक है जिसमें गेय तत्व है। भाषा में राजस्थानी, मारबाड़ी, ब्रज और गुजराती का संगम है।

पाठ-परिचय : यहाँ मीराबाई के दो प्रमुख पद लिए गए हैं। **पहले** पद में मीरा ने बालकृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन किया है। मीराबाई श्री कृष्ण की मन को मोहित करने वाली सुन्दर छवि को अपनी आँखों में बसाना चाहती है। श्री कृष्ण की साँवली सूरत व बड़ी-बड़ी आँखें हैं। उन्होंने मोर के पंखों का बना मुकुट व मकर की आकृति के कुण्डल धारण किए हैं। माथे पर लाल रंग का तिलक शोभा बढ़ा रहा है। ओठों पर अमृत के समान मीठी ध्वनि निकालने वाली मुरली है और हृदय पर वैजन्ती माला सुशोभित है। छोटी-छोटी घंटियाँ कमर पर बंधी हैं, पाँवों में छोटे-छोटे घुँघरू बंधे हैं, जिनकी ध्वनि मन को आकर्षित करती है। मीरा के प्रभु श्री कृष्ण का यह रूप सन्तों को सुख देने वाला तथा भक्तों की रक्षा करने वाला है।

दूसरे पद में मीरा ने श्री कृष्ण को अपना सर्वस्व मानते हुए कहा कि गोवर्धन पर्वत को उठाने वाले श्री कृष्ण ही मेरे पति है—जिसके सिर पर मोर के पंखों का सुन्दर मुकुट है, वही कृष्ण मेरे अपने हैं—दूसरा कोई मेरा नहीं है। मैंने कुल की झूठी मर्यादा छोड़ दी है—मुझे अब किसी की परवाह नहीं है। सन्तों की संगति में रह कर मैंने लोक लाज को छोड़ दिया है। श्री कृष्ण रूपी प्रेम की बेल को मैंने अपने आँसुओं से सींचा हैं। अब प्रेम की वह बेल खिल गई है और उस पर भक्ति के मीठे-मीठे फल लगे हैं, जिससे आनन्द की प्राप्ति होगी। मीरा कहती है कि भक्तों को देखकर उसे खुशी मिलती है—संसार का झमेला तो दु:ख ही देने वाला है जिसमें रोना धोना ही है। मीराबाई श्री कृष्ण से प्रार्थना करती है कि वह उसकी दासी है—अब संसार रूपी समुद्र से उसका उद्धार किया जाए। इस पद में नारी विमर्श की झलक मिलती है।

मीराबाई (पदावली)

बसौ मेरे नैनन में नन्द लाल।
मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बनै विसाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाला
अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजन्ती माल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नुपूर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त बछल गोपाल।। (1)

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुअन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारौ अब मोही। (2)

शब्दार्थ—

नन्दलाल = नन्द के बेटे श्री कृष्ण; **बिसाल** = विशाल, बड़े; **अरुण** = लाल; **भाल** = मस्तक, माथा; **अधर** = होंठ ; **उर** = हृदय; **कटि** = कमर; **नुपूर** = घुँघरू; **रसाल** = मीठा, मोहक; **बछल** = वत्सल, रक्षक; **गिरिधर** = गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाला; **कानि** = मर्यादा; **राजी** = प्रसन्न; **तारो** = उद्धार करना, तारना

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) श्री कृष्ण ने कौन सा पर्वत धारण किया था ?

(2) मीरा किसे अपने नयनों में बसाना चाहती है ?

(3) श्री कृष्ण ने किस प्रकार का मुकुट और कुण्डल धारण किए हैं ?

(4) मीरा किसे देखकर प्रसन्न हुई और किसे देखकर दु:खी हुई ?

(5) सन्तों की संगति में रहकर मीरा ने क्या छोड़ दिया ?

(6) मीरा अपने आँसुओं के चल से किस बेल को सींच रही थी ?

(7) पदावली के दूसरे पद में मीराबाई गिरिधर से क्या चाहती है ?

II. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(1) बसौ मेरे नैनन में नन्द लाल।
मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बनै विसाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाल।
अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजन्ती माला।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नुपूर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त बछल गोपाल।।

(2) मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुअन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारौ अब मोही।

(ख) भाषा-बोध

(1) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :

भाल : ____________________

प्रभु : ____________________

जगत : ____________________

वन : ____________________

(2) निम्नलिखित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

कुल : ______________________________

कूल : ______________________________

कटि : ______________________________

कटी : ______________________________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

(1) मीराबाई द्वारा वर्णित श्री कृष्ण के बाल रूप का एक चित्र लेकर अपने विद्यालय की भित्ति पत्रिका पर लगाएँ।

(2) मीराबाई की तरह अन्य कृष्ण भक्त कवियों जैसे सूरदास, रसखान आदि ने श्री कृष्ण के बाल सौन्दर्य का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। अपने स्कूल के पुस्तकालय से ऐसे कवियों के कुछ पद संकलित करें।

(3) मीराबाई के पदों की सी.डी/डी.वी.डी देखें या इंटरनेट पर इन पदों को सुन कर आनन्द लें।

(4) कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर 'मीरा पद गायन' प्रतियोगिता का आयोजन करें।

(घ) ज्ञान-विस्तार

मीरा ने प्राय: श्री कृष्ण के लिए 'गिरिधर गोपाल' शब्द का प्रयोग अपने पदों में किया है। 'गिरिधर' शब्द-गिरि अर्थात पहाड़ (पर्वत) तथा अर्थात् धारन करना। इस तरह गिरिधर का अर्थ हुआ—पहाड़ को धारण करने वाले। श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को धारण किया था। गोवर्धन पर्वत द्वारा वृन्दावन वासियों को दिए जाने वाली प्राकृतिक संपदा के लिए गोवर्धन पर्वत की पूजा करने के लिए श्री कृष्ण द्वारा प्रेरित किया गया। इस पर इन्द्र देवता रुष्ट हो गए और उन्होने तेज़ वर्षा करके सारे गाँव को तबाह करने का प्रयास किया। उस समय श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को धारण करके ब्रजवासियों की रक्षा की तथा इन्द्र देवता के घमण्ड को चूर-चूर कर दिया। इसलिए श्री कृष्ण को गिरिधर भी कहा जाता है। 'गोपाल' का अर्थ है गौओं की पालना करने वाले। श्री कृष्ण निश्चय ही पशु-पक्षियों और वृन्दावन की वनस्पति से प्रेम करने वाले तथा उनके रक्षक और पालक थे।

****

पाठ-3

रहीम, बिहारी, वृन्द

कवि-परिचय

रहीम : (सन् 1553-1625)

इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खान खाना था। इनका उपनाम रहीम था। इनके पिता का नाम बैरम खां था। ये अकबर के राज्यकाल में दरबार के नवरत्नों में से एक थे। परन्तु जहांगीर के शासनकाल में राजद्रोह के अपराध में इन्हें बंदी कर लिया गया और जागीर भी छीन ली गई। इनकी वृद्धावस्था राजकीय कोप के कारण बड़ी दीनता में बीती। उस समय की दयनीय दशा की छाया इनके कई दोहों में मिलती है। रहीम संस्कृत, फारसी, अरबी, ब्रज और अवधि भाषाओं के ज्ञाता थे। मुसलमान होते हुए भी इन्हें हिन्दू गाथाओं और पौराणिक कहानियों का अच्छा ज्ञान था। रहीम तुलसीदास के प्रिय मित्र थे।

रचनाएँ—'रहीम सतसई' रहीम की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है। इसमें जीवन के गहरे अनुभवों का निचोड़ है। इनकी भाषा सरल और सुबोध है। शैली मुक्तक है। इन्होंने दोहा छन्द को अपनाया है।

बिहारी : (सन् 1603-1664)

महाकवि बिहारी लाल का जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम केशवराय था। बिहारी जी की जन्म व मृत्यु तिथि के सम्बन्ध में विद्वानों का एक मत नहीं है। इन्होंने आचार्य केशवदास से काव्य कला की शिक्षा-ग्रहण की थी। विवाह के बाद ये अपनी सुसराल मथुरा में रहने लगे। कहा जाता है कि शाहजहाँ ने बिहारी को आगरे बुलाया और पुरस्कृत किया था। इसके बाद ये जयपुर के राजा जयसिंह के आश्रय में चले गए। वहां इन्होंने 'सतसई' की रचना की। वहां इनकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। जिसके बाद ये वृन्दावन में चले गए. जहां सन् 1664 में इनका देहान्त हो गया।

रचनाएँ—'बिहारी सतसई' बिहारी की ख्याति का आधार है। यह उनकी एकमात्र रचना है। इनमें सात सौ सत्रह दोहे हैं। इनकी भाषा ब्रज है। बिहारी के दोहों में श्रृंगार रस मुख्य है। इसके साथ-साथ भक्ति, नीति, प्रकृति चित्रण आदि वर्णन में भी बिहारी किसी से पीछे नहीं हैं। इनकी शैली मुक्तक है। इन्होंने 'दोहा' छन्द को अपनाया है। बिहारी के दोहों के बारे कह गया है।

'सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन को छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।।

वृन्द : (सन् 1685-1765)

वृन्द का नाम रीतिकालीन परम्परा के अन्तर्गत बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। अन्य

प्राचीन कवियों की भाँति वृन्द की जन्म व मृत्यु तिथि के सम्बन्ध में विद्वानों का एक मत नहीं है। वृन्द कवि मेवाड़ (जोधपुर) के रहने वाले थे। इन्होंने काशी में जाकर संस्कृत पढ़ी थी। कहा जाता है कि ये कृष्णगढ़ नरेश महाराज राजसिंह के गुरु थे और उनके साथ औरंगज़ेब की फौज में ढाका में गए थे। इनके वंशधर अब तक कृष्णगढ़ में हैं। ये जोधपुर में महाराज जसवन्त सिंह के दरबार में भी रहे थे।

रचनाएँ—इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—'वृन्द सतसई', 'पवन पचीसी', 'हितोपदेश सन्धि', 'वचनिका', 'शृंगार शिक्षा' और 'भाव पंचाशिका'। इनमें वृन्द सतसई बहुत प्रसिद्ध हैं, जिसमें नीति के सात सौ दोहे हैं। इनके नीति के दोहे जन साधारण में बहुत प्रसिद्ध हैं। इनकी भाषा सरल है व लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। इनका काव्य लोक नीति का सुन्दर संग्रह है।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत संकलन में 'नीति के दोहे' के अन्तर्गत महाकवि रहीम, बिहारी व वृन्द के नीति से सम्बन्धित शिक्षा दायक व प्रेरणादायक दोहे हैं। **प्रथम** दोहे में रहीम जी कहते है कि सम्पति या अच्छे समय में आपके बहुत से मित्र बन जाते हैं, परन्तु जो विपत्ति या कठिनाई में साथ देता है वही सच्चा मित्र है। **दूसरे** दोहे में रहीम जी अपना लक्ष्य या ध्येय एक ओर केन्द्रित करने की शिक्षा देते हैं। उनका कहना है कि एक की साधना पूरी तरह करने से सब साधे जाते हैं और सबके पीछे दौड़ने पर सब बेकार हो जाता है, जिस प्रकार वृक्ष की जड़ को सींचने पर फूल, फल सब तृप्त हो जाते हैं। **तीसरे** दोहे में स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ के महत्व को दिखाया है जिस तरह वृक्ष अपना फल खुद न खाकर संसार को दे देते हैं—तालाब अपना जल दूसरों के लिए देते हैं उसी प्रकार दानी व्यक्ति अपनी सम्पति परमार्थ या दूसरों की भलाई के कार्यों में लगाते हैं। **चौथे** दोहे में रहीम जी कहते हैं कि किसी वस्तु के छोटे आकार को देखकर उसके महत्व को नहीं भूलना चाहिए जिस प्रकार सुई जो कार्य कर सकती है वह तलवार जैसी बड़ी चीज़ भी नहीं कर सकती अत: हमें बड़ी वस्तु को देखकर छोटी वस्तु की उपयोगिता को भूलना नहीं चाहिए।

पाँचवें दोहे में बिहारी जी कहते हैं कि कनक (सोने) का नशा धतूरे (कनक) के नशे से सौ गुना है क्योंकि धतूरे (कनक) को तो खाने से ही नशा चढ़ता है पर सोना (कनक) अर्थात् धन सम्पत्ति तो जिस व्यक्ति के पास आ जाती है उसे दौलत का नशा चढ़ जाता है। **छठे** दोहे में बिहारी जी ने एक भँवरे के माध्यम से मानव को आशावादी होने का सन्देश दिया है। उनका कहना है कि पतझड़ में भी इसी उम्मीद के साथ भँवरा फूल की डालियों के पास रहता है कि बसन्त आने पर इनमें फिर फूल लगेंगे अर्थात् मानव को निराश न होकर आने वाले अच्छे दिनों के लिए आशावादी होना चाहिए। **सातवें** दोहे में बिहारी जी कहते हैं कि एक जैसे स्वभाव या प्रकृति वालों का साथ ही ज़्यादा

देर रहता है जैसे पान की पीक लाल रंग की होती है, वह ओठों पर रहती है। काजल काले रंग का होता है, वह आँखों में बसता है। **आठवें** दोहे में बिहारी जी गुणों के महत्व पर ज़ोर देते हैं—गुणी-गुणी कहने से बिना गुण वाला गुणवान नहीं हो जाता जैसे अर्क यानि आक का पौधा सूर्य के समान नहीं हो जाता क्योंकि सूर्य को भी अर्क कहते हैं। इसलिए हमें नाम पर ही नहीं गुण या योग्यता पर ध्यान देना चाहिए।

नौवें दोहे में वृन्द जी परिश्रम के महत्व के बारे में कहते हैं कि लगातार मेहनत करने से मूर्ख भी विद्‌वान हो सकता है, जिस तरह बार-बार रस्सी घिसने से पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं अत: कमज़ोर व्यक्ति भी लगातार मेहनत करके अपने लक्ष्य को पा सकता है। **दसवें** दोहे में वृन्द छल और कपट के व्यवहार को थोड़ी देर चलने वाला ही मानते हैं कि जिस तरह काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ सकती उसी तरह धोखेबाज़ व्यक्ति एकाध बार तो चालाकी कर सकता है लेकिन उसकी चालाकी बार-बार नहीं चल पाती। **ग्यारहवें** दोहे में वृन्द मीठे वचनों के महत्व को दर्शाते हुए कहते हैं कि हैं जिस तरह उबल रहे दूध का उफान ठण्डे जल के छींटे से दूर हो जाता है उसी तरह ही गर्व या घमण्ड को मीठे वचनों से शान्त किया जा सकता है। **बारहवें** दोहे में वृन्द शिक्षा देते हैं कि अपने शत्रु को कभी भी कम में नहीं लेना चाहिए जिससे बात बिगड़ जाती है-जैसे छोटा सा अंगारा तिनकों के बड़े समूह को जला सकता है। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि छात्र-छात्राओं को अपने ध्येय को कभी कम में न लेकर उसके लिए पूरी अर्थात युद्‌ध स्तर पर तैयारी करनी चाहिए।

नीति के दोहे

रहीम

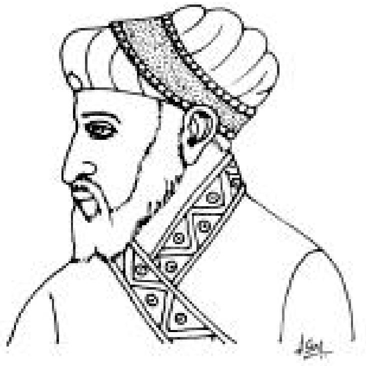

कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपत कसौटी जे कसे, सोई साँचै मीत।। (1)
एकै साधे सब सधै, सब साधै सब जाय।
रहिमन सींचे मूल को, फूलै फलै अधाय।। (2)
तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, सम्पति संचहिं सुजान।।(3)
रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, का करे तरवारि।। (4)

बिहारी

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
बह खाये बौरात है, यह पाये बौराय।। (5)
इहि आशा अटक्यो रहै, अलि गुलाब के मूल।
हो इहै बहुरि बसन्त ऋतु, इन डारनि पै फूल।। (6)
सोहतु संग समानु सो, यहै कहै सब लोग।
पान पीक ओठनु बनैं, नैननु काजर जोग।। (7)
गुनी गुनी सबकै कहैं, निगुनी गुनी न होतु।
सुन्यौ कहूँ तरू अरक तें, अरक-समान उदोतु।। (8)

वृन्द

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।। (9)
फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्यापार।
जैसे हाँडी काठ की, चढ़ै न दूजी बार।। (10)
मधुर वचन ते जात मिट, उत्तम जन अभिमान।
तनिक सीत जल सों मिटे, जैसे दूध उफान।। (11)
अरि छोटो गनिये नहीं, जाते होत बिगार।
तृण समूह को तनिक में, जारत तनिक अंगार।। (12)

शब्दार्थ—

कसौटी = गुणवत्ता को परखना, मापदण्ड; **सम्पति** = धन, दौलत; **बौरात** = बौरा जाना, नशे में होना; **बहुरीत** = कई प्रकार से ; **निगुनी** = बिना गुन वाला; **बिपत** = कठिनाई के समय; **अरक** = आक, सूर्य; **मीत** = मित्र; **जड़मति** = मूर्ख ; **मूल** = जड़ ; **सुजान** = बुद्धिमान; **अघाय** = तृप्त होना; **सिल** = शिला, पत्थर; **पर काज** = परमार्थ, दूसरे के कार्य के लिए; **उफान** = उबाल; **संचहि** = इकट्ठा करना; **अरि** = शत्रु ; **कनक** = सोना, धतूरा; **तृण** = तिनका; **मादकता** = मस्ती, नशा ।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए—

(1) रहीम जी के अनुसार सच्चे मित्र की क्या पहचान है ?

(2) ज्ञानी व्यक्ति सम्पत्ति का संचय किस लिए करते हैं ?

(3) बिहारी जी के अनुसार किसका साथ शोभा देता है ?

(4) बिहारी जी ने मानव को आशावादी होने का क्या संदेश दिया है ?

(5) छल और कपट का व्यवहार बार-बार नहीं चल सकता-इसके लिए वृन्द जी ने क्या उदाहरण दिया है ?

(6) निरन्तर अभ्यास से व्यक्ति कैसे योग्य बन जाता है? वृन्द जी ने इसके लिए क्या उदाहरण दिया है ?

(7) शत्रु को कमज़ोर या छोटा क्यों नहीं समझना चाहिए ?

II. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(1) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहां काम आवे सुई, का करे तरवारि।।

(2) कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
बह खाये बौरात है, यह पाये बौराय।।

(3) मधुर वचन ते जात मिट, उत्तम जन अभिमान।
तनिक सीत जल सों मिटे, जैसे दूध उफान।।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखें—

सम्पति	____________	उत्तम	____________
हित	____________	आशा	____________
बैर	____________		

II. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण शब्द बनाएं—

प्रकृति	____________	विष	____________
बल	____________	मूल	____________
हित	____________	व्यापार	____________

III. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाएं—

लघु	____________	मादक	____________
एक	____________	मधुर	____________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

(1) अध्यापक महोदय उपर्युक्त नीति के दोहों पर आधारित शिक्षाप्रद कहानियाँ छात्र-छात्राओं को सुनाएं और उनसे भी इस प्रकार की कोई सच्ची घटना अथवा कहानी सुनाने के लिए कहें।

(2) छात्र-छात्राएँ इस प्रकार के अन्य दोहों का संकलन कर विद्यालय की भित्ति पत्रिका पर लगाएँ।

(3) कक्षा में 'दोहा गायन प्रतियोगिता' में सक्रिय रूप से भाग लें।

(4) रहीम अथवा अन्य कवियों के द्वारा रचित दोहों की ऑडियो/वीडियो सी.डी. लेकर अथवा इंटरनेट के माध्यम से सुनें/देखें।

(घ) ज्ञान-विस्तार

बिहारी, रहीम तथा वृन्द ने नीति की अत्यन्त महत्वपूर्ण बातें 'दोहा' छन्द के माध्यम से की हैं। 'दोहा' एक मात्रिक छन्द है जिसके पहले तथा तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। मात्राओं की गिनती की विधि इस प्रकार है—

।।। ।।। ऽ ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ ।। ऽ।

कनक कनक ते सौ गु नी, मा द क ता अधिकाय।

।। ऽऽ ऽ ऽ। ऽ ।। ऽऽ ऽ ऽ।

वह खाये बौरात है, यह पाये बौराय।।

यहां ' ।' का अर्थ है एक मात्रा या लघु वर्ण तथा ' ऽ' का अर्थ है दो मात्रा या गुरु वर्ण। वास्तव में ह्रस्व स्वर जैसे अ, इ, उ वर्ण के लिए एक मात्रा (।) तथा दीर्घ स्वर जैसे आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ के लिए दो मात्राएँ (ऽ) गिनी जाती हैं।

इस आधार पर ऊपर के पहले चरण में 7(।) + 3(ऽ) अर्थात $7 \times 1 + 3 \times 2 = 13$ मात्राएँ
दूसरे चरण में 5(।) + 3(ऽ) अर्थात $5 \times 1 + 3 \times 2 = 11$ मात्राएँ
तीसरे चरण में 3(।) + 5(ऽ) अर्थात $3 \times 1 + 5 \times 2 = 13$ मात्राएँ
चतुर्थ चरण में 3(।) + 4(ऽ) अर्थात $3 \times 1 + 4 \times 2 = 11$ मात्राएँ हैं।

****

पाठ-4

मैथिलीशरण गुप्त

(सन् 1886 से 1964)

कवि-परिचय

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 में चिरगाँव, जिला झाँसी उत्तर प्रदेश में हुआ। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्त अच्छे कवि थे। इस प्रकार गुप्त जी को कविता विरासत के रूप में मिली। इनकी आरम्भिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय में हुई। इसके बाद वे झाँसी के मेकडॉनल स्कूल में दाखिल हुए। गुप्त जी की आरम्भिक रचनाएँ कोलकाता से प्रकाशित हुआ करती थीं। बाद में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने पर 'सरस्वती' पत्रिका में भी प्रकाशित होने लगीं। द्विवेदी जी के प्रोत्साहन से गुप्त जी की काव्यकला निखरने लगी।

गुप्त जी की कविताओं में स्वदेश प्रेम, मानव प्रेम, साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता की भावना है। उन्होने अपनी काव्य रचनाओं का आधार पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथानकों को बनाया। गुप्त जी ने नारी को अबला रूप से मुक्त करके उसे लोक सेविका तथा स्वाभिमानिनी के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—रंग में भंग, भारत भारती, जयद्रथ वध, साकेत, शकुन्तला, चन्द्रहास, किसान, पंचवटी, स्वदेश संगीत, गुरुकुल, झंकार, यशोधरा, द्वापर, मंगलधर, नहुष, विश्ववेदना आदि। गुप्त जी की 'अर्जन और विसर्जन' में ईसाई संस्कृति, 'काबा और कर्बला' में इस्लाम, 'कुणाल' में बौद्ध संस्कृति तथा 'अनध' में जैन संस्कृति की छाप है। आपकी 'प्लासी का युद्ध' 'मेघनादवध्' 'स्वप्नवासवदत्ता', 'रुबाइयात उमर खैयाम' आदि अनूदित रचनाएँ हैं। गुप्त जी को साकेत महाकाव्य पर मंगलाप्रसाद पुरस्कार मिला। इसके अतिरिक्त आगरा इन्हें विश्वविद्यालय से 'डीलिट' की मानद उपाधि तथा भारत सरकार की ओर से 'पदम भूषण' से अलंकृत किया गया। बारह वर्ष तक वे भारतीय संसद के मनोनीत सदस्य भी रहे। सन् 1964 में गुप्त जी का निधन हुआ।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत भावपूर्ण गीत गुप्त जी के प्रसिद्ध महाकाव्य 'साकेत' के नवम् सर्ग से लिया गया। 'साकेत' की नायिका उर्मिला यहां राज्य के कारण हुए गृह-कलह से दु:खी है वह किसानों के शान्ति पूर्ण जीवन की प्रशंसा करती हुई कहती है कि वास्तविक राज्य हमारे किसान ही करते हैं। जिनके

खेतों में अन्न उपजता है, उनसे अधिक धनी अन्य कौन हो सकता है ? सांसारिक ऐश्वर्य को भरते हुए वे अपनी पत्नी को लेकर स्वतन्त्रता से बाहर घूमते हैं जबकि हम राज्य के अभिमान में ही मरते रहते हैं। किसानों के पास गोधन है—उनका हृदय उदार है-मधुर और गुणकारी दूध उन्हें सरलता से प्राप्त है-वे सहनशील है-संसार रूपी समुद्र को अपनी मेहनत से पार करते हैं। जबकि हम लोग राज्य के लिए झगड़ा करने पर तुले हैं। यदि वे किसी बात पर गर्व करे तो ठीक है—हर रोज़ उनके त्योहार और मेले हैं—जिनके हम जैसे रक्षक हों—उनको किस बात का डर अर्थात वे निडर हैं। ज्ञानी लोग हर बात में मीन मेख करते हैं चाहे उससे कुछ हासिल हो या नहीं पर किसान इन ऊपरी बातों को छोड़ कर धर्म की मूल बात को समझते हैं। उर्मिला कहती है कि मान लो हम लोग किसान होते तो राज्य की उलझनों से उत्पन्न कष्टों को फिर कौन भोगता। कुछ भी हो—किसान हमारे अन्नदाता हैं और इन्हें देखकर ही हमारा दु:ख दूर हो सकता है। लेकिन खेद की बात यह है कि सब समझते हुए भी हम इस अभिमान के कारण मरे जा रहे हैं कि हम एक राज्य के अधिकारी हैं।

हम राज्य लिए मरते हैं

हम राज्य लिए मरते हैं ।
सच्चा राज्य परन्तु हमारे कर्षक ही करते हैं।
जिनके खेतों में है अन्न,
कौन अधिक उनसे सम्पन्न ?
पत्नी-सहित विचरते हैं वे, भव वैभव भरते हैं,
हम राज्य लिए मरते हैं।
वे गोधन के धनी उदार,
उनको सुलभ सुधा की धार,
सहनशीलता के आगर वे श्रम सागर तरते हैं।
हम राज्य लिए मरते हैं।
यदि वे करें, उचित है गर्व,
बात बात में उत्सव-पर्व,

हम से प्रहरी रक्षक जिनके, वे किससे डरते हैं ?
हम राज्य लिए मरते हैं।
करके मीन मेख सब ओर,
किया करें बुध वाद कठोर,
शाखामयी बुद्धि तजकर वे मूल धर्म धरते हैं।
हम राज्य लिए मरते हैं।
होते कहीं वही हम लोग,
कौन भोगता फिर ये भोग ?
उन्हीं अन्नदाताओं के सुख आज दुःख हरते हैं।
हम राज्य लिए मरते हैं। ***(साकेत नवम् सर्ग से)***

शब्दार्थ—

मरते हैं = दुःखी होते हैं; **उदार** = दानी; **उत्सव** = समारोह; **सम्पन्न** = धनी; **सुधा** = गाय का अमृत जैसा दूध; **पर्व** = त्योहार; **भव वैभव** = संसार के ऐश्वर्य; **आगर** = खजाना; **प्रहरी** = पहरेदार; **कर्षक** = किसान; **श्रम** = मेहनत; **मीन मेख** = दोष निकालना, तर्क वितर्क करना; **गोधन** = गाय-रूपी धन; **गर्व** = अभिमान; **बुध** = बुद्धिमान; **वाद** = वाद विवाद; **तजकर** = छोड़कर; **भोग** = सुख; **अन्नदाताओं** = अन्न देने वाले किसानों ; **हरते है** = दूर करते हैं।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) प्रस्तुत गीत में उर्मिला किस की प्रशंसा कर रही है ?
(2) किसान संसार को समृद्ध कैसे बनाते हैं ?
(3) किसान किस प्रकार परिश्रम रूपी समुद्र को धीरज से तैर कर पार करते हैं ?
(4) किसानों का अपने पर गर्व करना कैसे उचित है ?
(5) किसान व्यर्थ के वाद-विवाद को छोड़कर किस धर्म का पालन करते हैं ?
(6) ''हम राज्य लिए मरते हैं'' में उर्मिला राज्य के कारण होने वाले किस कलह की बात कहना चाहती है ?

II. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें :—

(1) यदि वे करें, उचित है गर्व,
बात बात में उत्सव पर्व,
हम से प्रहरी रक्षक जिनके, वे किससे डरते हैं ?
हम राज्य लिए मरते हैं।

(2) करके मीन मेख सब ओर,
किया करें बुध बाद कठोर,
शाखामयी बुद्धि तजकर वे मूल धर्म धरते है
हम राज्य लिए मरते हैं।

(3) होते कहीं वहीं हम लोग,
कौन भोगता फिर ये भोग ?
उन्हीं अन्नदाताओं के सुख आज दु:ख हरते हैं
हम राज्य लिए मरते हैं।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखें :

सम्पन्न	____________	सुलभ	____________
धनी	____________	उचित	____________
उदार	____________	कठोर	____________
रक्षक	____________	धर्म	____________

II. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :

पत्नी ____________________
कर्षक ____________________
सागर ____________________
उत्सव ____________________

II. निम्नलिखित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाएं :

शब्द	अर्थ	वाक्य
◦ अन्न	________	________________________________
अन्य	________	________________________________

- उदार ________ ______________________________

  उधार ________ ______________________________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

(1) किसान की दिनचर्या की जो बातें अपको अच्छी लगती है, उनकी सूची बनाएँ।

(2) पंजाब के किसान के जीवन से सम्बन्धित 'बैशाखी' त्योहार के कुछ चित्र संकलित करके अपने स्कूल की भिति पत्रिका पर लगाएँ।

(3) किसान को अन्नदाता कहा जाता है। हरित क्रान्ति में किसानों के योगदान के विषय में जानकारी हासिल करें।

(4) कविता को कंठस्थ करके उसका सस्वर वाचन करें।

(घ) ज्ञान-विस्तार

(1) साकेत : 'साकेत' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी का खड़ी बोली का प्रथम राम महाकाव्य है। 'साकेत' अयोध्या का ही पौराणिक नाम है एवं काव्य के कथानक का परिचायक है। बौद्ध साहित्य में भी साकेत का उल्लेख मिलता है। गुप्तकाल में साकेत तथा अयोध्या दोनों नामों का प्रयोग मिलता है। संस्कृत साहित्य में कालिदास ने 'रघुवंश' में रघु की राजधानी को 'साकेत' कहा है।

यद्यपि गुप्त जी द्वारा रचित 'साकेत' रामकथा पर आधारित रचना है तथापि इसके केन्द्र में उर्मिला ही है। सीता जी तो रामचन्द्र जी के साथ वन को चली गयीं किन्तु उर्मिला अपने पति लक्ष्मण के साथ न जा सकीं। इसी विरह की पीड़ा को जिस प्रकार साकेत के नवम् सर्ग में गुप्त जी ने दिखाया है, वैसा चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है। इसी कारण यह एक अमर कृति है। यह रचना भावपक्ष एवं कला पक्ष दोनों रूपों से आधुनिक हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

(2) 'साकेत' का रेडियो रूपांतर : डॉ॰ प्रेम जनमेजय जी ने मैथिलीशरण गुप्त जी की रचना 'साकेत' का रेडियो नाट्य रूपांतर भी किया है जो इंटरनेट पर उपलब्ध है।

(3) भाव साम्यता : किसान के जीवन पर हिंदी के कुछ अन्य कवियों ने भी कविताएँ लिखी हैं। 'राम कुमार वर्मा' की 'ग्राम देवता' तथा माखन लाल चतुर्वेदी की 'ये अनाज की पूलें तेरे काँधे झूलें' का एक एक पद्यांश विद्यार्थियों की जानकारी के लिए दिया जा रहा है। विद्यार्थी चाहें तो बाकी की कविता इंटरनेट से प्राप्त कर इसका आनन्द लें—

(1) **ग्राम देवता**

हे ग्राम देवता। नमस्कार।

सोने चाँदी से नहीं किन्तु
तुमने मिट्टी से किया प्यार
हे ग्राम देवता नमस्कार।।   **राम कुमार वर्मा**

(2) **ये अनाज की पूलें तेरे काँधे झूलें**
ये उगी बिन उगी फसलें
तेरी प्राण कहानी
हर रोटी ने, रक्त बूंद ने
तेरी छवि पहचानी।
वायु तुम्हारी उज्ज्वल गाथा
सूर्य तुम्हारा रथ है
बीहड़ काँटो भरा कीचमय
एक तुम्हारा पथ है।।   **माखन लाल चतुर्वेदी**

****

पाठ-5
सुमित्रानंदन पंत
(सन् 1900–1977)

कवि-परिचय

आधुनिक हिंदी कविता को श्रेष्ठ अभिव्यंजना, भाषा सामर्थ्य तथा नई छन्द दृष्टि देने वाले सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 में अल्मोड़ा ज़िले के कौसानी गाँव में हुआ। जन्म के कुछ ही घण्टों बाद पंत जी की माता का देहान्त हो गया। इनका बचपन का नाम गुसाई दत्त था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में ही हुई। सन् 1919 में पंत जी इलाहाबाद आए और म्योर सेंट्रल कॉलेज में दाखिल हुए। महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर बिना परीक्षा दिए ही उन्होंने पढ़ना छोड़ दिया।

रचनाएं—पंत जी की प्रमुख रचनाएं है—'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगान्त', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'स्वर्ण किरण', 'उत्तरा', 'कला और बूढ़ा चांद', 'चिंदबरा' तथा 'लोकायतन'। कविता के अतिरिक्त पंत जी ने आलोचना, कहानी और आत्मकथा भी लिखी। परन्तु मुख्य रूप से उनका कवि रूप ही प्रमुख है। पंत जी को प्रकृति का सुकुमार कवि भी कहा जाता है।

पंत जी को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। पंत जी का निधन सन् 1977 में हुआ।

पाठ-परिचय

'गाता खग' पंत जी की प्रमुख कविता है। इसमें कवि ने प्रकृति के विविध स्वरूपों का वर्णन किया है। ये मनुष्य के कल्याण के लिए संदेश देते हैं। प्रभात या सुबह के समय पक्षी संसार के लोगों के सुखी एवम् समृद्ध जीवन की कामना करता है। संध्या के समय वह कल्याणकारी और मधुर जीवन के गीत गाता है। तारों की अनेक पंक्तियां मानव के दु:ख और आँसू देखकर ओस के रूप में स्वयं भी आँसू बहाती हैं। मुस्कराते हुए फूल मानव को हमेशा मुस्कराने का संदेश देते हैं। वे बताते हैं कि ज़िन्दगी बहुत छोटी है। इस छोटी सी ज़िन्दगी में संसार में आशा की खुशियां बांटकर संसार के आंगन को मुस्कराहट से भर दो—आशा और विश्वास से भर दो। पानी की लहरें भी मानव को बिना असफलता या किसी डर की परवाह किए बिना आगे बढ़ते रहने का संदेश देती हैं। किनारा दिखाई दे या न दे परन्तु हमारे कदम मंज़िल की ओर बढ़ते रहने चाहिए। हिलोर काँपती रहती है और किनारे से दूर रहती है परन्तु पानी का बुलबुला विलीन होकर ज़िन्दगी के मकसद को समझ जाता है। कविता की अन्तिम पंक्तियों में रहस्यवाद की झलक भी मिलती है।

गाता खग

गाता खग प्रात: उठकर—
सुंदर, सुखमय जग-जीवन!
गाता खग संध्या - तट पर —
मंगल, मधुमय जग-जीवन।

कहती अपलक तारावलि
अपनी आँखों का अनुभव,
अवलोक आँख आँसू की
भर आतीं आँखें नीरव!

हँसमुख प्रसून सिखलाते
पल भर है, जो हँस पाओ,
अपने उर की सौरभ से
जग का आँगन भर जाओ !

उठ–उठ लहरें कहतीं यह—
हम कूल विलोक न पाएँ,
पर इस उमंग में बह–बह
नित आगे बढ़ती जाएँ।

कँप कँप हिलोर रह जाती—
रे मिलता नहीं किनारा।
बुद्‌बुद् विलीन हो चुपके
पा जाता आशय सारा।

शब्दार्थ

खग = पक्षी; **नीरव** = शांत, खामोश; **मंगल** = कल्याणदायक; **प्रसून** = फूल; **मधुमय** = आनंदपूर्ण; **उर** = हृदय; **तारावलि** = तारों की पंक्तियाँ; **सौरभ** = सुगंध; **अवलोक** = देखकर; **जग** = संसार, दुनिया; **कूल** = किनारा ; **बुद्‌बुद्** = बुलबुला

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) पक्षी प्रातः उठकर क्या गाता है ?

(2) तारों की पंक्तियों की आँखों का अनुभव क्या है ?

(3) फूल हमें क्या संदेश देते हैं ?

(4) लहरें किस उमंग में आगे बढ़ती जाती हैं ?

(5) बुलबुला विलीन होकर क्या पा जाता है ?

II. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(1) हँसमुख प्रसून सिखलाते
पल भर है, जो हँस पाओ,
अपने उर की सौरभ से
जग का आँगन भर जाओ।

(2) उठ उठ लहरें कहतीं यह —
हम कूल विलोक न पाएँ,
पर इस उमंग में बह-बह
नित आगे बढ़ती जाएँ।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :—

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
खग	____________________

प्रसून	____________________
उर	____________________
किनारा	____________________

II. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाएं :—

शब्द	**भाववाचक संज्ञा**
सुन्दर	____________
अपना	____________
हँसना	____________
नीरव	____________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

1. कविता कंठस्थ करके सस्वर वाचन करें।
2. सुमित्रानन्दन पंत ने प्रकृति के विभिन्न चित्र अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं। इस कविता में कवि ने लहरों, फूल, पक्षी, चमकते सितारों की पंक्तियां, नदी का किनारा आदि का वर्णन किया है। आप सुमित्रानन्दन पंत की प्रकृति चित्रण से संबधित कोई अन्य कविता याद कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

(घ) ज्ञान-विस्तार

पंत जी की तरह कुछ अन्य कवियों ने भी प्रकृति चित्रण किया है। इनमें से कुछ प्रमुख नाम है— जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवम् महादेवी वर्मा। इस तरह पंत, प्रसाद, निराला व महादेवी वर्मा चारों कवियों को छायावाद का स्तम्भ कहा जाता है। छायावाद को इन कवियों ने अपनी महान रचनाएं दी। प्रकृति चित्रण भी छायावादी कविता की एक प्रवृति है।

****

पाठ-6

हरिवंश राय बच्चन

(सन् 1907-2003)

कवि परिचय—

हरिवंशराय बच्चन का जन्म सन् 1907 में इलाहाबाद में हुआ। उन्होंने सन् 1938 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम. ए. किया। बच्चन जी सन् 1942 से 1952 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी के प्रवक्ता रहे। उन्होंने सन् 1952 से 1954 तक इंग्लैंड में रहकर कैंब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। दिसंबर 1955 में भारत सरकार ने उन्हें विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ के पद पर नियुक्त किया। आप राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे। उन्हें 'पद्म भूषण' तथा 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

रचनाएँ—उनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं—मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमन्त्रण, एकांत संगीत, मिलन, सतरंगिनी, विकल विश्व, आरती और अंगारे आदि। उनकी गद्य रचनाओं में उनकी आत्मकथा विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसे चार भागों में प्रकाशित किया गया है। बच्चन जी मूलत: हाला व मस्ती के कवि हैं। वे छायावादी परवर्ती युग के लोकप्रिय गीतकार हैं। कवि सम्मेलनों के माध्यम से बच्चन अपने पाठकों व श्रोताओं के निकट आए हैं। बच्चन जी के गीतों की भाषा सहज, सरस व सामान्य जनभाषा रही है। बच्चन जी का निधन सन् 2003 में हुआ।

पाठ परिचय—

'जड़ की मुस्कान' में बच्चन जी कहते हैं कि प्रगति करने पर लोग अक्सर अपने मूलभूत आधार को भूल जाते हैं और सारी प्रगति का श्रेय अपने आप को देते हैं। वे यह बात भूल जाते हैं कि भवन वही मज़बूत होगा जिसकी नींव मज़बूत होगी। कविता में वृक्ष का तना जड़ को निर्जीव बताता है—इसी प्रकार डालियाँ तने को, पत्तियाँ डालियाँ को तथा फूल पत्तियों के महत्व को नहीं समझते और स्वयं अपनी शेखी बघारते हैं। जड़ सभी की बातों को सुनती है और मुसकरा देती है। वास्तव में जड़ की इस मुस्कान का अर्थ है कि तना, पत्ते, डालियाँ और फूल सब का महत्व है, पर यह महत्व उस वक्त तक है जब तक उनकी जड़ सलामत है। इसलिए हमें उन लोगों के योगदान को कभी नहीं भूलना चाहिए जिनके कारण आज हम प्रगति के रास्ते पर जा रहे हैं। वास्तव में वे सभी लोग हमारी तरक्की की बुनियाद हैं सभ्यता के इस सुन्दर भवन की नींव वे लोग ही हैं।

जड़ की मुसकान

एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़ ?
जड़ तो जड़ ही है ;
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है
लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठा,
बाहर निकला,
बढ़ा हूँ
मज़बूत बना हूँ,
इसी से तो तना हूँ।
एक दिन डालों ने भी कहा था,
तना ?
किस बात पर है तना ?
जहां बिठाल दिया गया था वहीं पर है बना;
प्रगतिशील जगती में तिल भर नहीं डोला है,
खाया है, मोटाया है, सहलाया चोला है;
लेकिन हम तने से फूटीं,
दिशा–दिशा में गईं
ऊपर उठीं,
नीचे आईं
हर हवा के लिए दोल बनीं, लहराईं,
इसी से तो डाल कहलाईं।
एक दिन पत्तियों ने भी कहा था,
डाल ?
डाल में क्या है कमाल ?
माना वह झूमी, झुकी, डोली है
ध्वनि–प्रधान दुनिया में

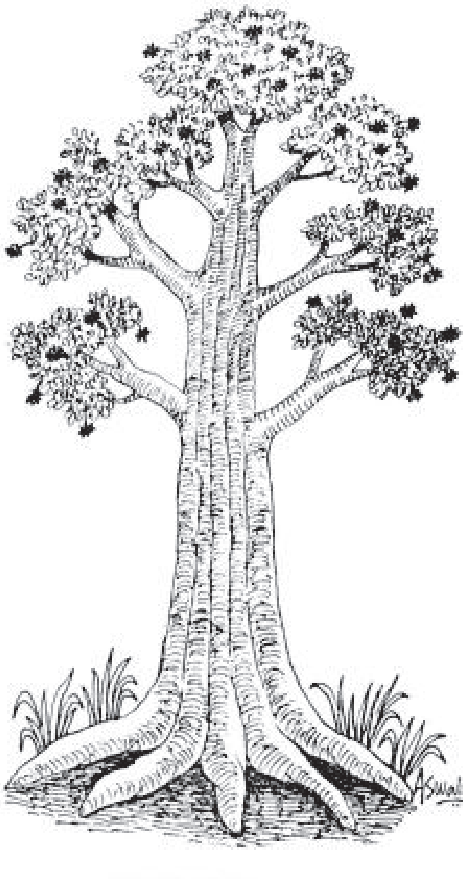

एक शब्द भी वह कभी बोली है ?
लेकिन हम हर-हर स्वर करती हैं
मर्मर स्वर मर्मभरा भरती हैं,
        नूतन हर वर्ष हुई,
        पतझर में झर
        बहार-फूट फिर छहरती हैं,
        विथकित-चित पंथी का
        शाप-ताप हरतीं हैं।
एक दिन फूलों ने भी कहा था,
पत्तियाँ ?
पत्तियों ने क्या किया ?
संख्या के बल पर बस डालों को छाप लिया,
डालों के बल पर ही चल-चपल रही हैं,
हवाओं के बल पर ही मचल रही हैं
लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं—
रंग लिए, रस लिए, पराग लिए—
हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,
भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,
हम पर बौराए हैं।
सबकी सुन पाई है,
जड़ मुसकराई है!

शब्दार्थ—

तना हूँ = दृढ़ता पूर्वक खड़ा हूँ; **पंथी** = राहगीर, पथिक मुसाफिर; **तना** = घमण्ड करना; **बौराए** = मँडराए; **जगती** = संसार ; **प्रगतिशील** = प्रगति (तरक्की, विकास) कर रही; **डोला** = गतिशील; **सहलाया चोला** = सुविधा भोगी शरीर ; **दोल** = हिलना; **ध्वनि प्रधान दुनिया** = शब्दों की दुनिया; **हर-हर स्वर** = सुरीली आवाज़; **विथकित** = थका हुआ; **चित्त** = मन

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) एक दिन तने ने जड़ को क्या कहा?

(2) जड़ का इतिहास क्या है?

(3) डाली तने को हीन क्यों समझती है?

(4) पत्तियाँ डाल की किस कमी की ओर संकेत करती हैं?

(5) फूलों ने पत्तियों की चंचलता का आधार क्या बताया?

(6) सबकी बातें सुनकर जड़ क्यों मुसकराई?

II. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें :—

(1) एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़ ?
जड़ तो जड़ ही है ;
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है इसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है ;

(2) एक दिन फूलों ने भी कहा था, पत्तियाँ ?
पत्तियों ने क्या किया ?
संख्या के बल पर बस डालों को छाप लिया,
डालों के बल पर ही चल चपल रही हैं;
हवाओं के बल पर ही मचल रही है;
लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं—
रंग लिए, रस लिए, पराग लिए—
हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,
भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए है,
हम पर बौराए हैं।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखें :—

जीवन ____________

जड़ ____________

मज़बूत ____________

ऊपर ____________

II. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण शब्द बनाएं :—

इतिहास ____________

दिन ____________

वर्ष ____________

रंग ____________

रस ____________

III. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :—

प्रगति ____________

हवा ____________

ध्वनि ____________

फूल ____________

भ्रमर ____________

IV. निम्नलिखित के अनेकार्थी शब्द लिखें :-

जड़ ____________

तना ____________

डाल ____________

डोली ____________

बोली ____________

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

1. रामवृक्ष बेनीपुरी का निबन्ध 'नींव की ईंट' पढ़िए और जड़ के महत्व पर अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

2. 'वही देश मज़बूत होता है, जिसकी संस्कृति मज़बूत जड़ के समान होती है।' इस विषय पर कक्षा में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
3. प्रस्तुत कविता को आगे बढ़ाइए। जड़, तना, पत्ते और फूल के साथ फल को भी शामिल कीजिए। कविता को आगे बढ़ाते निम्न पंक्तियों को पूरा करें—

एक दिन फलों ने भी कहा था,
.... ?
.... ने क्या किया ?
वृथा ही फूलते हैं
आज फूले हैं
कल .... जाएंगे
हमें देखो,
हम पशु, पक्षी और .... का।
.... भरते हैं
उन्हें ज़िन्दा रखने को
अपना .... करते हैं।

(घ) ज्ञान-विस्तार

1. परिवार की जड़ हमारे पूर्वज—दादा-माँ-बाप हैं जो अपनी सन्तान के लिए हर त्याग करते हैं। इसलिए हमें अपने पूर्वजों के महत्व को जानना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए।
2. माँ बाप की तरह ही विद्यार्थी के जीवन में अध्यापकों का भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। उनसे स्नेह व सहयोग पाकर हम जीवन में आगे बढ़ते हैं। उनसे शिक्षित होकर ही हम उच्च पदों पर आसीन होते हैं। वे हमारा उज्ज्वल भविष्य बनाते हैं। अत: हमें उनके योगदान को सदैव स्मरण रखना चाहिए।
3. हमें अपने उन देशभक्तों को भी नहीं भूलना चाहिए, जिन्होंने वृक्ष की जड़ की तरह त्याग व बलिदान किया ताकि हम लोग आज़ादी के मधुर फल का स्वाद ले सकें।

****

(कहानी भाग)

पाठ-7

जयशंकर प्रसाद

(सन् 1889-1937)

लेखक परिचय—

जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में सन् 1889 में हुआ। स्कूल में आपने केवल आठवीं श्रेणी तक शिक्षा पाई। तत्पश्चात् घर पर ही संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं तथा उनके साहित्य का ज्ञान अपनी लग्न से प्राप्त किया। आप उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, आलोचक, निबन्धकार तथा कवि होने के साथ-साथ उच्चकोटि के दार्शनिक विद्वान थे। सन् 1937 में अल्पायु में ही आपकी मृत्यु हो गई।

प्रसाद जी की प्रतिभा का ज्वलन्त उदाहरण इनके काव्य, उपन्यास, नाटक, कहानी और निबन्ध आदि में मिलता है। इनकी सबसे पहली कविता 'भारतेन्दु' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद 'इन्दु' नामक पत्रिका का प्रकाशन इन्होने स्वयं शुरू किया। प्रसाद जी के प्रमुख नाटक अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी हैं। कंकाल, तितली और इरावती (अधूरा) आदि उपन्यास हैं। आँधी, इन्द्रजाल, प्रतिध्वनि, छाया और आकाशदीप इनके कहानी संग्रह हैं। प्रसाद जी की अमर कृति 'कामायनी' महाकाव्य है, जो उनकी कीर्ति का आलोक स्तम्भ है। अन्य काव्य संग्रह हैं— आँसू, झरना और लहर।

कोमल भाव, परिमार्जित भाषा और कलापूर्ण शैली की दृष्टि से आपकी कहानियाँ साहित्य में एक विशेष स्थान रखती हैं। कवि होने के कारण आपकी कहानियाों में कल्पना और भावुकता की अधिकता है। आपकी अधिकतर कहानियाँ ऐतिहासिक हैं। दार्शनिक होने के कारण आपने कहानी के क्षेत्र में प्रेमचन्द से भिन्न शैली का अनुसरण किया। कहानी साहित्य में आपका एक महत्वपूर्ण स्थान है।

पाठ परिचय—

'ममता' जयप्रसाद प्रसाद की एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक कहानी है। इस कहानी की गिनती हिंदी साहित्य की कालजयी कहानियों में होती है। इस कहानी में प्रसाद जी ने एक विधवा ब्राह्मणी के चरित्र के माध्यम से एक ओर रिश्वत लेने का विरोध किया है तो दूसरी और भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्श 'अतिथि देवो भव' को बड़ी ही खूबसूरती के साथ दिखाया है।

ममता रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की पुत्री थी। एक दिन उसके पिता अपने अनुचरों के साथ सोने से भरे थाल लेकर ममता के कमरे में आए। ममता इतना सारा सोना देखकर चौंक पड़ी और उसने अपने पिता से कहा कि इतना सोना कहां से आया तो उन्होंने कहा कि तुम चुप करो। ममता को समझने में देर नहीं लगी कि उसके पिता जी ने म्लेच्छों से रिश्वत ली है। उसे अच्छा नहीं लगा तो उसके पिता ने कहा कि पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त वंश का अन्त समीप है, इसीलिए जब मंत्रीत्व न रहेगा, यह सब तब के लिए है। ममता ने इस रिश्वत को ईश्वर के प्रति दु:साहस बताया। दूसरे ही दिन उसका पिता चूड़ामणि पठानों के हाथों मारा गया तथा राजा, रानी और खजाना शेरशाह के हाथ लगे, किन्तु ममता भागने में सफल हो गयी और दूर कही खंडहर में रहने लगी।

एक दिन उसकी कुटिया में एक अपरिचित, प्यासे, थके-हारे सैनिक ने उससे आकर कहा, ''माता ! मुझे आश्रय चाहिए''। ममता पहले तो घबरायी किन्तु फिर उसने सोचा कि अतिथि को आश्रय देना उसका कर्त्तव्य है। यह सोचकर उसने कहा कि तुम चाहे कोई हो मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। यह कहकर वह स्वयं पास की टूटी दीवारों में चली गयी। वास्तव में यह शरणार्थी और कोई नहीं अपितु हुमायूँ था। सुबह जब हुमायूँ को ढूँढ़ते उसके सैनिक वहाँ आए तो उसने सैनिकों से कहा कि उस स्त्री को खोजो जिसने मुझे आश्रय दिया था किन्तु ममता भयभीत होकर छिपी रही। हुमायूँ ने अपने सैनिक से कहा कि मैं उसे कुछ नहीं दे सका, इसलिए तुम इसका घर बनवा देना। यह कहकर वे चल दिए। वर्षों बाद हुमायूँ के बेटे अकबर के सैनिक जब उस स्थान को ढूँढ़ते हुए आए तो ममता ने उन्हें कहा कि वह यह नहीं जानती कि वह शाहंशाह था कि साधारण मुगल पर वह इसी झोंपड़ी में रहा था और वह मेरा घर बनवाना चाहता था किन्तु मैं झोंपड़ी खुदवाने के डर से भयभीत थी। उसने आगे कहा कि अब तुम यहाँ मकान बनवाओ या महल। यह कहकर उसके प्राण निकल गये। वहाँ फिर एक अष्टकोण मन्दिर बना जिसमें लिखा था ''सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहां विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुंबी मन्दिर बनवाया।'' पर उसमें ममता का कहीं नाम न था।

इस प्रकार भ्रष्टाचार का विरोध, पथिक को आश्रय देना, परोपकार का बदला न चाहना आदि बातें इस कहानी की विशेषताएँ हैं। कहानी की भाषा संस्कृतनिष्ठ है, किन्तु ग्राह्य है।

ममता

रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही थी। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी। फिर उसके लिए कुछ अभाव का होना असंभव था, परन्तु वह विधवा थी। हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ, निराश्रय प्राणी है—तब विड़म्बना का कहाँ अन्त था ?

चूड़ामणि ने चुपचाप उस प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह में वह अपना जीवन मिलाने में बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी। चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेहपालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। लौटकर बाहर चले गये। ऐसा प्राय: होता, पर आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिन्ता थी। पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर रात बीत जाने पर फिर वे ममता के पास आये। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे, कितने ही मनुष्यों के पद-शब्द सुन ममता ने घूम कर देखा। मंत्री ने सब थालों के रखने का संकेत किया। अनुचर थाल रखकर चले गए।

ममता ने पूछा—''यह क्या है पिता जी ?''

''तेरे लिए बेटी, उपहार है।'' यह कहकर चूड़ामणि ने आवरण उलट दिया। सुवर्ण का पीलापन उस सुनहली संध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी.............

''इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया ?''

''चुप रहो ममता ! यह तुम्हारे लिए है।''

''तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया ? पिताजी यह अर्थ नहीं अनर्थ है। लौटा दीजिए। पिता जी हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे ?''

''इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त-वंश का अन्त समीप है, बेटी, किसी भी दिन शेरशाह रोहतास पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी!''

''हे भगवान्! तब के लिए! विपद् के लिए इतना आयोजन! परम पिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस ? पिता जी, क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जाएगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके ? असम्भव है। फेर दीजिए पिता जी! मैं काँप रही हूँ—इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।''

''मूर्ख है''—कहकर चूड़ामणि चले गये।

* * * * *

दूसरे दिन जब डोलियों का तांता भीतर आ रहा था, ब्राह्मण मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक्-धक् करने लगा। वह अपने को न रोक सका। उसने जाकर रोहतास—दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा—''यह महिलाओं का अपमान करना है।''

बात बढ़ गयी। तलवारें खिंचीं, ब्राह्मण मंत्री वहीं मारा गया और राजा, रानी तथा कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े; निकल गयी ममता। डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्ग भर में फैल गये, पर ममता न मिली।

* * * * *

काशी के उत्तर धर्मचक्र बिहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खंडहर था—भग्नचूड़ा, तृणागुल्मों से ढके हुए प्राचीर ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म रजनी की चद्रिका में अपने को शीतल कर रही थी।

जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी—

''अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।''...........

पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीप के मंद प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उसने कपाट बन्द करना चाहा, परन्तु व्यक्ति ने कहा—

''माता! मुझे आश्रय चाहिए।''

''तुम कौन हो ?'' स्त्री ने पूछा।

'' मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।''

''क्या शेरशाह से?'' स्त्री ने अपने होंठ काट लिये।

''हाँ, माता! ''

''परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो। वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब तुम्हारे मुख पर भी है। सैनिक मेरी कुटी में स्थान नहीं। जाओ, कहीं दूसरा आश्रय खोज लो।''

''गला, सूख रहा है, साथी छूट गए हैं, अश्व गिर पड़ा है—इतना थका हुआ हूँ, इतना!'' कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आयी; उसने जल दिया। मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी—

''सब विधर्मी दया के पात्र नहीं-मेरे पिता का वध करने वाले आततायी!'' घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा—'माता ! तो फिर मैं चला जाऊँ?'

स्त्री विचार कर रही थी–''मैं ब्राह्मण हूँ, मुझे तो अपने धर्म–अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए ; परन्तु यहाँ ....नहीं नहीं, यह सब विधर्मी दया के पात्र नहीं; परन्तु यह दया तो नहीं कर्त्तव्य करना है। तब ?''

मुगल अपनी तलवार टेक कर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा— ''क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो।''

''छल! नहीं, तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा। जाता हूँ, भाग्य का खेल है।''

ममता ने मन में कहा— ''यहाँ कौन दुर्ग है। यही झोंपड़ी है, जो चाहे ले ले। मुझे तो अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा।'' वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली, ''जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक! तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?''

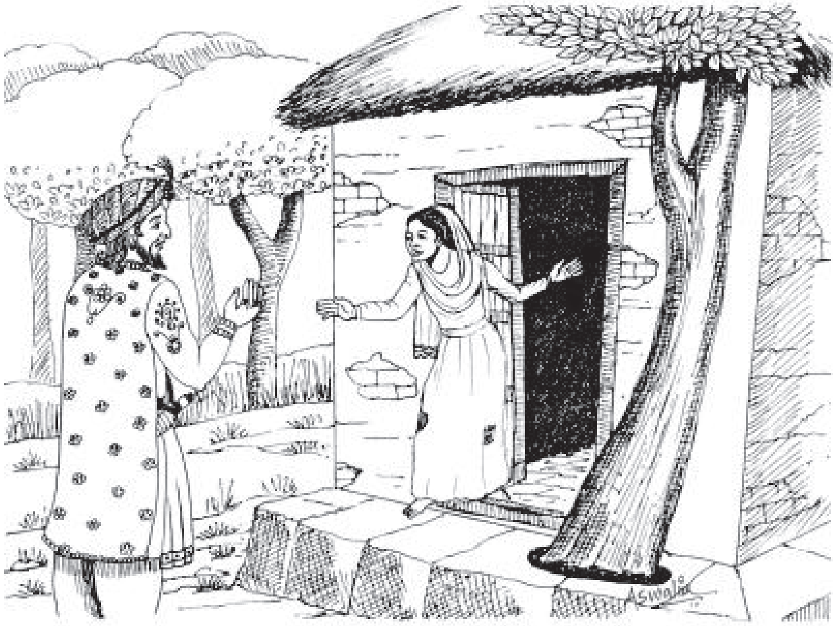

मुगल ने चन्द्रमा के मंद प्रकाश में वह महिमामय मुखमंडल देखा। उसने मन ही मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवारों में चली गयी। भीतर थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया।

प्रभात में खंडहर की संधि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर अपने को कोसने लगी।

अब उस झोंपड़ी से निकल कर उस पथिक ने कहा— ''मिरजा! मैं यहाँ हूँ।''

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार ध्वनि से वह प्रान्त गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा— ''वह स्त्री कहाँ है ? उसे खोज निकालो।'' ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट 'हुई। वह मृगदाव में चली गयी। दिन भर उसमें से न निकली। संध्या को जब उनके जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा था— ''मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ भी न दे सका। उसका घर बनवा देना, क्योंकि विपत्ति में मैंने यहाँ आश्रय पाया था। यह स्थान भूलना मत।'' —इसके बाद वे चले गये।

* * * *

चौसा के मुगल-पठान युद्ध को बहुत दिन बीत गये। ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। वह अपनी झोंपड़ी में एक दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभाव था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेर कर बैठी थीं, क्योंकि वह आजीवन सब के सुख-दु:ख की सहभागिनी रही।

ममता ने जल पीना चाहा। एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखायी पड़ा। वह अपनी धुन में कहने लगा— ''मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिए। वह बुढ़िया मर गई होगी। अब किससे पूछें कि एक दिन शाहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे ? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई।''

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा—''उसे बुलाओ।''

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुक कर कहा-''मैं नहीं जानती कि वह शाहंशाह था या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोपड़ी के नीचे वह रहा था। मैंने सुना था, वह मेरा घर बनाने की आज्ञा दे गया था! मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी खुदवाने के डर से भयभीत रही थी।''

'भगवान ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल; मैं अपने चिर विश्राम-गृह में जाती हूँ।''

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण पक्षी अनन्त में उड़ गये।

* * * *

वहां एक अष्टकोण मन्दिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया—

''सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनवाया।''

पर उसमें ममता का कहीं नाम न था।

शब्दार्थ—

प्रकोष्ठ = महल के सदर फाटक के पास का कमरा, इमारत के भीतर का आँगन; **शोण** = एक नदी; **वेदना** = पीड़ा; **कंटकशयन** = कांटों की सेज; **विकल** = बेचैन; **दुहिता** = पुत्री (दूध दोहने वाली); **निराश्रय** = आश्रय हीन; **विडंबना** = हालात की मार ; इच्छा के विरुद्ध हालात होना; **कलनाद** = नदी-जल की आवाज़; **दुश्चिंता** = परेशानी; **आवरण** = पर्दा ; **उत्कोच** = रिश्वत, घूसखोरी; **पतनोन्मुख** = पतन की ओर जाती हुई; **विपद** = मुश्किल; **भू-पृष्ठ** = धरती, भूमि-भाग; **स्तूप** = बौद्ध-शिक्षा के स्तम्भ (खम्भे); **भग्नावशेष** = खण्डित टुकड़े; **मलिन** = धुंधला; **दीपा लोक** = दीपक-प्रकाश; **हताश** = निराश; **विपन्न** = विफल, हारकर; **क्रूर** = आततायी, निर्दयी; **निष्ठुर** = दयाहीन; **विपत्ति** = कठिनाई, मुश्किल, मुसीबत; **विधर्मी** = दूसरे धर्म वाले, धर्म से विपरीत; **ब्रह्मांड** = तीनों लोक (अंतरिक्ष, पृथ्वी और पाताल); **विरक्त** = (दु:खी होकर) उदासीन हो जाना; **पथिक** = राही ; **सचेष्ट** = सजग, प्रयत्नपूर्वक; **जीर्ण कंकाल** = कमज़ोर ढांचा; **सह भागिनी** = साथी, साथ देने वाली; **अवाक्** = आश्चर्य से भरकर चुप हो जाना; **विकीर्ण** = फैलना

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) ममता कौन थी ?

(2) मंत्री चूड़ामणि को किसकी चिन्ता थी ?

(3) मंत्री चूड़ामणि ने अपनी विधवा पुत्री ममता को उपहार में क्या देना चाहा ?

(4) डोलियों में छिपकर दुर्ग के अंदर कौन आये ?

(5) ममता रोहतास दुर्ग छोड़ कर कहाँ रहने लगी ?

(6) ममता से झोपड़ी में किसने आश्रय मांगा ?

(7) ममता पथिक को झोपड़ी में स्थान देकर स्वयं कहाँ चली गई ?

(8) चौसा-युद्ध किन-किन के मध्य हुआ ?

(9) विश्राम के बाद जाते हुए पथिक ने मिरजा को क्या आदेश दिया ?

(10) ममता की जीर्ण-कंकाल अवस्था में उसकी सेवा कौन कर रहीं थीं ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :—

(1) ब्राह्मण चूड़ामणि कैसे मारा गया ?

(2) ममता ने झोपड़ी में आए व्यक्ति की सहायता किस प्रकार की ?

(3) ममता ने अपनी झोपड़ी के द्वार पर आए अश्वारोही को बुलाकर क्या कहा ?

(4) हुमायूँ द्वारा दिए गए आदेश का पालन कितने वर्षो बाद तथा किस रूप में हुआ ?

(5) मंदिर में लगाए शिलालेख पर क्या लिखा गया ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए।

(1) ममता का चरित्र चित्रण कीजिए।

(2) 'ममता' कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :—

विधवा ____________

स्वस्थ ____________

सुख ____________

स्वीकार ____________

प्राचीन ____________

अपमान ____________

II. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :—

बरसात ____________

चन्द्रमा ____________

माता ____________

पक्षी ____________

रात ____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. 'अतिथि देवो भव' पर कोई कहानी लिखने का प्रयास कीजिए।
2. 'असाधारण मनुष्य महलों में रहें या कुटिया में रहें, वे सदा ही असाधारण रहते हैं। 'ममता' महल में रहकर लालच से कोसों दूर थी और छोटी सी कुटिया में भी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अतिथि सेवा कर्म से विमुख नहीं हुई।'— इस विषय पर अपने विचार प्रकट करें।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. जयशंकर प्रसाद की अन्य ऐतिहासिक कहानियाँ/नाटक भी पढ़िए।
2. ईमानदारी, सत्य, निष्ठा, उदारता, अतिथि-सेवा आदि जीवन मूल्यों पर समय-समय पर विद्यालय की प्रार्थना सभा में विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. 'ममता' कहानी को एकांकी के रूप में मंचित करने का प्रयास कीजिए।
4. भावना और कर्तव्य में से किस का पालन करना चाहिए—कक्षा में चर्चा कीजिए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

रोहतास दुर्ग या रोहतास का किला :—बिहार के रोहतास ज़िले में स्थित यह किला बिहार के अफगान शासक शेरगाह सूरी द्वारा बनवाया गया किला है। यह किला शाहजहाँ, मानसिंह तथा मीरकासिम और उसके परिवार को सुरक्षा प्रदान करता था। इस किले में 84 गलियारे व 24 मुख्य द्वार हैं।

सोन नदी (शोण) :—सोन नदी भारत के मध्य प्रदेश राज्य से निकल कर उत्तर प्रदेश झारखंड की पहाड़ियों से गुज़रते हुए वैशाली ज़िले के सोनपुर में जाकर गंगा नदी में मिल जाती है। यह बिहार की एक प्रमुख नदी है। इस नदी का नाम सोन पड़ा क्योंकि इस नदी का बालू (रेत) पीले रंग का है जो सोने की तरह चमकती है। इस नदी की रेत भवन निर्माण आदि के लिए बहुत उपयोगी है। यह रेत पूरे बिहार में भवन निर्माण के लिए उपयोग में लाई जाती है। यह रेत उत्तर प्रदेश के कुछ शहरों में भी निर्यात की जाती है। गंगा और सोन नदी के संगम स्थल सोनपुर में एशिया का सबसे बड़ा सोनपुर पशु मेला लगाता है।

चौसा का युद्ध—चौसा का युद्ध 25 जून 1539 को हुमायूँ एवं शेर खां की सेनाओं के मध्य गंगा नदी के उत्तरी तट पर स्थित 'चौसा' नामक स्थान पर हुआ। यह युद्ध हुमायूँ अपनी कुछ गलतियों के कारण हार गया। युद्ध में मुगल सेना की काफी तबाही हुई। हुमायूँ ने युद्ध क्षेत्र से भाग कर जान बचाई। इस प्रकार चौसा के युद्ध में अफगानों को विजय श्री मिली। इस युद्ध में सफल होने के बाद शेर खाँ ने स्वयं को 'शेरशाह' नाम की उपाधि से सुसज्जित किया, साथ ही अपने नाम के खुतबे खुदवाए तथा सिक्के ढलवाने का आदेश दिया।

शेरशाह सूरी—शेरशाह भारत में जन्मे पठान थे, जिन्होंने हुमायूँ को हराकर उत्तर भारत में सूरी साम्राज्य स्थापित किया था। शेरशाह सूरी ने पहले बाबर के लिए एक सैनिक के रूप में काम किया था जिन्होंने उन्हें पदोन्नत कर सेनापति बनाया और फिर बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया। 1537 में जब हुमायूँ कहीं सुदूर अभियान पर था तब शेरशाह ने बंगाल पर कब्जा कर सूरी वंश स्थापित किया था। सन् 1539 में शेरशाह को चौसा की लड़ाई में हुमायूँ का सामना करना पड़ा, जिसे शेरशाह ने जीत लिया। 1540 में शेरशाह ने हुमायूँ को पुन: हराकर भारत छोड़ने पर मज़बूर कर दिया और शेरखान की उपाधि लेकर सम्पूर्ण उत्तर भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर दिया।

शेरशाह सूरी की कुछ मुख्य उपलब्धियाँ—

* पहला रुपया शेरशाह के शासन में जारी हुआ जो आज के रुपया का अग्रदूत है। रुपया आज भारत पाकिस्तान, नेपाल, श्री लंका, इंडोनेशिया, मॉरीशस, मालदीव आदि में राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता है।
* ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण किया।
* भारत की डाक व्यवस्था को पुनः संगठित किया।

हुमायूँ—नसीरूद्दीन हुमायूँ प्रथम मुगल सम्राट बाबर के पुत्र थे। यद्यपि उनके पास बहुत साल तक साम्राज्य नहीं रहा, पर मुगल साम्राज्य की नींव में हुमायूँ का योगदान है। बाबर की मृत्यु के पश्चात हुमायूँ ने 1530 में भारत की राजगद्दी संभाली। भारत में उन्होंने शेरशाह सूरी से हार प्राप्त की। 10 साल बाद ईरान साम्राज्य के मदद से अपना शासन दोबारा प्राप्त किया। हुमायूँ के बेटे का नाम जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर था। हुमायूँ की जीवनी का नाम हुमायूंनामा है।

अकबर—जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर तैमूरी वंशावली के मुगल वंश का तीसरा शासक था। अकबर मात्र तेरह वर्ष की आयु में अपने पिता नसीरूद्दीन मोहम्मद हुमायूँ की मृत्यु उपरांत दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा था। अपने शासन काल में उसने शक्तिशाली पश्तून वंशज शेरशाह सूरी के आक्रमण बिल्कुल बंद करवा दिये थे, साथ ही पानीपत के द्वितीय युद्ध में नवघोषित हिन्दू राजा हेमू को पराजित किया था। अकबर का प्रभाव लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर था और इस क्षेत्र के बड़े भू-भाग पर सम्राट के रूप में उसने शासन किया। बादशाहों में अकबर ही एक ऐसा बादशाह था जिसे हिन्दू-मुस्लिम दोनों वर्गों का बराबर प्यार और सम्मान मिला। उसने हिन्दू-मुस्लिम संप्रदाओं के बीच की दूरियाँ कम करने के लिए दीन-ए-इलाही नामक धर्म की स्थापना की जिसमें विश्व के सभी प्रधान धर्मों की नीतियों व शिक्षाओं का समावेश था।

****

पाठ-8

विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

(सन् 1890-1944)

जीवन-परिचय—विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' का जन्म 1890 ई. में तत्कालीन पंजाब प्रांत के अंबाला ज़िले में हुआ था। उन्होंने कानपुर में मैट्रिक तक स्कूली शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात् वे साहित्य-सेवा में लग गए। उन्हें हिंदी के अतिरिक्त उर्दू और अंग्रेज़ी का भी पर्याप्त ज्ञान था। संगीत और फोटोग्राफी में भी आपकी विशेष रुचि रही। 1944 ई. में आपकी मृत्यु हुई।

साहित्यिक परिचय—कौशिक जी मुख्य रूप से कहानीकार थे। प्रेमचन्द युग के उल्लेखनीय कथाकार कौशिक जी की कहानियों में आदर्शवादी और भावुकता की प्रधानता है। उन्होंने अपनी कहानियों में कथावस्तु, चरित्र-चित्रण और वातावरण की यथार्थ अभिव्यक्ति के साथ पात्रों के मनोविश्लेषण पर विशेष ध्यान दिया है। इनकी कहानियों में स्वाभाविक गद्य-शैली का विकास मिलता है।

कौशिक जी के दो उपन्यास-'माँ' और 'भिखारिणी' हिंदी जगत में प्रसिद्ध हैं।

इन्होंने विजयानंद दूबे के छद्म नाम से तत्कालीन मासिक पत्रिका 'चाँद' में कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र भी लिखे थे, जिन्हें बाद में पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया।

प्रमुख रचनाएँ—

कहानी संग्रह — 1. चित्रशाला 2. मणिमाला।

उपन्यास — 1. माँ 2. भिखारिणी।

पत्र-संग्रह — दूबे जी की डायरी।

पाठ-परिचय

'अशिक्षित का हृदय' प्रकृति के साथ मनुष्य के भावात्मक संबंध को दर्शाने वाली एक मार्मिक कहानी है। कहानी में मनोहर सिंह साधारण जीवन जीने वाला व्यक्ति है। उसे अपने पिता द्वारा लगाए गए नीम के पेड़ से आत्मीय लगाव है। अभाव के कारण उसे अपना पेड़ जमींदार के यहाँ गिरवी रखना पड़ता है। ज़मींदार उस वृक्ष को कटवाना चाहता हैं किन्तु मनोहर सिंह उस वृक्ष का रक्षक बन जाता है। वह अपनी जान देकर भी उस पेड़ को बचाने का प्रण करता है। गाँव का एक लड़का तेजा सिंह मनोहर सिंह की भावनाओं की कद्र करता है और अपने प्रयत्न से पेड़ को बचाने में सफल हो जाता है। मनोहर सिंह को तेजा जैसा सही उत्तराधिकारी मिल जाता है और वह उस पेड़ को तेजा को दे देता है।

अशिक्षित का हृदय

बूढ़ा मनोहर सिंह विनीत भाव से बोला—सरकार, अभी तो मेरे पास रुपये हैं नहीं, होते तो दे देता। ऋण का पाप तो देने से ही कटेगा। फिर आपके रुपये को कोई जोखिम नहीं। मेरा नीम का पेड़ गिरवी धरा हुआ है। वह पेड़ कुछ न होगा तो पच्चीस-तीस रुपये का होगा। इतना पुराना पेड़ गाँव भर में दूसरा नहीं।

ठाकुर शिवपाल सिंह बोले—डेढ़ साल का ब्याज मिलाकर कुल २२ होते हैं। वह रुपया अदा कर दो। नहीं तो हम तुम्हारा पेड़ कटवा लेंगे।

मनोहर सिंह कुछ घबरा कर बोला—अरे सरकार, ऐसा अन्धेर न कीजिएगा। पेड़ न कटवाइएगा। रुपया मैं दे ही दूँगा। यदि न भी दे सकूँ तो पेड़ आपका हो जाएगा। पर मेरे ऊपर इतनी दया कीजिएगा कि उसे कटवाइगा नहीं।

ठाकुर शिवपाल सिंह मुस्करा कर बोले—मनोहर, तुम सठिया गये हो। तभी तो ऐसी ऊल-जलूल बातें करते हो। भला जो पेड़ कटाया न जायगा, तो हमारे पैसे कैसे निकलेंगे?

मनोहर सिंह बोला—अन्नदाता, आपके रुपये तो जहाँ तक होगा मैं दे ही दूँगा।

ठाकुर—अच्छा, अब ठीक-ठीक बताओ कि रुपये कब तक दे दोगे?

मनोहर कुछ देर सोच कर बोला—एक सप्ताह में अवश्य दे दूँगा।

ठाकुर—अच्छा, स्वीकार है। एक सप्ताह में दे देना, नहीं तो फिर पेड़ हमारा हो जाएगा। हमारी जो इच्छा होगी, वह करेंगे—चाहे कटावेंगे, चाहे रक्खेंगे।

मनोहर—और चाहे जो कीजिएगा उसे कटवाइएगा नहीं, इतनी आपसे प्रार्थना है।

ठाकुर—खैर, हमारा जो जी चाहेगा, करेंगे। तुम्हें फिर कुछ कहने का अधिकार नहीं रहेगा।

मनोहर सिंह की आयु 55 वर्ष के लगभग है। अपनी जवानी उसने फ़ौज में व्यतीत की थी। इस समय वह संसार में अकेला है। उसके परिवार में कोई नहीं। गाँव में दो-एक दूर के रिश्तेदार हैं, जिनके यहाँ अपना भोजन बनवा लेता है। न कहीं आता हैं, न जाता है। दिन-रात अपने टूटे-फूटे मकान में पड़ा ईश्वर-भजन किया करता है।

एक वर्ष पूर्व उसे खेती कराने की सनक सवार हुई थी। उसने ठाकुर शिवपाल सिंह की कुछ भूमि लगान पर लेकर खेती कराई भी थी। पर उसके दुर्भाग्य से उस साल अनावृष्टि के कारण कुछ पैदावार न हुई। ठाकुर शिवपाल सिंह का लगान न पहुँचा। मनोहर सिंह को जो कुछ पेंशन मिलती थी वह उसके भोजन-वस्त्र भर ही को होती थी। अन्त में जब ठाकुर साहब को लगान न मिला, तो उन्होंने

उसका एक नीम का वृक्ष, जो उसकी झोंपड़ी के द्वार पर लगा था, गिरवी रख लिया। यह नीम का वृक्ष बहुत पुराना और उसके पिता के हाथ का लगाया हुआ था।

मनोहर सिंह को एक सप्ताह का अवकाश दिया गया, उसने बहुत कुछ दौड़धूप की, दो-चार आदमियों से क़र्ज माँगा, पर किसी ने उसे रुपये न दिये। लोगों ने सोचा, वृद्ध आदमी है, न जाने कब ढुलक जाय। ऐसी दशा में रुपया किससे वसूल होगा? मनोहर चारों ओर से हताश होकर बैठा रहा और धड़कते हुए हृदय से सप्ताह व्यतीत होने की राह देखने लगा।

दोपहर का समय है। मनोहर सिंह एक चारपाई पर नीम के नीचे लेटा हुआ है। नीम की शीतल वायु के झोकों से उसे बड़ा सुख मिल रहा है। वह पड़ा-पड़ा सोच रहा है कि परसों तक यदि रुपये न पहुंचेगे, तो ठाकुर साहब उस पेड़ को कटवा डालेंगे। यह पेड़ मेरे पिता के हाथ का लगाया हुआ है। मुझे और मेरे परिवार को दतून और छाया देता रहा है। इसको ठाकुर साहब कटवा डालेंगे।

यह विचार मनोहर सिंह को ऐसा दु:खदायी प्रतीत हुआ कि वह चारपाई पर उठकर बैठ गया और वृक्ष की ओर मुँह करके बोला—यदि संसार में किसी ने मेरा साथ दिया है तो तूने। यदि संसार में किसी ने नि:स्वार्थ भाव से मेरी सेवा की है तो तूने। अब भी मेरी आँखों के आगे वह दृश्य आ जाता है, जब मेरे पिता तुझे सींचा करते थे। तू उस समय बिल्कुल बच्चा था। मैं तेरे लिए तालाब से पानी भर कर लाया करता था। पिता कहा करते थे—बेटा मनोहर! यह मेरे हाथ की निशानी है। इससे जब-जब तुझे और तेरे बाल-बच्चों को सुख पहुंचेगा, तब-तब मेरी याद आवेगी। पिता का देहान्त हुए चालीस वर्ष व्यतीत हो गए। उनके कहने के अनुसार तू सदैव उनकी कीर्ति का स्मरण कराता रहा और जब तक रहेगा उनकी याद दिलाता रहेगा। मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब मैं अपने मित्रों सहित तेरी डालियों पर चढ़ कर खेला करता था। इस संसार में तू ही एक पुराना मित्र है। तुझे वह दुष्ट काटना चाहता है। हाँ, काटेगा क्यों नहीं। देखूँ, कैसे काटता है।

उसी समय उधर से एक पन्द्रह-सोलह वर्ष का लड़का निकला। वृद्ध मनोहर को बड़बड़ाता देख उसने पूछा—चाचा, किससे बातें करते हो? यहां तो कोई है भी नहीं।

बुड्ढे ने चौंक कर लड़के की ओर देखा और कहा—क्या कहूँ बेटा तेजा, अपने कर्म से बातें कर रहा हूँ। ठाकुर शिवपालसिंह के मुझ पर कुछ रुपये चाहियें। तुझे तो बेटा मालूम ही है कि पर साल खेतों में एक दाना भी नहीं हुआ। होता तो क्या मैं उनका लगान रख लेता? अब वे कहते हैं, लगान के रुपये दो, नहीं पेड़ कटवा लेंगे। इस पेड़ को कटवा लेंगे जो मेरे बापू के हाथ का लगाया हुआ है। यह बात तो देखो : समय का फेर है, जो आज ऐसी-ऐसी बातें सुननी पड़ती है। बेटा, मैंने सारी उमर फ़ौज में बिताई है। बड़ी-बड़ी लड़ाई और मैदान देखे हैं। ये बेचारे हैं किस खेत की मूली। आज शरीर

में बल होता, तो इनकी मजाल थी कि मेरे पेड़ के लिए ऐसा कहते। मुँह नोच लेता। मैंने कभी नाक पर मक्खी नहीं बैठने दी। बड़े-बड़े साहब-बहादुरों से लड़ पड़ता था। ये बेचारे हैं क्या? बड़े ठाकुर की दुम बने घूमते हैं। मैंने तो तोप के मुँह पर डट कर बन्दूकें चलाई हैं। पर बेटा, समय सब कुछ करा लेता है। जिन्होंने कभी तोप की सूरत नहीं देखी, वे वीर और ठाकुर बने घूमते हैं। हमें आंखें दिखाते हैं कि रुपये दो, नहीं पेड़ कटवा लेंगे। देखें, कैसे पेड़ कटवाते हैं? लाख बुड्ढा हो गया हूँ। जब तलवार लेकर डट जाऊँगा तो भागते दिखाई पड़ेंगे और बेटा, सौ बात की एक बात तो यह है कि मुझे अब मरना ही है, चल-चलाव लग रहा है। मैं बड़ी-बड़ी लड़ाइयों से जीता लौट आया। समझूँगा, यह भी एक लड़ाई ही है। अब इस लड़ाई में मेरा अन्त है। पर इतना समझ रखना कि मेरे जीते जी इस पेड़ की एक डाल भी कोई काटने नहीं पावेगा। उनका रुपया गले बराबर है। भगवान जाने, मेरे पास होता, तो मैं दे देता। नहीं है, तो क्या किया जाय? पर यह नहीं हो सकता कि ठाकुर साहब मेरा पेड़ कटवा लें, और मैं बैठे टुकुर-टुकुर देखा करूँ।

तेजा बोला—चाचा, जाने भी दो, इन बातों में क्या रक्खा है? पेड़ कटवाने को कहते हैं, काट लेने देना। इस पेड़ में तुम्हारा रक्खा ही क्या है? पेड़ तो नित्य ही कटा करते हैं।

मनोहर सिंह बिगड़ कर बोला—आखिर लड़के ही हो न! अरे बेटा, यह पेड़ ऐसा-वैसा नहीं है। यह पेड़ मेरे भाई के बराबर है। मैं इसे अपना सगा भाई समझता हूँ। यह मेरे पिता के हाथ का लगाया हुआ है, किसी और के हाथ का नहीं। जब मैं तुम से भी छोटा था, तब से इसका और मेरा साथ है। मैं बरसों इस पर खेला हूँ, बरसों इसकी मीठी-मीठी निबोलियाँ खाई हैं। इसकी दतून आज तक करता हूँ। गाँव में सैकड़ों पेड़ हैं, पर मुझ से कसम ले लो, जो मैंने कभी उनकी एक पत्ती तक छुई हो। जब मेरे घर में आप ही इतना बड़ा पेड़ खड़ा हुआ है, तब मुझे दूसरे पेड़ में हाथ लगाने की क्या पड़ी है? दूसरे, मुझे किसी और पेड़ की दतून अच्छी नहीं लगती।

तेजा बोला—चाचा, बिना रुपये दिये तो यह पेड़ बच नहीं सकता।

मनोहर—बेटा, ईश्वर जानता है, मेरे पास रुपये होते, तो मैं आज ही दे देता। पर क्या करूँ, लाचार हूँ। मेरे घर में ऐसी कोई चीज़ भी नहीं, जो बेच कर दे दूँ। मुझे आप इस बात का बड़ा दुःख है। गाँव भर में घूम आया। किसी ने उधार न दिये। क्या करूँ? बेटा तेजा, सच जानना, जो यह पेड़ कट गया, तो मुझे बड़ा दुःख होगा। मेरा बुढ़ापा बिगड़ जायगा। अभी तक मुझे कोई दुःख नहीं था। खाता था, ईश्वर का भजन करता था, पर अब घोर दुःख हो जायेगा।

यह कर कर वृद्ध मनोहरसिंह ने आँखों में आँसू भर लिये।

तेजा वृद्ध मनोहर सिंह का कष्ट देख-सुन कर बड़ा दुखी हुआ। तेजासिंह गाँव के एक प्रतिष्ठित किसान का लड़का था। उसका पिता डेढ़-दो सौ बीघे भूमि की खेती करता था। मनोहर को तेजासिंह चाचा कहा करता था।

तेजा ने कहा—चाचा, बापू से यह हाल कहा है ?

मनोहर—सब से कह चुका बेटा! तेरा बापू तो अब बड़ा आदमी हो गया है। वह मेरे जैसे गरीबों की बात क्यों सुनने लगा ? एक ज़माना था, जब वह दिन-दिन भर द्वार पर पड़ा रहता था। घर में लड़ाई होती थी, तो मेरे ही यहाँ भाग आता था, और दो-दो तीन-तीन दिन तक यहाँ रहता था, वही तुम्हारा बापू अब सीधे मुँह बात नहीं करता। इसी से कहता हूँ, समय की बात है।

तेजा ने पूछा—कितने रुपये देने से पेड़ बच सकता है ?

मनोहर—२५ रुपये देने पड़ेंगे।

तेजा—२५ रुपये तो बहुत हैं चाचा।

मनोहर—पास नहीं हैं, तो बहुत ही हैं। होते, तो थोड़े थे।

तेजा—दस-पाँच रुपये की बात होती, तो मैं ही कहीं से ला देता।

मनोहर—बेटा, ईश्वर तुझे चिरंजीव रखें। तूने एक बात तो कही। गाँव वालों ने तो इतना भी नहीं कहा। खैर, देखा जायगा। पर इतना तू याद रखना कि मेरे जीते जी इस पेड़ को कोई हाथ नहीं लगाने पावेगा।

एक सप्ताह बीत गया। आज आठवाँ दिन है। मनोहर-सिंह रुपयों का प्रबन्ध नहीं कर सका। वह समझ गया कि अब पेड़ का बचना कठिन है पर साथ ही वह यह भी निश्चित कर चुका था कि उसके जीते जी कोई उसको नहीं काट सकता। उसने अपनी तलवार भी निकाल ली थी, और साफ करके रख ली थी। अब वह हर समय पेड़ के नीचे पड़ा रहता था। तलवार सिरहाने रक्खी रहती थी।

आठवें दिन दोपहर के समय शिवपाल सिंह ने मनोहर सिंह को बुलवाया। मनोहर सिंह तलवार बगल में दबाये अकड़ता हुआ ठाकुर साहब के सामने पहुँचा।

शिवपाल सिंह और उनके पास बैठे हुए लोग बुड्ढे को इस सजधज से देखकर मुस्कराए। शिवपाल सिंह ने कहा—सुनते हो मनोहर सिंह, एक सप्ताह बीत गया। अब पेड़ हमारा हो गया। आज हम उसकी कटाई शुरू करते हैं।

मनोहर—आपको अधिकार है। मुझे रुपया मिलता, तो दे ही देता। और अब भी मिल जायेगा तो दे ही दूँगा। मेरी नीयत में बेईमानी नहीं है। मैं फौज में रहा हूँ। बेईमानी का नाम नहीं जानता।

शिवपाल—तो अब हम उसे कटवा लें न!

मनोहर—यह कैसे कहूँ। आपका जो जी चाहे, कीजिये।

यह कहकर मनोहर सिंह उसी प्रकार अकड़ता हुआ ठाकुर शिवपाल के सामने से चला आया और अपने पेड़ के नीचे चारपाई पर आकर बैठ गया।

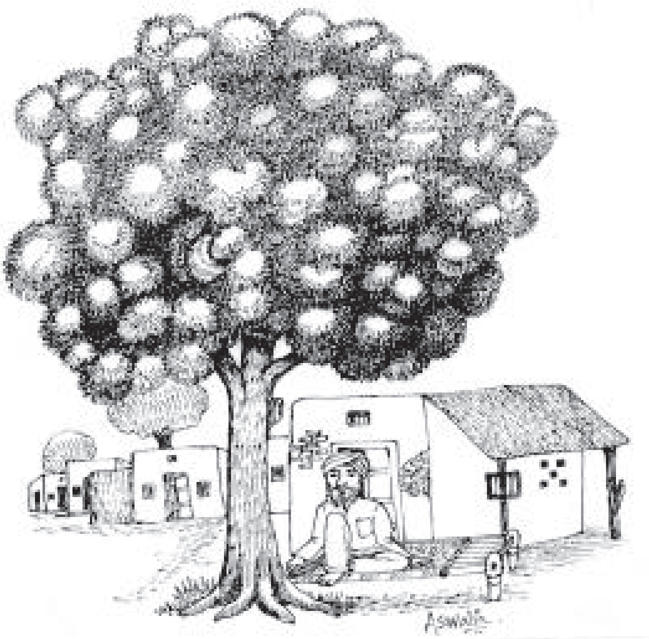

दोपहर ढलने पर चार-पाँच आदमी कुल्हाड़ियाँ लेकर आते हुए दिखाई पड़े। मनोहर सिंह झट म्यान से तलवार निकाल डट कर खड़ा हो गया और ललकार कर बोला .....संभल कर आगे बढ़ना। जो किसी ने भी पेड़ में कुल्हाड़ी लगाई, तो उसकी जान और अपनी जान एक कर दूँगा।

वे मज़दूर बुड्ढे की ललकार सुन और तलवार देखकर भाग खड़े हुए।

जब शिवपाल सिंह को यह बात मालूम हुई, तब पहले तो वे बहुत हँसे, परन्तु पीछे कुछ सोचकर उनका चेहरा क्रोध के मारे लाल हो गया। बोले—इस बुड्ढे की शामत आई है। हमारा माल है, हम चाहे काटें, चाहे रखें, वह कौन होता है?

चलो तो मेरे साथ, देखूं तो वह क्या करता है?

शिवपाल सिंह मज़दूरों तथा दो लठबंद आदमियों को लेकर पहुँचे। उन्हें आता देख बुड्ढा फिर तलवार निकाल कर खड़ा हो गया।

शिवपाल सिंह उसके सामने पहुंचकर बोले—क्यों मनोहर, यह क्या बात है?

मनोहर सिंह बोला—बात केवल इतनी है कि मेरे रहते इसे कोई हाथ नहीं लगा सकता। यह मैं जानता हूँ कि अब पेड़ आपका है, मगर यह होने पर भी मैं इसे कटता हुआ नहीं देख सकता।

शिवपाल सिंह—पर हम तो इसे कटवाये बिना न मानेंगे।

मनोहर सिंह को भी क्रोध आ गया। वह बोला—ठाकुर साहब, जो आप सच्चे ठाकुर हैं, तो इस पेड़ को कटवा लें। जो मैं ठाकुर हूँगा, तो इसे न कटने दूँगा।

शिवपाल सिंह अपने आदमियों से बोले—देखते क्या हो, इस बुड्ढे को पकड़ लो और पेड़ काटना शुरू कर दो।

ठीक उसी समय तेजा सिंह दौड़ता हुआ आया और मनोहर सिंह को कुछ रुपये देकर बोला—लो चाचा, ये रुपये। अब तुम्हारा पेड़ बच गया।

मनोहर सिंह ने रुपये गिन कर ठाकुर शिवपाल सिंह से पूछा—कहिए ठाकुर साहब, रुपये लेने हों, तो ये हाजिर हैं। और पेड़ कटवाना हो, तो आगे बढ़िये।

ठाकुर—रुपये अब हम नहीं ले सकते। रुपये देने की मियाद बीत गई। अब तो पेड़ कटेगा।

मनोहर सिंह अकड़ कर बोला—ठीक है। अब मालूम हुआ कि आप केवल मुझे दुःख पहुँचाने के लिए पेड़ कटवा रहे हैं। अच्छा कटवाइए! मुझे भी देखना है, आप किस तरह पेड़ कटवाते हैं।

इतनी ही देर में गाँव भर में खबर फैल गई कि शिवपाल सिंह मनोहर सिंह का पेड़ कटवाते हैं, पर मनोहर सिंह तलवार खींचे खड़ा है, किसी को पेड़ के पास नहीं जाने देता। यह खबर फैलते ही गाँव भर जमा हो गया।

गाँव के दो-चार प्रतिष्ठित आदमियों ने मनोहर सिंह से पूछा—क्या बात है मनोहर सिंह?

मनोहर सिंह सब हाल कहकर बोला—मैं रुपये देता हूँ, ठाकुर नहीं लेते। कहते हैं—कल तक मियाद थी। अब तो पेड़ कटेगा।

शिवपाल सिंह बोले—कल तक यह रुपये दे देता तो पेड़ पर हमारा कोई अधिकार न होता। अब हमारा उस पर पूरा अधिकार है। हम पेड़ अवश्य कटवाएंगे।

एक व्यक्ति बोला—जब कल तक इसके पास रुपये नहीं थे, तो आज कहाँ से आ गये?

शिवपाल सिंह का एक आदमी बोला—तेजा ने अभी ला कर दिये हैं।

गाँव वालों के साथ तेजा का पिता भी आया था। उसने यह सुनकर तेजा को पकड़ा और कहा—क्यों बे, तूने ही रुपये चुराये? मैंने दोपहर को पूछा तो तीन-तेरह बकने लगा था।

इसके बाद मनोहर सिंह से कहा—मनोहर, ये रुपये तेजा मेरे सन्दूक से चुरा लाया है। ये रुपये मेरे है।

मनोहर रुपये फेंक कर बोला—तेरे हैं तो ले जा। मैंने तेरे लड़के से रुपये नहीं माँगे थे।

फिर मनोहर सिंह ने तेजा से कहा—बेटा, तूने यह बुरा काम किया! चोरी की ! राम-राम! बुढ़ापे में मेरी नाक काटने का काम किया था। ये लोग समझेंगे मैंने ही चुराने के लिए तुझसे कहा होगा।

तेजा बोला—चाचा, मैं गंगा जल उठा कर कह सकता हूँ कि तुमने रुपये मांगे तक नहीं, चुराने के लिए कहना तो बड़ी दूर की बात है।

शिवपाल सिंह ने हँस कर कहा—क्यों मनोहर, अब रुपये कहाँ हैं? लाओ, रुपये ही लाओ। मैं रुपये लेने को तैयार हूँ। अब या तो अभी रुपये दे दो, या सामने से हट जाओ। झगड़ा करने से कोई लाभ न होगा।

मनोहर सिंह बोला—ठाकुर साहब, इन तानों से क्या फायदा? रुपये मेरे पास नहीं हैं, लेकिन पेड़ मैं कटने नहीं दूँगा।

शिवपाल सिंह उपस्थित लोगों से बोले—आप लोग इस बात को देखिए और न्याय कीजिए। मियाद कल तक की थी; मैं अब भी रुपये लेने को तैयार हूँ। अब मेरा अपराध नहीं, यह बुड्ढा व्यर्थ झगड़ा कर रहा है।

तेजा सिंह यह सुनते ही आगे बढ़ा, और अपनी उंगली से सोने की अंगूठी उतार कर शिवपाल सिंह से बोला—ठाकुर साहब, यह अंगूठी एक तोले की है। आपके रुपये इससे निकल आवेंगे। आप यह अंगूठी ले जाइये। इस अंगूठी पर बापू का कोई अधिकार नहीं। यह अंगूठी मुझे मेरी नानी ने दी थी।

यह देखकर तेजा सिंह का पिता आगे बढ़ा और बोला—ठाकुर साहब, लीजिए ये पच्चीस रुपये और अब इस पेड़ को छोड़ दीजिए। आप अभी कह चुके हैं कि रुपये मिल जायें, तो पेड़ छोड़ देंगे। अतएव अपने वचन का पालन कीजिए।

ठाकुर साहब के चेहरे का रंग उड़ गया। उन्हें विश्वास हो गया था कि अब मनोहर सिंह को रुपये मिलना असम्भव है। इसी से उन्होंने केवल उदारता दिखाने के लिए रुपए लेना स्वीकार किया था। अब वे कुछ न कह सके। कारण, उन्होंने पच्चीस-तीस आदमियों के सामने रुपये लेना स्वीकार कर लिया था। वे रुपये लेकर चुपचाप चले गये।

ठाकुर साहब के चले जाने के बाद मनोहर सिंह ने तेजा को बुलाकर छाती से लगाया और कहा—बेटा, इस पेड़ को तूने ही बचाया है, अतएव मुझे विश्वास हो गया है कि मेरे पीछे तू इस पेड़ की पूरी रक्षा कर सकेगा।

मनोहर ने यह कह कर उपस्थित लोगों से कहा—भाइयो! मैं तुम सबके समाने यह पेड़ तेजा सिंह को देता हूँ। तेजा को छोड़ कर इस पर किसी का कोई अधिकार न रहेगा।

फिर तलवार म्यान में रखते हुआ आप ही आप कहा—पर मेरे जीते जी कोई पेड़ में हाथ नहीं लगा सकता था, अपनी और उसकी जान एक कर देता। मैंने फौज में नौकरी की है। बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ जीती हैं। ये बिचारे हैं क्या चीज़!

शब्दार्थ

विनीत = विनय से युक्त, नम्र और शिष्ट; **हताश** = निराश; **ऋण** = कर्ज़; **निः स्वार्थ** = बिना स्वार्थ के; **गिरवी** = किसी के पास कोई चीज़ इस शर्त पर रखना कि जब ऋण चुका दिया जाएगा तब वह चीज़ भी लौटा दी जाएगी; **कीर्ति** = यश, प्रसिद्धि; **टुकुर-टुकुर** = ललचाई हुई नज़र से ; **निबोली** = नीम का छोटा सा फल; **प्रतिष्ठित** = सम्मान प्राप्त; **सठिया जाना** = साठ वर्ष का होना, बुड्ढा होना; **चिरंजीव** = दीर्घजीवी, बहुत समय तक जीवित रहने वाला; **ऊल-जलूल** = ऊट-पटांग; **लठबंध** = लठैत; **अनावृष्टि** = वर्षा का अभाव, सूखा; **मियाद** = समय, अवधि

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) बूढ़े मनोहर सिंह का नीम का पेड़ किसके पास गिरवी था ?

(2) ठाकुर शिवपाल सिंह रुपये न लौटाए जाने पर किस बात की धमकी देता है ?

(3) मनोहर सिंह ने रुपये लौटाने की मोहलत कब तक की मांगी थी ?

(4) नीम का वृक्ष किसके हाथ का लगाया हुआ था ?

(5) तेजा सिंह कौन था ?

(6) ठाकुर शिवपाल सिंह का कर्ज़ अदा हो जाने के बाद मनोहर सिंह ने अपने नीम के पेड़ के विषय में क्या निर्णय लिया ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :—

(1) मनोहर सिंह ने अपने नीम के पेड़ को गिरवी क्यों रखा ?

(2) ठाकुर शिवपाल सिंह नीम के पेड़ पर अपना अधिकार क्यों जताते हैं ?

(3) मनोहर सिंह ठाकुर शिवपाल सिंह अपने नीम के वृक्ष के लिए क्या आश्वासन चाहता था ?

(4) नीम के वृक्ष के साथ मनोहर सिंह का इतना लगाव क्यों था ?

(5) मनोहर सिंह ने अपना पेड़ बचाने के लिए क्या उपाय किया ?

(6) मनोहर सिंह की किस बात से तेजा सिंह प्रभावित हुआ ?

(7) तेजा सिंह ने मनोहर सिंह की सहायता किस प्रकार की ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए :—

(1) मनोहर सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।

(2) तेजा सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।

(3) 'अशिक्षित का हृदय' कहानी का क्या उद्देश्य है ?

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :—

घर ____________________

गंगा ____________________

वृक्ष ____________________

बेटा ____________________

II. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए :—

सप्ताह ____________

समय ____________

निश्चय ____________

प्रतिष्ठा ____________

स्मरण ____________

अपराध ____________

III. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य**
बुढ़ापा बिगाड़ना	____________	____________________________
सीधे मुँह बात न करना	____________	____________________________
जान एक कर देना	____________	____________________________
क्रोध के मारे लाल होना	____________	____________________________
तीन तेरह बकना	____________	____________________________
नाक कटवाना	____________	____________________________
चेहरे का रंग उड़ना	____________	____________________________

IV. पंजाबी से हिंदी में अनुवाद कीजिए :—

(1) ਠਾਕੁਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਚਲੇ ਜਾਣ ਤੋਂ ਬਾਦ ਮਨੋਹਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਤੇਜਾ ਨੂੰ ਬੁਲਾ ਕੇ ਛਾਤੀ ਨਾਲ ਲਾਇਆ ਤੇ ਕਿਹਾ-ਪੁੱਤਰ, ਇਸ ਦਰਖਤ ਨੂੰ ਤੂੰ ਹੀ ਬਚਾਇਆ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਹੁਣ ਮੈਨੂੰ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਮੇਰੇ ਪਿੱਛੋਂ ਤੂੰ ਇਸ ਦਰਖੱਤ ਦੀ ਪੂਰੀ ਰਖਿਆ ਕਰ ਸਕੇਂਗਾ।

(2) ਸ਼ਿਵਪਾਲ ਸਿੰਘ ਨੇ ਆਪਣੇ ਆਦਮੀਆਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ-ਵੇਖਦੇ ਕੀ ਹੋ, ਇਸ ਬੁੱਢੇ ਨੂੰ ਫੜ ਲਓ ਅਤੇ ਦਰਖਤ ਕਟਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿਓ।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

(1) तेजा सिंह ने मनोहर सिंह की सहायता के लिए रुपये चुराए। इसे आप कहाँ तक उचित मानते हैं ?

(2) पेड़ों का विकास मानव के बिना हो सकता है, लेकिन मानव का विकास पेड़ों के बिना संभव नहीं। इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(3) यह कहानी प्रकृति के साथ मानव के भावात्मक सम्बन्ध को प्रकट करती हुई एक मार्मिक कहानी है। स्पष्ट कीजिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

(1) वृक्ष लगाओ, पर्यावरण बचाओ-जैसे नारे चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाइए।

(2) अपने स्कूल या आस पड़ोस में पौधारोपण कीजिए और उसकी देखभाल कीजिए।

(3) नीम के पेड़ के क्या-क्या लाभ हैं ? इस बारे में इंटरनेट से या पुस्तकों से जानकारी प्राप्त कीजिए।

(4) 5 जून को पर्यावरण दिवस में सक्रिय रूप से भाग लीजिए।

(5) विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों के चित्रों की एलबम तैयार कीजिए।

(6) इस कहानी को अध्यापक की सहायता से एकांकी रूपांतरित करके मंचित कीजिए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

नीम पर लोकोक्तियाँ

एक केरला दूजा नीम चढ़ा—एक दोष तो था ही दूसरा और लग गया।

नीम हकीम खतरा जान—अधूरा ज्ञान खतरनाक होता है।

नीम न मीठा होय खाओ गुड़-घी से—जन्मजात स्वभाव अनेक कोशिशों पर भी नहीं छूटता अथवा प्राकृतिक गुण या अवगुण नहीं जाते।

नीम के कीड़े को नीम ही अच्छा लगता है—बुरी प्रकृति वाले को बुरी बातें/चीज़ें ही अच्छी लगती हैं।

नीम का फल निमकौड़ी—बुरे काम का बुरा नतीजा होता है।

नीम गुण बत्तीस, हर्र गुण छत्तीस— हर्र नीम से भी अधिक गुणकारी होती है अर्थात जब कहीं किसी तुलना में किसी को श्रेष्ठ बताना हो तो इसका प्रयोग किया जाता है।

नीम का वृक्ष

नीम भारतीय मूल का एक तेज़ी से बढ़ने वाला सदाबहार वृक्ष है जो 15-20 मीटर (लगभग 50-65 फुट) की ऊँचाई तक पहुँच सकता है और कभी-कभी 35-40 मीटर (115-113 फुट) तक भी ऊँचा हो सकता है।

नीम के बारे में उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों में इसके फल, बीज, तेल, पत्तों, जड़ और छिलके में बीमारियों से लड़ने के कई फायदे बताए गए हैं। नीम के अर्क में मधुमेय (डायबिटिज), कैंसर, हृदय रोग, एलर्जी, अल्सर, हेपेटाइट्स आदि से लड़ने के गुण पाए जाते हैं। इसकी छाल खासतौर पर मलेरिया और त्वचा संबंधी रोगों में उपयोगी है। नीम के तने, जड़ और कच्चे फलों में शक्तिवर्धक और मियादी रोगों से लड़ने का गुण पाया जाता है। नीम की छाया भी गुणकारी होती है, उसमें बीमारियों से लड़ने की शक्ति होती है।

****

पाठ-9
मन्नू भंडारी

लेखिका परिचय—

मन्नू भंडारी नई कहानी की एक प्रसिद्ध लेखिका हैं।

आपके उपन्यास और कहानियाँ मानवीय भावनाओं को स्पर्श करते हैं। आपका जन्म 3 अप्रैल 1931 में भानपुर मध्यप्रदेश में हुआ। आपकी विद्यालय स्तर की शिक्षा अजमेर में हुई जबकि स्नातक स्तर की परीक्षा आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1949 में उत्तीर्ण की। आपका विवाह हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार श्री राजेन्द्र यादव से हुआ। आपने अपने पति श्री राजेन्द्र यादव के साथ मिलकर 'एक इंच मुस्कान' की रचना की ! आपकी प्रसिद्ध रचनाओं में 'आपका बंटी' और 'महाभोज' ने बहुत ख्याति प्राप्त की। इन उपन्यासों के नाट्य रूपान्तर 'भारत रंग महोत्सव नई दिल्ली' में प्रस्तुत किए गए। आपकी रचनाएँ इतनी लोकप्रिय थीं कि इनका कई भाषाओं में अनुवाद किया गया।

मन्नू भंडारी की कहानियों ने हिंदी फिल्मों में अत्यन्त प्रसिद्धि प्राप्त की। 'यही सच है' उपन्यास के आधार पर 'रजनीगंधा' फ़िल्म बनी जिसे फिल्म फेयर अवार्ड में सर्वश्रेष्ठ फिल्म घोषित किया गया। बासु चैटर्जी द्वारा निर्देशित 'स्वामी' फ़िल्म के संवाद भी आपने लिखे। सन् 1986 में आपकी कहानी 'समय की धारा' प्रकाशित हुई। आपकी रचनाओं पर कई पुरस्कार मिले। विशेषत: 'एक कहानी यह भी' पर सन् 2008 में आपको व्यास सम्मान मिला।

पाठ-परिचय

''दो कलाकार'' मानवीय भावनाओं को स्पर्श करती है। चित्रा और अरुणा अन्तरंग सहेलियाँ हैं। चित्रा चित्रकार है। उसकी तूलिका में जादू है। उसके बने चित्र राष्ट्रीय 'व' अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत होते हैं। लेकिन अरुणा एक समाज सेविका है। वह बेसहारा लोगों को सहारा देती है। वह ईश्वर की बनाई इस सृष्टि में गरीब और बेसहारा लोगों की बेरंग ज़िन्दगी में अपनी सेवा से खूबसूरत रंग भर देती है। चित्रा का दो अनाथ बच्चों और उनकी मरी हुई माँ का चित्र कई पुरस्कार पाता है लेकिन अरुणा उन अनाथ बच्चों को अपनाकर, उन्हे माँ का प्यार देकर उनके जीवन में कई रंग बिखेर देती है। इस तरह अरुणा और चित्रा दोनों ही कलाकार हैं। लेखिका बाकी बात पाठकों पर छोड़ देती है।

'दो कलाकार' कहानी में मन्नू भंडारी ने जन सेवा या मानवता की भावना को बहुत बड़ी कला माना है। कहानी की प्रमुख पात्रा अरुणा के मुँह से कहलवाया भी है वह चित्रा को कहती है-

'कागज़ पर इन बेजान चित्रों को बनाने की बजाय दो चार की ज़िन्दगी क्यों नहीं बना देती।'

'दो कलाकार' शीर्षक कहानी की मूल संवेदना को लेकर चलता है। शीर्षक संक्षिप्त व सार्थक है। कहानी की भाषा में हिंदी के साथ-साथ उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्दों का प्रयोग हैं। कहानी में जिज्ञासा अन्त तक बनी रहती है।

दो कलाकार

''ए रूनी, उठ,'' और चादर खींचकर, चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोरकर उठा दिया।

''अरे, क्या है?'' आँख मलते हुए थोड़े खिझलाहट-भरी आवाज़ में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गयी और अपने नये बनाये हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़ा करके बोली, ''देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।''

''ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी। बदतमीज़ कहीं की !''

''अरे, ज़रा इस चित्र को तो देख। न पा गयी पहला इनाम तो नाम बदल देना।'' चित्र को चारों ओर से घुमाते हुए अरुणा बोली, ''किधर से देखूँ, यह तो बता दे ? हज़ार बार तुझसे कहा कि जिसका चित्र बनाये उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफहमी न हुआ करे, वरना तू बनाये हाथी और हम समझें उल्लू।'' फिर तस्वीर पर आँख गड़ाते हुए बोली, ''किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ कि चौरासी लाख योनियों में से आखिर यह किस जीव की तस्वीर है ?''

''तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है ? अरे, ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।''

''अरे, यह क्या ? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्रॉम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं, मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है ?'' और उसने वह चित्र रख दिया।

''ज़रा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है ?''

''तेरी बेवकूफी का। आयी है बड़ी प्रतीक वाली।''

''अरे, जनाब, यह चित्र आज के जीवन में चल रही उलझन की तरफ ध्यान खींचता है।''

''समझी, मुझे तो यह चित्र तेरे दिमाग में चल रही उलझन ही लग रही है। बिना मतलब ज़िन्दगी खराब कर रही है।'' और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गयी। लौटी तो देखा, तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़े उसकी राह देख रहे हैं। आते ही बोले, ''दीदी! सब बच्चे आकर बैठ गये, चलिए।''

''आ गये सब बच्चे ? अच्छा चलो, मैं अभी आयी।'' बच्चे दौड़ पड़े।

''क्या ये बन्दर पाल रखे हैं तूने भी ?'' फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, ''एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। ज़रा लोगों को दिखाया ही करेंगे कि हमारी एक ऐसी मित्र साहब थीं जो सारे दाइयों, चपरासियों और दुनिया भर के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पण्डिता और समाज-सेविका समझती थी।''

''जा-जा समझते हैं तो समझते हैं। तू जाकर सारी दुनिया में ढिंडोरा पिटाना, हमें कोई शरम है क्या ? तेरी तरह लकीरें खींचकर तो समय बर्बाद नहीं करते।'' और पैर में चप्पल डालकर वह बाहर मैदान में चली गयी, जहाँ एक छोटी-सी पाठशाला बनी हुई थी।

रात के दस बजे थे। सारे छात्रावास की बत्तियाँ हमेशा की तरह बुझ चुकी थीं। ऊपर के एक तल्ले पर अँधेरे में ही खुसर-फुसर चल रही थी। रविवार के दिन तो यों ही छुट्टी होती है। दूसरे, दिन के समय में काफी नींद निकाल ली जाती थी, सो दस बजे लड़कियों को किसी तरह भी नींद नहीं आती थी। तभी छात्रावास के फाटक में जलती हुई टॉर्च लिए कोई घुसा। अपने कमरे की खिड़की में से झाँकते हुए सविता ने कहा, ''ठाठ तो छात्रावास में बस अरुणा ही के हैं, रात नौ बजे लौटो, दस बजे लौटो, कोई बंधन नहीं। हम लोग तो दस के बाद बत्ती भी नहीं जला सकते।''

''लौट आई अरुणा दी ? आज सवेरे से ही वे बड़ी परेशान थी। फुलिया दाई का बच्चा बड़ा बीमार था, दोपहर से वे उसी के यहां बैठी थी। पता नहीं, क्या हुआ बेचारे का ?'' शीला ने ठंडी साँस भरते हुए कहा।

''तू बड़ी भक्त है अरुणा दी की !''

''उनके जैसे गुण अपना ले तो तेरी भी भक्त हो जाऊँगी।''

''मैं कहती हूँ, उन्हें यही सब करना है तो कहीं और रहें, छात्रावास में रहकर यह जो नवाबी चलाती हैं, सो तो हमसे बर्दाश्त नहीं होती। सारी लड़कियाँ डरती हैं तो कुछ कहती नहीं, पर प्रिंसिपल और वार्डन तक रोब खाती है इनका, तभी तो सब प्रकार की छूट दे रखी है।''

''तू भी जिस दिन हाड़ तोड़कर दूसरों के लिए यों मेहनत करने लग जायेगी न, उस दिन तेरा भी सब रोब खाने लगेंगे। पर तुम्हें तो सजने-संवरने से ही फुर्सत नहीं मिलती, दूसरों के लिए क्या खाक काम करोगी।''

''अच्छा-अच्छा चल, अपना भाषण अपने पास रख।''

अरुणा अपने कमरे में घुसी तो बहुत ही धीरे से जिससे चित्रा की नींद न खराब हो। पर चित्रा जग ही रही थी। दोपहर से अरुणा बिना खाये-पिये बाहर थी, उसे नींद कैसे आती भला ? मेस से उसका खाना लेकर उसे मेज़ पर ढककर रख दिया था। अरुणा के आते ही वह उठ-बैठी और पूछा, ''बड़ी देर लग गयी, क्या हुआ रूनी !''

''वह बच्चा नहीं बचा, चित्रा। किसी तरह उसे नहीं बचा सके।'' और उसका स्वर किसी गहरे दु:ख में डूब गया।

चित्रा ने माचिस लेकर लालटेन जलाया और स्टोव जलाने लगी, खाना गरम करने के लिए। तभी अरुणा ने कहा, ''रहने दे चित्रा, मैं खाऊँगी नहीं, मुझे ज़रा भी भूख नहीं है।''और उसकी आँखें फिर छलछला आईं।

बहुत ही स्नेह से अरुणा की पीठ थपथपाते हुए चित्रा ने कहा, ''जो होना था सो हो गया, अब भूखे रहने से क्या होगा, थोड़ा-बहुत खा ले।''

''नहीं चित्रा, अब रहने दे, बस तू लालटेन बुझा दे।''

उसके बाद दो-तीन दिन तक अरुणा बहुत ही उदास रही, लेकिन समय के साथ-साथ वह दुःख भी जाता रहा, और सब काम ज्यों-का-त्यों चलने लगा।

चार बजते ही कॉलेज से सारी लड़कियाँ लौट आईं पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसका इन्तज़ार कर रही थी। ''पता नहीं कहाँ-कहाँ अटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहा करो।''

''अरे, क्यों बड़-बड़ कर रही है। ले मैं आ गई। चल बना चाय।''

''तेरे मनोज की चिट्ठी आई है।''

''कहाँ, तूने तो पढ़ ही ली होगी फाड़कर।''

''चल हट, तुम्हारी चिट्ठियों मे रहता ही क्या है जो कोई पढ़े। बड़े-बड़े आदर्श की बातें, मानो खत न हुआ भाषण हुआ।''

''अच्छा-अच्छा, तू लिखा करना रसभरी चिट्ठियाँ, हमें तो वह सब आता नहीं।'' वह लिफाफा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चित्रा बोली, ''आज पिता जी जी का पत्र आया है, लिखा है जैसे ही यहाँ की पढ़ाई खत्म हो जाएगी, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी, पिता जी कभी मना नहीं करेंगे।''

''हाँ भाई, धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी। तेरी इच्छा कभी टाली जा सकती है। पर सच कहती हूँ, मुझे तो यह सारी कला इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।''

''तो तू मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों ? अरे, इस लगन को देखकर ही तो गुरुजी कहते है कि वह समय दूर नहीं, जब हिन्दुस्तान के कोने-कोने में मेरी शोहरत गूँज उठेगी। अमृता शेरगिल की तरह मेरा भी नाम गूँज उठे, बस यही तमन्ना है।''

''कागज़ पर इन बेज़ान चित्रों को बनाने की बजाय दो-चार की ज़िन्दगी क्यों नहीं बना देती!''

''वह काम तो तेरे और मनोज के लिए छोड़ दिया है। तुम दोनों ब्याह कर लो और फिर जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झण्डा लेकर निकल पड़ना।'' और चित्रा हँस पड़ी। फिर बोली-

''अच्छा, यह बता कि तेरे यह सब करने से ही क्या हो जायेगा ? तूने अपनी अनोखी पाठशाला में दस-बीस बच्चे पढ़ा दिये, तो क्या निरक्षरता मिट जायगी, या झोंपड़ी में कुछ औरतों को हुनर सिखाकर कुछ कमाने लायक बना दिया तो उससे गरीबी मिट जायगी ? अरे, यह सब काम एक के किये होते नहीं। जब तक समाज का सारा ढाँचा नहीं बदलता तब तक कुछ होने का नहीं, और ढाँचा ही बदल गया तो तेरे मेरे कुछ करने की ज़रूरत नहीं, सब अपने आप ही हो जायेगा।''

तीन दिन से तेज़ वर्षा हो रही थी। रोज़ अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़-पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी।

''आज शाम को एक स्वयंसेवकों का दल जा रहा है। प्रिंसिपल से अनुमति ले ली, मैं भी उनके साथ जा रही हूँ।'' शाम को अरुणा चली गयी। पन्द्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफी खस्ता हो गयी थी। सूरत ऐसी निकल आयी थी मानो छः महीने से बीमार हो।

शाम को चित्रा गुरुदेव के पास से लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी खुश हुई। ''अच्छा हुआ, तू लौट आयी। मैं तो सोच रही थी कहीं तू बाढ़-पीड़ितों की सेवा करती ही रह जाय और मैं जाने से पहले तुझसे मिल भी न पाऊँ।''

''क्यों, तेरा जाने का तय हो गया ?''

''हां, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और बस एक सप्ताह बाद हिन्दुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।'' उल्लास उसके स्वर में छलका पड़ रहा था।

''सच कह रही है, तू चली जायगी चित्रा ! छः साल से तेरे साथ रहते-रहते यह बात ही मैं तो भूल गयी कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जायेगी तो मैं कैसे रहूँगी ?''

''अरे, दो महीने बाद शादी कर लेगी, फिर याद भी न रहेगा कि कौन कमबख्त थी चित्रा! बड़ी लालसा थी तेरी शादी में आने की, पर अब तो आ नहीं सकूँगी। अच्छी तरह शादी करना, दोनों मिलकर सारे समाज का और सारे संसार का कल्याण करना।''

आज चित्रा को जाना था। हॉस्टल से उसे बड़ी शानदार विदाई मिली थी। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आयी। बस गुरुजी के घर की तरफ चल पड़ी। तीन बज गये, पर वह लौटी नहीं। अरुणा उसका सारा काम खत्म करके उसकी राह देख रही थी। और भी कई लड़कियाँ वहाँ जमा थीं, कुछ बार-बार आकर पूछ जाती थीं, चित्रा लौटी या नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली है। अरुणा ने सोचा, वह खुद जाकर देख आये कि आखिर बात क्या हो गयी। तभी हड़बड़ाती-सी चित्रा कमरे में आई, ''बड़ी देर हो गयी ना! अरे क्या करूँ, बस, कुछ ऐसा हो गया कि रुकना ही पड़ा।''

''आखिर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनें तो।'' दो-तीन लड़कियाँ एक साथ बोली।

''गर्ग की दुकान के सामने पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिन बैठी रहा करती थी ना, लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था उस सारे दृश्य में कि मैं अपने को रोक नहीं सकी—जल्दी ही उसे एक कागज़ पर उतार लिया। बस इसी में इतनी देर हो गयी।'' चर्चा इसी पर चल पड़ी, ''कैसे मर गयी, कल तो उसे देखा था।'' किसी ने कहा, ''अरे, ज़िन्दगी का क्या भरोसा, मौत कहकर थोड़े आती है।'' आदि-आदि। पर इस सारी चर्चा से अरुणा कब खिसक गयी, कोई जान ही नहीं पाया।

साढ़े चार बजे और चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गयी, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने को स्टेशन आयीं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थीं। उसे पूरा विश्वास था कि वह इस विदाई की वेला में उससे मिलने ज़रूर जायेगी। पाँच भी बज गये, रेल चल पड़ी, अनेक रूमालों ने हिल-हिलकर चित्रा को विदाई दी, पर उसकी आँसू भरी आँखें किसी और को ही ढूँढ़ रही थीं—पर अरुणा न आयी सो न आयी।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गयी। विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच गयी। भिखमंगी और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र के बखान कई अखबारों में हुए। नाम और शोहरत पाकर चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गयी। पहले साल तो अरुणा और उसके बीच चिट्ठियों का लगातार आना जाना लगा रहा। फिर कम होते-होते एकदम बन्द हो गया। पिछले एक साल से तो उसे यह भी नहीं मालूम कि वह कहाँ है। नयी कल्पनाएँ और नये-नये विचार उसे चित्र बनाने की प्रेरणा देते और वह उन्हीं में खोयी रहती। उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ होतीं। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र पहला इनाम पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता, वही हैरान रह जाता। दु:ख और गरीबी जैसे सामने आकर खड़ी थी। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस कामयाबी पर बहुत खुश थे—समझ नहीं पा रहे थे कि उसे कहाँ-कहाँ उठायें, बिठायें। दिल्ली में उसके चित्रों की शानदार प्रदर्शनी हुई। उस प्रदर्शनी को देखने के लिए जनता उमड़ पड़ी थी, भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही थी और चित्रा को लग रहा था, जैसे उसके सपने सच हो गये।

भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गयी। ''रुनी!'' कहकर वह भीड़ को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गयी। ''तुझे कब से चित्र देखने का शोक हो गया, रुनी!''

''अरे, ये बच्चे किसके है ?'' दो प्यारे से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस की होगी तो लड़की की कोई आठ।

''मेरे बच्चे हैं, और किसके ! ये तुम्हारी चित्रा मासी हैं, नमस्ते करो अपनी मासी को।'' अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़ी अदा से नमस्ते किया। पर चित्रा हैरान होकर कभी उनका और कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। वह सारी बात का कुछ तुक नहीं मिला पा रही थी। तभी अरुणा ने टोका, ''कैसी मासी है, प्यार तो कर।'' और चित्रा ने दोनों के सिर पर हाथ फेरा। प्यार का ज़रा-सा सहारा पाकर लड़की चित्रा की गोदी में जा चढ़ी। अरुणा ने कहा, ''तुम्हारी ये मासी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती हैं, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनायी हुई है।''

''सच ?'' आश्चर्य से बच्ची बोल पड़ी। ''तब तो मासी, तुम ज़रूर चित्रकला में पहला नम्बर लाती होगी। मैं भी पहला नम्बर लाती हूँ—तुम हमारे घर आओगी तो अपनी कॉपी दिखाऊँगी।'' बच्ची के स्वर में मुकाबले की भावना थी। चित्रा और अरुणा इस बात पर हँस पड़ीं।

''आप हमें सब तस्वीरें दिखाइये मासी, समझा-समझाकर।'' बच्चे ने फरमाइश की। चित्रा समझाती तो क्या, यों हीं तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिनी वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, ''यही वह तस्वीर है रुनी, जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धि दी।''

''ये बच्चे रो क्यों रहे हैं मासी ? तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने कहा।

''इनकी माँ मर गयी, देखती नहीं मरी पड़ी है। इतना भी नहीं समझती!'' बालक ने मौका पाते ही अपने बड़प्पन की छाप लगायी।

''ये सचमुच के बच्चे थे मासी ?''—बालिका ने पूछा।

''अरे, सचमुच के बच्चों को देख कर ही तो बनायी थी यह तस्वीर।''

''हाय राम! इनकी माँ मर गयी तो फिर इन बच्चों का क्या हुआ ?'' बालक ने पूछा।

''मासी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की— ''उस तस्वीर को और देर देखना बच्ची के लिए भारी पड़ रहा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। परिचय हुआ। साधारण बातचीत के बाद अरुणा ने दोनों बच्चों को उसके हवाले करते हुए कहा, ''आप ज़रा बच्चों को प्रदर्शनी दिखाइये, में चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।''

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें एकटक देखती रही, फिर पूछा, ''सच-सच बता रुनी! ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं।

''कहा तो, मेरे।'' अरुणा ने हँसते हुए कहा।

''अरे, बताओ ना! मुझे ही बेवकूफ बनाने चली है।''

एक पल रुककर अरुणा ने कहा, ''बता दूं ?'' और फिर उस भिखारिनी वाले चित्र के दोनों बच्चों पर अँगुली रखकर बोली, ''ये ही वे दोनों बच्चे हैं।''

''क्या ऽऽऽ!'' हैरानी से चित्रा की आँखें फैली-की-फैली रह गयी।

''क्या सोच रही हैं, चित्रा ?''

''कुछ नहीं—मैं...मैं सोच रही थी कि...''पर शब्द शायद उसके विचारों में ही खो गये।

शब्दार्थ—

खिझलाहट = खीझ से भरी हुई; **उल्लास** = हर्ष या खुशी; **घनचक्कर** = जंजाल; **कमबख्त** = बदकिस्मत, हतभाग्य; **प्रतीक** = प्रतिरूप, चित्र; **शोहरत** = प्रसिद्धि; **पण्डिता** = विदुषी; **प्रतियोगिता**

= मुकाबला; **छात्रावास** = हॉस्टल; **आश्चर्य** = हैरानी; **मेस** = हॉस्टल का भोजन कक्ष; **फरमाइश** = इच्छा; **वार्डन** = छात्रावास या हॉस्टल की प्रधान; **अमृता शेर गिल** = मशहूर चित्रकार; **निरक्षरता** = अनपढ़ता; **अनुमति** = आज्ञा

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) छात्रावास में रहने वाली दो सहेलियों के नाम क्या थे ?

(2) चित्रा कहानी के आरम्भ में अरुणा को क्यों जगाती है ?

(3) अरुणा चित्रा के चित्रों के बारे में क्या कहती है ?

(4) अरुणा छात्रावास में रात को देर से लौटती है तो शीला उसके बारे में क्या कहती है ?

(5) चित्रा के पिता जी ने पत्र में क्या लिखा था ?

(6) अरुणा बाढ़ पीड़ितों की सहायता करके स्वयंसेवकों के दल के साथ कितने दिनों बाद लौटीं ?

(7) विदेश में चित्रा के किस चित्र ने धूम मचायी थी ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन चार पंक्तियों में दीजिए—

(1) अरुणा के समाज सेवा के कार्यों के बारे में लिखिए।

(2) मरी हुई भिखारिन और उसके दोनों बच्चों को उसके सूखे शरीर से चिपक कर रोते देख-चित्रा ने क्या किया ?

(3) चित्रा की हॉस्टल से विदाई के समय अरुणा क्यों नहीं पहुँच सकी ?

(4) प्रदर्शनी में अरुणा के साथ कौन से बच्चे थे ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(1) दो कलाकार कहानी का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए।

(2) दो कलाकार के आधार पर अरुणा का चरित्र चित्रण करे।

(3) चित्रा एक मंझी हुई चित्रकार है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं ?

(4) 'दो कलाकार' कहानी के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझ कर इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य**
राह देखना	बेसब्री से इन्तज़ार करना	____________
रोब खाना	प्रभाव या हस्ती मानना	____________
आँखें छलछला आना	आँसू निकल आने	____________
पीठ थपथपाना	हौसला शाबाशी देना	____________
धूम मचना	प्रसिद्धि होना	____________

II. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखे :—

बेवकूफी	____________	धनी	____________
बंधन	____________	बीमार	____________
गुण	____________	आदर्श	____________
विदेश	____________	शोहरत	____________
निरक्षरता	____________	ज़िन्दगी	____________

निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(1) "ਮੇਰੇ ਬੱਚੇ ਹਨ, ਹੋਰ ਕਿਸਦੇ। ਇਹ ਤੁਹਾਡੀ ਚਿਤਰਾ ਮਾਸੀ ਹੈ, ਨਮਸਤੇ ਕਰੋ ਆਪਣੀ ਮਾਸੀ ਨੂੰ" ਅਰੁਨਾ ਨੇ ਹੁਕਮ ਦਿੱਤਾ।

(2) ਸੱਚ ? ਹੈਰਾਨੀ ਨਾਲ ਬੱਚੀ ਬੋਲ ਪਈ। ਫਿਰ ਤਾਂ ਮਾਸੀ, ਤੁਸੀ ਜ਼ਰੂਰ ਚਿੱਤਰਕਲਾ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾ ਨੰਬਰ ਲਿਆਉਂਦੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਮੈਂ ਵੀ ਪਹਿਲਾ ਨੰਬਰ ਲਿਆਉਂਦੀ ਹਾਂ।

(3) ਚਿੱਤਰਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ, ਚਿਤਰਾ ਨੂੰ ਵੇਖਣ ਆਈ ਸੀ। ਤੂੰ ਤਾਂ ਇਕਦਮ ਭੁੱਲ ਹੀ ਗਈ।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

(1) क्या आप ने भी अरुणा की तरह किसी ज़रूरतमंद या बेसहारा की मदद की है—अगर की है—तो उस प्रसंग को लिख कर अपने अध्यापक को दिखायें या कक्षा में बुनायें।

(2) स्कूल में हुई किसी चित्र प्रदर्शनी या प्रतियोगिता का अपने शब्दों में वर्णन करें।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

(1) सभी विद्यार्थी मिलकर अपनी चित्रकला की प्रदर्शनी का आयोजन करें। यह आयोजन दीवाली आदि त्योहार पर किया जा सकता है।

(2) अपने विद्यालय या शहर में आयोजित होने वाली चित्रकला को देखने जायें और चित्रकला से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त करें।

(3) समाज भलाई का काम करने वाले प्रसिद्ध चरित्र मदर टैरेसा, फलोरेंस नाइटगेल, स्वामी दयानन्द आदि के जीवन के बारे में पढ़ें तथा इंटरनेट पर सहायतार्थ कार्य करने वालों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

अमृता शेरगिल

(30 जनवरी 1913 – 5 दिसम्बर 1941)

पूरा नाम	:	अमृता शेरगिल
माता का नाम	:	मेरी एंटोनी गोट्समन (हंगरी मूल की यहूदी ओपेरा गायिका)
पिता का नाम	:	उमराव सिंह (सिक्ख, संस्कृत-फारसी के विद्वान)
जन्म स्थान	:	बुडापेस्ट (हंगरी)
मृत्यु स्थान	:	लाहौर
पति	:	डॉ॰ विक्टर इगान

नागरिकता	:	भारतीय
कर्मभूमि	:	भारत
कर्मक्षेत्र	:	चित्रकला
उपलब्धियाँ	:	(1) भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण ने 1976 और 1979 में भारत के नौ सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में शामिल किया। (2) इनकी चित्रकारी को दिल्ली की 'नेशनल गैलरी' में धरोहर के रूप में रखा गया है। (3) उनकी चित्रकारी 'यंग गर्ल्स' को पेरिस में 'एसोसिएशन आफ़ द ग्रैंड सैलून' तक पहुँचने का अवसर मिला। यहाँ तक पहुँचने वाली अमृता शेरगिल पहली सबसे कम आयु की एशियाई चित्रकार थीं।

****

पाठ-10

कला प्रकाश

लेखिका परिचय—

सिंधी की अग्रणी लेखिका कला प्रकाश का जन्म 2 जनवरी 1934 ई. में कराची (पाकिस्तान) में हुआ। इन्होंने एम.ए. तक शिक्षा ग्रहण की। ये महाराष्ट्र के उल्हासनगर के महाविद्यालय में प्राध्यापिका रहीं। बाद में दुबई के विद्यालय में प्रधानाचार्या रहीं। इनकी पहली कहानी 'दोही बेदोही' मुम्बई की एक साहित्यिक पत्रिका 'नई दुनिया' में प्रकाशित हुई। 1953 से लेकर अब तक ये सिंधी साहित्य की विभिन्न विधाओं का सृजन कर सिंधी साहित्य की सेवा कर रही हैं।

रचनाएँ :- इनका प्रकाशित रचनाओं में 'हिक दिल हज़ार अरमान', 'शीशे जी दिल', 'हिक सपनों सुखन जो', 'हयाती होतन री', 'वक्त विथियू बिछोटिपू', 'आरसी अ-आड़ो', 'प्यार', 'पखन जी प्रीत', 'समुद्र-ए-किनारे', 'औखा पंथ प्यार जा' (उपन्यास), 'मुर्क ए ममता', 'वारन में गुल', 'इन्तज़ार' (कहानी संग्रह), ममता जूं लहरूं (1963), ममता जूं लहरूं (2006), काव्य संग्रह हैं तथा जे-हिअन्रे मंझ हुरन (यात्रा-वृत्तांत) उल्लेखनीय हैं।

इनकी खास दिलचस्पी महिलाओं के मुद्दों पर रही है। सिंधी साहित्य में इनके अपूर्व योगदान के लिए इन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। 1961 में 'ममता जू लहरूं' काव्य संग्रह को अखिल भारतीय सिंधी बोली और साहित्य की ओर से बेस्ट बुक ऑफ दा ईयर अवार्ड , 1993 में महाराष्ट्र सिंधी अकादमी की ओर से तथा 1994 में 'आरसी अ-आड़ो' उपन्यास पर साहित्य अकादमी अवार्ड से नवाज़ा गया।

श्रीमती कला प्रकाश और श्री मोती प्रकाश दोनों एक ऐसे लेखक दम्पति हैं जिन्हें साहित्य अकादमी अवार्ड से अलंकृत किया गया है।

पाठ परिचय—

प्रस्तुत कहानी नर्स के सेवाभाव और ममत्व को रोगी के हित में प्रस्तुत करती है साथ ही एक बच्चे और माँ के मनोभावों को भी सशक्त ढंग से अभिव्यक्त करती है। नर्सिंग केवल एक व्यवसाय, पेशा या करियर नहीं है बल्कि मानवता की सेवा है। नर्स अस्पताल का अभिन्न हिस्सा होती है। नर्स का कर्तव्य रोगी का इलाज करना, उसकी देखभाल करना ही नहीं बल्कि उसका दायित्व रोगी की मन: स्थिति से परिचित होकर उस अनुरूप व्यवहार करना भी है। इस कहानी में अस्पताल में दाखिल

छह वर्षीय महेश को अपनी माँ के बिना अच्छा नहीं लगता। ऐसे में सिस्टर सूसान चिकित्सा और उपचार के अतिरिक्त अपनी बातचीत और व्यवहार से उसे माँ जैसी ममता, स्नेह और सुरक्षा प्रदान करती है। सिस्टर सूसान का व्यवहार और आत्मीयता महेश के लिए किसी भी औषधि से अधिक उपयोगी साबित होता है। सिस्टर सूसान महेश का विश्वास जीत उसका मनोबल बढ़ाती है और प्रतिकूल परिस्थिति को अनुकूल परिस्थिति में बदल देती है।

प्रस्तुत कहानी सिंधी से हिंदी में अनूदित है। यह अपनी भावभूमि, भाषा शैली और प्रस्तुति की दृष्टि से अनुपम है। कथानक में निरन्तर रोचकता है। भाषा और भावाभिव्यक्ति पात्रों की मनोवृति के अनुरूप है। सहज, सरल संवाद सहृदय पाठक को घटना क्रम से जोड़े रखते हैं।

नर्स

छह साल के नन्हे से बेटे को सरस्वती कैसे समझाए कि वह उसके पास अस्पताल में नहीं रह सकती। अस्पताल के क़ायदे से बेख़बर नन्हा तो माँ से रोता हुआ बस यही रट लगाए रहा, ''मत जाओ मम्मी, प्लीज़ तुम मत जाओ।''

सरस्वती एक लंबी साँस लेकर बेटे के पलंग के पास रखे स्टूल पर बैठ गई। बेटे के गालों पर हाथ फिराकर कहने लगी, ''देखो बेटे, वार्ड में कितने बच्चे हैं, किसी की मम्मी है उनके पास ?''

महेश अपने नन्हे तन को कसमसाता बोला, ''भले ही किसी की भी मम्मी न हो पर मैं आपको नहीं जाने दूँगा।''

सरस्वती परेशान हो गई। उसे दो बार कहा जा चुका है कि समय पूरा हो गया है, अब आप जाइए। जब वह चार बजे वार्ड में दाख़िल हुई तो महेश माँ को देखते ही तड़प-तड़पकर रो उठा था। उसे दिलासा देने के लिए ही बोलना पड़ा था कि अब वह घर नहीं जाएगी, पर जाना तो था ही। वार्ड में कुल बारह बच्चे थे। दूसरे सभी बच्चों के पास आए हुए मुलाकाती छह बजते-बजते जा चुके थे, और सवा छह बज जाने पर भी वह यहीं बैठी थी। सरस्वती की घूमती निगाहों ने देखा, सभी बच्चे महेश को ही ताक रहे हैं। कुछ देर पहले ही नौ नंबर बेड वाला बच्चा बताकर गया था कि ऑपरेशन के बाद होश में आते ही महेश मम्मी...मम्मी पुकारता ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया था। सरस्वती को ख़याल आया, नौ नंबर वाला बच्चा समझदार और दूसरे बच्चों से बड़ा, शायद 10 वर्ष का होगा। शायद वही उसकी मदद कर सके इसलिए उसके पास जाकर बोली, ''बेटे, तुम आकर महेश से थोड़ी देर बातें करो तो मैं यहाँ से खिसक जाऊँ।''

बच्चे ने कहा कि वह पहले भी महेश से दो-तीन बार बात करने की कोशिश कर चुका है पर वह उसकी कोई बात सुनने को तैयार ही नहीं। सरस्वती बोली, ''अब तुम उसे कोई कविता या कहानी सुनाना, तब तक मैं निकल जाऊँगी।''

बालक को महेश के पास छोड़ वह वार्ड से ऐसे निकली जैसे कोई चोर। जाते-जाते उसने महेश की पुकार सुनी ज़रूर परंतु जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाती अस्पताल के गेट के पास आ पहुँची। एक बार वार्ड नंबर 11 की तरफ देखा। उसकी आँखें कब बहने लगीं, उसे पता ही नहीं चल पाया था। आँखें पोंछती वह सड़क पर आ गई।

वार्ड में नौ नंबर वाला बच्चा महेश को समझाते हुए कह रहा था, ''चिल्लाओगे तो दर्द ज़्यादा होगा।'' पर महेश उसे सुना-अनसुना कर मम्मी-मम्मी की रट लगाता रहा। अचानक उसे याद आया

कि महेश की मम्मी ने कहानी सुनाने के लिए कहा था, सो फिर से बोला, ''तुम रोना बंद करो तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊँ।''

''मुझे नहीं सुननी कहानी।'' महेश तुर्शी से बोला। दो-चार मिनट बाद ही नौ नंबर वाला बच्चा वापिस अपने बिस्तर पर चला गया।

पौने सात बजे ख़ामोश वार्ड में केवल पाँच नंबर वाले महेश की हिचकी भरी मम्मी-मम्मी की रट सुनाई दे रही थी। इस वक्त अक्सर वायुमंडल में गहरी उदासी छाई रहती। चुपचाप बैठे हुए बच्चे वार्ड में आते-जाते डॉक्टर, नर्स, वार्ड ब्वॉय व मेहतरानी को देख शायद इसी सोच में डूब जाते कि फिर 24 घंटों के बाद अपने घरवालों का मुँह देख सकेंगे।

सात बजे मरींडा व मांजरेकर नाम की दो नर्सें वार्ड में आईं। मरीज़ों के बिस्तर ठीक करती आपस में धीरे-धीरे बातचीत करती हुई जैसे ही चार नंबर बिस्तर पर पहुँची तब मरींडा ने मांजरेकर से कहा, ''देखो, कैसे इस बच्चे ने अपना मुँह चादर में छुपा लिया है। रोज़ शाम को छह बजे जैसे ही इसके पिता मिलकर जाते हैं वैसे ही यह बच्चा चद्दर में मुँह छुपाकर रोना शुरू कर देता है।''

मांजरेकर बोली, ''इट्स सैड।''

चौथे नंबर का बिस्तर सही करती मरींडा बच्चे से बोली, ''देखो, तुम्हारा पलंग कितनी अच्छी जगह पर रखा हुआ है, खिड़की के पास। अरे, खिड़की के बाहर तो देखो, आसमान दिख रहा है।'' और उसने उसके मुँह से चद्दर हटा दी। बच्चे ने नैपकिन उठाकर आँखें पोंछीं और मरींडा का कहा मानकर खिड़की के बाहर देखने लगा।

पाँच नंबर का बिस्तर ठीक करते हुए मांजरेकर ने कहा, ''यह बच्चा तो मम्मी को पुकारता हुआ इतना रोया है कि मन ही विचलित हो गया। देखो न अभी भी कैसे काँप रहा है।''

मरींडा बोली, ''सच में, हमें रोज़ इन बच्चों के पास बैठकर प्यार और अपनेपन से बातें करनी चाहिए।''

मांजरेकर ने बालक की चद्दर ठीक कर उसे कंधों तक ढकते हुए कहा, ''यहाँ तो मरने तक की फ़ुर्सत नहीं, इन बच्चों के साथ किस वक़्त बैठकर बातें करें।''

मरींडा ने नैपकिन से बच्चे का मुँह साफ़ कर मुस्कुराते हुए पूछा, ''पानी पीओगे ?'' फिर उसके जवाब का इंतज़ार न कर पानी भरा गिलास जैसे ही उसकी तरफ़ बढ़ाया, महेश ने मुँह फेर लिया। मरींडा पानी का गिलास वापस रख, बच्चे के सिर पर हाथ फेर कर आगे बढ़ गई।

फिर वही शांति, जैसे वहाँ कोई न हो। केवल बारह पलंग और हर पलंग के पास एक छोटा-

सा कबर्ड, जिसे साइड टेबल की तरह भी काम में लिया जाता है। उस पर पानी का गिलास व जग। सब बच्चों के बिस्तर एक जैसे, हर बिस्तर के पायताने ब्राउन रंग का कंबल एक ही तरीक़े से लिपटा हुआ। कोई किसी से अलग नहीं, बारहों बच्चे ही एक जैसे लग रहे हैं।

आठ बजे सिस्टर सूसान ने वार्ड में आते ही कई बच्चों के चेहरे पर मुस्कान छा गई। एक और नौ नंबर वाले बच्चे तो उसके स्वागत के लिए बिस्तर पर उठकर बैठ गए। सिस्टर ने उनकी ओर हाथ हिलाया और बच्चों का टेंपरेचर देख रिकॉर्ड करती उन्हें दवा का डोज़ पिलाने लगी। सूसान जब नौ नंबर बेड के पास पहुँची तो वह बोला, ''सिस्टर जो पाँच नंबर है न, सारा दिन मम्मी मम्मी कहकर रोया है। मेरा तो जिस दिन ऑपरेशन हुआ था मैंने क्राइस्ट को याद किया था।''

सिस्टर उसे एक कैप्सूल और गोली देती बोली, ''पाँच नंबर अपनी माँ को ही क्राइस्ट समझता होगा।''

''माँ को कैसे क्राइस्ट समझता होगा ?''

सूसान ने आठ नंबर की तरफ बढ़ते हुए जवाब दिया, ''तुम्हें इस बात का जवाब बाद में दूँगी, तब तक गुड नाइट।''

सूसान पाँच नंबर बेड पर पहुँची। टेबल पर दवाइयों की ट्रे रख थर्मामीटर उठाते हुए महेश से बोली, ''कोई-कोई बच्चा बहुत तंग करता है। परंतु तुम अच्छे बच्चे लग रहे हो, तुम तंग नहीं करोगे।'' महेश ने उसकी तरफ देखा। टेंपरेचर रिकॉर्ड करते हुए सूसान ने पूछा ''छोटे बच्चे तुम्हारा नाम क्या है ?''

''महेश।''

''अरे वाह, महेश तो मेरे बेटे का भी नाम है।'' और चुटकी बजाते हुए बोली, ''वह अभी बहुत छोटा है, नन्हा-सा। पता है कितना-सा ?''

''कितना-सा ?'' महेश ने पूछा।

सूसान ने स्टूल पर बैठते हुए बताया, ''यह तुम्हारी बाँह है ना, बस तुम्हारी बाँह जितना। सिर्फ़ तीन महीने का है, मुझे इतना परेशान करता है कि बस....'' सूसान, महेश का हाथ अपने हाथ में लेकर बोली, ''अभी जब मैं अस्पताल आ रही थी न, तब इतना रोया, इतना रोया कि मैं तुम्हें क्या बताऊँ?'' महेश ने कुछ पूछना चाहा पर फिर चुपचाप सूसान को देखने लगा। सूसान ने उसे बताया, ''आखिर में पता है मैंने क्या किया ? उसे आया की गोदी में देकर चली आई। अब शायद चुप हो गया होगा। आया उससे खेलती है ना। या फिर गाना गाकर सुनाती है तो वह खुशी से अपने हाथ-पैर ऐसे ऊपर-नीचे करने लगता है, जैसे डांस कर रहा हो।''

महेश छोटे बबलू की कल्पना करते हुए पूछ बैठा, ''वह और क्या करता है ?''

सूसान महेश को सूप पिलाती हुई बोली, ''बोलना तो उसे आता ही नहीं है, फिर भी कैसी-कैसी तो आवाज़ें निकालता है, अगूं, अंगू... गूं, गूं....और यूँ गाल फुलाता है।'' सूसान अपने गालों को फुलाती बबलू जैसी आवाज़ें निकालने की कोशिश करने लगी। महेश को हँसी आ गई। सूसान उसे दवाई पिलाती हुई बोली, ''मैं तुम्हें अपने शैतान बबलू की बहुत-सी बातें बताऊँगी लेकिन बाद में, अभी तो मुझे काम है ना। कोई भी काम हो तो बेल बजाकर मुझे बुला लेना जैसे घर में मम्मी को बुलाते हो। अस्पताल में नर्स ही मम्मी होती है।''

दूसरे दिन शाम के चार बजते ही सरस्वती अस्पताल के गेट तक पहुँच गई। कल बेटे का ऑपरेशन सफल हुआ, इसका उसे संतोष था परंतु बेटे ने रात कैसे बिताई होगी, यह सोचते ही घबरा गई। कल उसे रोता छोड़कर आना पड़ा था। आज उसे किस तरह छोड़कर आ पाएगी, सोचते ही उसके माथे पर पसीना निकल आया। बेटे के पलंग तक पहुँचते-पहुँचते सोचों ने समय को लंबा कर दिया। महेश को चूमते हुए बोली, ''बेटा कैसा है तू ?''

''अरे मम्मी, तुम आ गई ?'' महेश ने माँ के गले में बाँहें डालते हुए पूछा, ''पापा कब आएँगे?''

''आ जाएँगे थोड़ी देर में।''

''मम्मी जब तुम मेरे पास आ रही थीं तो मोना रो रही थी क्या ?'' महेश ने छोटी बहन के लिए पूछा।

सरस्वती ने लंबी साँस छोड़ते हुए कहा, ''नहीं नहीं, उसे पास वाले राजू के घर छोड़कर आई हूँ। वो उसे खेल खिलाते हैं ना।''

''हमारी मोना अच्छी है। तुम उसे छोड़कर आई। तब भी नहीं रोई परंतु सिस्टर सूसान है ना, उसका बबलू बहुत ही शैतान है। वह बेचारी जब अस्पताल आती है तो बहुत रोता है।''

सरस्वती के दिल पर सिस्टर सूसान का नाम छप-सा गया। उसने महेश से पूछा, ''तुम्हें किसने बताया कि सिस्टर सूसान का बबलू शैतान है ?''

''सिस्टर सूसा ने बतलाया।''

''किस वक़्त ?''

''रात को।''

''बेटे तुमको रात में नींद आई थी ?''

''हाँ।'' महेश ख़ुशी से बोला, ''सिस्टर सूसान ने दूध पिलाया फिर कविता सुनाई। मम्मी उनकी आवाज़ इतनी प्यारी है.....''

''किसकी, सिस्टर सूसान की ?''

''हाँ। और मम्मी उनके बबलू का नाम भी महेश है। और मम्मी, सिस्टर सूसान पता है क्या करती है, बबलू के बिस्तर के ऊपर जो डंडा है, उसमें खिलौने बाँध देती है।''

सरस्वती के दो घंटे कैसे निकल गए उसे पता ही नहीं चला। छह बजे जब मुलाक़ाती जाने लगे तब उसका मन घबराने लगा। स्टूल से उठते हुए बेटे को प्यार करती बोली, ''बेटे अब मैं जा रही हूँ, छह बज गए हैं न।''

''हाँ मम्मी, जल्दी आओ। मोना को राजू के घर से जल्दी ले आओ।'' आज बेटा घर जाने की इजाज़त यूँ ख़ुशी-ख़ुशी देगा, उसने सपने में भी नहीं सोचा था। घर जाते-जाते वह असंभव को संभव करने वाली सिस्टर सूसान की कल्पना करने लगी कि कैसी होगी सूसान नाम की सोन परी जिसने यह जादू कर दिखाया।

13 दिन बाद महेश को अस्पताल से छुट्टी मिली। घर आकर वह अपनी छोटी बहन मोना और पड़ोस के दोस्तों से ऐसे मिला जैसे वर्षों बाद घर लौटा हो। सारा दिन ख़ुशी से बिताते हुए वह शाम होते न होते भूल चुका था कि 13 दिन अस्पताल में बिताकर आ रहा है। परंतु सरस्वती ना तो अस्पताल को भूली थी और ना ही सिस्टर सूसान को। सुबह बेटे को घर लाते समय उसने पता लगा लिया था कि आज सिस्टर सुसान की ड्यूटी शाम चार बजे से है। शाम के पाँच बजते ही वह अस्पताल जाने के लिए तैयार हो गई। उसके हाथों में सिस्टर सूसान के लिए गुलदस्ता व उसके बबलू

के लिए शानदार गिफ़्ट था। अस्पताल जाते हुए वह अजीब-सी ख़ुशी महसूस कर रही थी। बारह दिन से जिस स्त्री के प्रति उसका दिल शुक्रगुज़ार था, आज उसके सामने पहुँच अपने मन की भावना कैसे व्यक्त करेगी ? उससे क्या बोलेगी, ''मेहरबानी।'' नहीं नहीं बोलेगी, ''तुम्हारी ज़िंदगी हमेशा रोशन रहे।'' अरे नहीं उससे कहेगी, ''तुम बहारों की रुत हो। तुम्हारे आँगन में हमेशा फूल खिलते रहें....''

और साढ़े पाँच बजे सरस्वती पहुँच गई सिस्टर सूसान के पास। अपना परिचय देती बोली, ''मैं तुम्हें कभी भी नहीं भूल पाऊँगी, कभी भी नहीं।''

सूसान ने ज़ोर से ठहाका लगाते हुए कहा, ''मुझे जल्दी से भूल जाइएगा, नहीं तो आपके पति को मुझसे ईर्ष्या होने लगेगी। पति बहुत ही ईर्ष्यालु होते हैं।''

सरस्वती की भी हँसी छूट गई। उसने सिस्टर को गुलदस्ता और उसके बबलू के लिए गिफ़्ट पेश किया। सिस्टर सूसान इतना हँसी, इतना हँसी कि पास में बैठी मैट्रेन ने उसे तीखी नज़रों से देखते हुए वार्निंग दे डाली कि अस्पताल में वह इतना ज़ोर से कैसे हँस सकती है ? सूसान ने भी अपनी भूल महसूस करते हुए मैट्रेन से माफ़ी माँगी और सरस्वती से बोली, ''रंग-बिरंगे सुंदर फूलों वाला यह गुलदस्ता तो मैं ख़ुशी से ले रही हूँ। बाक़ी यह गिफ़्ट किसी ऐसी स्त्री को दे दीजिए, जिसका कोई बबलू हो। मेरा तो कोई बबलू है ही नहीं, मैंने तो अभी शादी ही नहीं की है।''

शब्दार्थ—

कायदा = नियम ; **विचलित** = अस्थिर, चंचल; **बेख़बर** = अनजान; **फ़ुर्सत** = अवकाश; **पायताने** = पाँयता, वह दिशा जिधर पैर फैला कर सोया जाए; **मुलाक़ाती** = परिचित; **इज़ाजत** = अनुमति, आज्ञा; **ऑपरेशन** = शल्यक्रिया, चीरफाड़; **शुक्रगुज़ार** = एहसान मानने वाला; **अनसुना** = जो सुना न गया हो; **ईर्ष्या** = जलन; **तुर्शी** = तीखापन, खट्टास।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) महेश कितने साल का था ?

(2) महेश कहाँ दाखिल था ?

(3) अस्पताल में मुलाकातियों के मिलने का समय क्या था ?

(4) वार्ड में कुल कितने बच्चे थे ?

(5) सात बजे कौन सी दो नर्सें वार्ड में आईं ?

(6) महेश किस सिस्टर से घुल मिल गया था ?

(7) महेश को अस्पताल से कितने दिन बाद छुट्टी मिली ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए—

(1) सरस्वती की परेशानी का क्या कारण था ?

(2) सरस्वती ने नौ नम्बर बैड वाले बच्चे से क्या मदद मांगी ?

(3) सिस्टर सूसान ने महेश को अपने बेटे के बारे में क्या बताया ?

(4) दूसरे दिन महेश ने माँ को घर जाने की इज़ाज़त खुशी-खुशी कैसे दे दी ?

(5) सरस्वती द्वारा सिस्टर सूसान को गुलदस्ता और उसके बबलू के लिए गिफ्ट पेश करने पर सिस्टर सूसान ने क्या कहा ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए—

(1) सिस्टर सूसान का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में लिखिए।

(2) नर्स कहानी का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित पंजाबी गद्याशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

(1) ਅੱਠ ਵਜੇ ਸਿਸਟਰ ਸੂਸਾਨ ਦੇ ਵਾਰਡ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦੇ ਹੀ ਕਈ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਮੁਸਕਾਨ ਛਾ ਗਈ। ਇਕ ਤੇ ਨੌਂ ਨੰਬਰ ਵਾਲੇ ਬੱਚੇ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਸੁਆਗਤ ਲਈ ਬਿਸਤਰ ਤੋਂ ਉੱਠ ਕੇ ਬੈਠ ਗਏ। ਸਿਸਟਰ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਲ ਹੱਥ ਹਿਲਾਇਆ।

(2) ਰੰਗ ਬਿਰੰਗੇ ਸੁੰਦਰ ਫੁੱਲਾਂ ਵਾਲਾ ਇਹ ਗੁਲਦਸਤਾ ਤਾਂ ਮੈਂ ਖੁਸ਼ੀ ਨਾਲ ਲੈ ਰਹੀ ਹਾਂ ਬਾਕੀ ਇਹ ਗਿਫਟ ਕਿਸੀ ਇਹੋ ਜਿਹੀ ਔਰਤ ਨੂੰ ਦੇ ਦੇਣਾ ਜਿਸਦਾ ਕੋਈ ਬਬਲੂ ਹੋਏ। ਮੇਰਾ ਤਾਂ ਕੋਈ ਬਬਲੂ ਹੈ ਹੀ ਨਹੀਂ। ਮੈਂ ਤਾਂ ਹਾਲੇ ਤਕ ਸ਼ਾਦੀ ਹੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਹੈ।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

(1) आप अपने जीवन में क्या बनना चाहेंगे ? इस विषय पर कक्षा में सभी विद्यार्थी चर्चा कीजिए।

(2) 'नर्सिंग क्षेत्र के अतिरिक्त और किस-किस क्षेत्र में मानव सेवा के भाव ज़िंदा है— कक्षा में इसकी चर्चा कीजिए।

(3) अस्पताल के किसी वार्ड का वर्णन कीजिए।

(4) 'नर्स होना चुनौतीपूर्ण वचनबद्धता है'—इस विषय पर अनुच्छेद लिखिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

(1) 12 मई को अन्तर्राष्ट्रीय नर्स दिवस और 1 जुलाई को डॉक्टर्स-डे पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। टी. वी. पर इन कार्यक्रमों को देखिए और समाचार पत्रों से इसके बारे में जानकारी जुटाइए।

(2) विद्यालय में नर्सिंग सेवा-भाव पर कोई नाट्य प्रस्तुति करें।

(3) सेवा-भाव से दुनिया जीतने वाली मदर टेरेसा के चित्रों की एलबम तैयार कीजिए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

नर्सिंग—

रोगी की सेवा शुश्रुषा को नर्सिंग कहते हैं। अंग्रेज़ी के नर्स शब्द का अर्थ है 'पोषण'। नर्स उसे कहते हैं जो शिशु का पोषण करती है। माँ भी एक प्रकार से नर्स है।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल—

नोबल नर्सिंग सेवा की शुरूआत करने वाली फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जन्म दिवस पर हर वर्ष दुनिया भर में 12 मई को अन्तर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के रूप में मनाया जाता है।

वर्तमान युग में अस्पताल के प्रबंधन और रोगियों के स्वास्थ्य लाभ में नर्सों का विशेष महत्व है। नर्सों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, लेकिन 19वीं शताब्दी के मध्य तक की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत थी। उस समय नर्स का कार्य बहुत घटिया समझा जाता था। इस पेशे को सम्मान दिलाने का श्रेय ब्रिटेन की फ्लोरेंस नाइटिंगेल को जाता है। इनका जन्म 12 मई, 1820 को एक समृद्ध और उच्च वर्गीय ब्रिटिश परिवार में हुआ था। उस युग के ब्रिटिश वैभवपूर्ण जीवन के प्रति उन्हें कोई आकर्षण नहीं था और दु:खी मानवता के लिए उनके हृदय में अपार संवेदना थी। उन्होंने परिवार के विरोध के बावजूद सेवा का मार्ग चुना। फ्लोरेंस का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्रीमिया के युद्ध में रहा। अक्टूबर 1854 में उन्होंने 38 स्त्रियों का एक दल घायलों की सेवा के लिए तुर्की भेजा। वे रात-रात भर जगाकर एक लालटेन के सहारे घायलों की सेवा करती थी, इसलिए उन्हें लेडी विद दि लैम्प की उपाधि से सम्मानित किया गया। उनकी प्रेरणा से ही नर्सिंग क्षेत्र में महिलाओं को आने की प्रेरणा मिली थी।

मदर टेरेसा—

मदर टेरेसा कैथोलिक नन थी जिनके पास भारतीय नागरिकता थी। उन्होंने 1950 में कोलकाता में मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी की स्थापना की। उन्होंने 45 सालों तक गरीब, बीमार, अनाथ और मरते हुए लोगों की मदद की और साथ ही चेरिटी के मिशनरीज़ के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया। 1970 तक वे गरीबों और असहायों के लिए अपने मानवीय कार्यों के लिए प्रसिद्ध हो गईं। दया व सेवा की प्रतिमूर्ति मदर टेरेसा को नोबेल शांति पुरस्कार और भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया।

****

(लघुकथा भाग)

पाठ–11 (i)

श्याम सुन्दर अग्रवाल

लेखक परिचय—

श्याम सुन्दर अग्रवाल का जन्म 8 फरवरी 1950 ई. मे कोटकपूरा (पंजाब) में हुआ। पंजाब से बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आप 1973 से 1998 तक पंजाब लोक निर्माण विभाग में कार्यरत रहे। नौकरी के दौरान से ही आप हिंदी व पंजाबी लघुकथा लेखन व बाल–साहित्य लेखन भी कर रहे हैं। 'नंगे लोकां दा फिक्र' तथा 'मारूथल दे वासी' आपके लघुकथा संग्रह हैं। इनके अतिरिक्त आपने संपादन व अनुवाद कार्य भी किया है। आप 1988 से निरन्तर पंजाबी त्रैमासिक पत्रिका मिन्नी का संपादन कर रहे हैं।

पाठ परिचय—

प्रस्तुत लघुकथा में परिवार में बुजुर्गों की देख रेख में सुखद व्यवहार की अनुगूंज सुनाई देती है। साथ ही बुजुर्गों की स्थिति को बेहतर बनाने और समाज में विघटित हो रहे मूल्यों को पुन: स्थापित करने की दिशा में यह उचित कदम है। कथा की मुख्य पात्र बुजुर्ग बसंती उलझन भरे मन से बेटे के साथ शहर आती है कि पता नहीं उसके साथ कैसा व्यवहार होगा ? उसे रहने के लिए कौन सा कमरा मिलेगा किन्तु बेटे द्वारा सजा संवरा कमरा दिखाने पर वह हैरान रह जाती है। इस प्रकार यह लघुकथा समाज की मानसिकता में बदलाव लाने में योगदान देती है और सकारात्मक, सुखद और सुंदर संदेश की संवाहक बनती है। निराशा से आशा का सफर बहुत ही छोटी सी कालविधि में घटित होता है। कहानी की भाषा और भावाभिव्यक्ति पात्रों की मनोवृत्ति के अनुरूप है।

माँ का कमरा

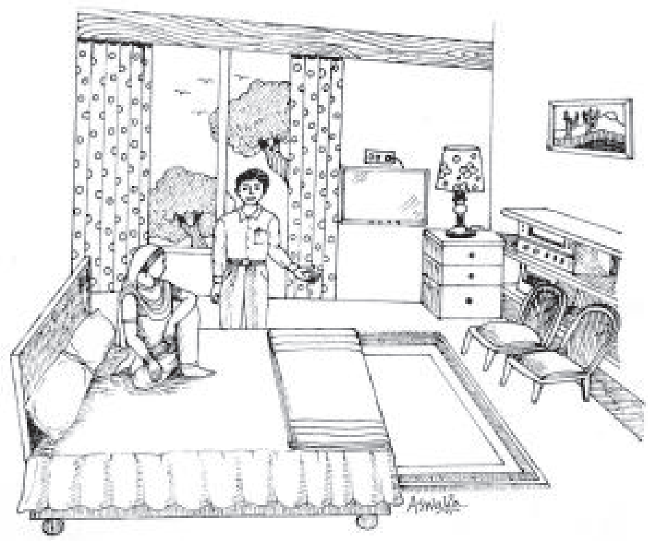

छोटे-से पुश्तैनी मकान में रह रही बुजुर्ग बसंती को दूर शहर में रहते बेटे का पत्र मिला-माँ मेरी तरक्की हो गई है। कम्पनी की ओर से मुझे बहुत बड़ी कोठी मिली है रहने को। अब तो तुम्हें मेरे पास शहर में आकर रहना ही होगा। यहाँ तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। पड़ोसन रोशमा को पता चला तो वह बोली, ''अरी, रहने दे शहर जाने को। शहर में बहू-बेटे के पास रहकर बहुत दुर्गति होती है। वह बचनी गई थी न अब पछता रही है, रोती है। नौकरों वाला कमरा दिया है रहने को और नौकरानी की तरह ही रखते हैं। न वक्त से रोटी, न चाय। कुत्ते से भी बुरी जून है।'' अगले दिन बेटा कार लेकर आ गया। बेटे की ज़िद के आगे बसंती की एक न चली। 'जो होगा देखा जावेगा' की सोच के साथ बसंती अपने थोड़े-से सामान के साथ कार में बैठ गई। लंबे सफर के बाद कार एक बड़ी कोठी के सामने जाकर रुकी। ''एक ज़रूरी काम है माँ, मुझे अभी जाना होगा।'' कह, बेटा माँ को नौकर के हवाले कर गया। बहू पहले ही काम पर जा चुकी थी और बच्चे स्कूल। बसंती कोठी देखने लगी। तीन कमरों में डबल-बैड लगे थे। एक कमरे में बहुत बढ़िया सोफा-सैट था। एक कमरा बहू-बेटे का होगा, दूसरा बच्चों का और तीसरा मेहमानों के लिए, उसने सोचा। पिछवाड़े में नौकरों के लिए बने कमरे भी वह देख आई। कमरे छोटे थे, पर ठीक थे। उसने सोचा, उसकी गुज़र हो जाएगी। बस बहू-बेटा और बच्चे प्यार से बोल लें और दो वक्त की रोटी मिल जाए। उसे और क्या चाहिए। नौकर ने एक बार उसका सामान बरामदे के साथ वाले कमरे में टिका दिया। कमरा क्या था, स्वर्ग लगता था-डबल-बैड बिछा था, गुस्लखाना भी साथ था। टी.वी. भी पड़ा था और टेपरिकार्डर भी। दो कुर्सियाँ

भी पड़ी थीं। बसंती सोचने लगी- काश! उसे भी कभी ऐसे कमरे में रहने का मौका मिलता। वह डरती-डरती बैड पर लेट गई। बहुत नर्म गद्दे थे। उसे एक लोककथा की नौकरानी की तरह नींद ही न आ जाए और बहु आकर उसे डाँटे, सोचकर वह उठ खड़ी हुई। शाम को जब बेटा घर आया तो बसंती बोली, ''बेटा, मेरा सामान मेरे कमरे में रखवा देता,'' बेटा हैरान हुआ, ''माँ, तेरा सामान तेरे कमरे में ही तो रखा है नौकर ने।'' बसंती आश्चर्यचकित रह गई, ''मेरा कमरा ! यह मेरा कमरा!! डबल-बैड वाला..... !'' ''हाँ माँ, जब दीदी आती है तो तेरे पास सोना ही पसंद करती है। और तेरे पोता-पोती भी सो जाया करेंगे तेरे साथ। तू टी.वी. देख, भजन सुन। कुछ और चाहिए तो बेझिझक बता देना।'' उसे आलिंगन में ले बेटे ने कहा तो बसंती की आँखों में आँसू आ गए।

शब्दार्थ—

पुश्तैनी = जो कई पीढ़ियों से चला आ रहा हो ; **जून** = दशा; **बुज़ुर्ग** = वृद्ध; **आश्चर्यचकित** = हैरान; **तरक्की** = पदोन्नति; **बेझिझक** = बिना झिझक; **दुर्गति** = दुर्दशा; **आलिंगन** = गले लगाना

अभ्यास

विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) बुज़ुर्ग बसंती कहाँ रह रही थी ?

(2) बुज़ुर्ग बसंती को किसका पत्र मिला ?

(3) बसंती की पड़ोसन कौन थी ?

(4) बसंती बेटे के साथ कहाँ आई ?

(5) कोठी में कितने कमरे थे ?

(6) नौकर ने बसंती का सामान कहाँ रखा ?

(7) बसंती के कमरे में कौन-कौन सा सामान था ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए—

(1) बेटे ने पत्र में अपनी माँ बसंती को क्या लिखा ?

(2) पड़ोसन रेशमा ने बसंती को क्या समझाया ?

(3) बसंती क्या सोचकर बेटे के साथ शहर आई ?

(4) बसंती की आँखों में आँसू क्यों आ गए ?

(5) 'माँ का कमरा' कहानी का उद्देश्य क्या है ?

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित पंजाबी गद्याश का हिंदी में अनुवाद कीजिए—

ਛੋਟੇ ਜਿਹੇ ਪੁਸ਼ਤੈਨੀ ਮਕਾਨ ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਰਹੀ ਬਜ਼ੁਰਗ ਬਸੰਤੀ ਨੂੰ ਦੂਰ ਸ਼ਹਿਰ ਰਹਿ ਰਹੇ ਪੁੱਤਰ ਦਾ ਪੱਤਰ ਮਿਲਿਆ—"ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਤਰੱਕੀ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਕੰਪਨੀ ਵੱਲੋਂ ਮੈਨੂੰ ਰਹਿਣ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਵੱਡੀ ਕੋਠੀ ਮਿਲੀ ਹੈ, ਹੁਣ ਤਾਂ ਤੈਨੂੰ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਰਹਿਣਾ ਹੀ ਪਵੇਗਾ।

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

(1) आप अपने घर या आस पड़ोस में बुज़ुर्गों की बेहतरी के लिए क्या-क्या करेंगे?

(2) आप घर में अपनी माँ की मदद किस प्रकार करते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

(1) पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली लघुकथाएं पढ़िए।

(2) विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में लघुकथा लिखने का प्रयास कीजिए।

(3) 'माँ' पर कविताओं का संकलन कीजिए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

हमें हमेशा सकारात्मक सोच के साथ जीवन जीना चाहिए। इससे जीने के लिए नयी ऊर्जा मिलती है जबकि नकारात्मक सोच से हमारे शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। नकारात्मक सोच से जहाँ अपने व्यक्तित्व का ह्रास होता है वहीं सामाजिक सम्बन्धों में भी गिरावट आती है। यदि बसंती अपनी पड़ोसन की बात मान लेती और अपने बेटे के साथ न जाती तो क्या उसका अपने बेटे की अच्छाई से परिचय हो पाता? कदापि नहीं। नि:संदेह उसके मन में नकारात्मक विचार भी होंगे और सकारात्मक विचार भी, किन्तु सकारात्मक विचारों ने नकारात्मक विचारों पर विजय पा ली और वह अपने बेटे के साथ चली गयी। और अन्तत: उसे सुख की अनुभूति हुई। अत: हमें जीवन में हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

****

(ii)
उषा.आर. शर्मा

लेखिका परिचय—

उषा.आर. शर्मा एक संवेदनशील महिला साहित्यकार हैं। इनका जन्म 24 मार्च 1953 में मुंबई में हुआ। आपकी विद्यालय स्तर की शिक्षा भारत के विभिन्न प्रान्तों में हुई। इसके पश्चात आपने पंजाब विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र व लोकप्रशासन में एम. ए. (स्नातकोत्तर) की परीक्षा पास की। आपकी रुचि शिक्षा में विशेष तौर पर थी। आपने शिक्षा विषय में भी स्नातक स्तर की शिक्षा हासिल की। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) की सदस्या के रूप में कई वर्षों तक कार्य करने के उपरान्त आप शिक्षा व लेखन के क्षेत्र में मार्गदर्शन कर रही हैं।

साहित्य व कला में आपकी रुचि युवावस्था से ही थी। आपने संगीत, नाटक व रंगमंच के कार्यक्रमों में भाग लिया। साहित्य लेखन में कविता, कहानी, लघुकथा व संपादन में आपने प्रशंसनीय कार्य किया। आपकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

काव्य-संग्रह : 'एक वर्ग आकाश', 'पिघलती साँकलें', 'भोजपत्रों के बीच', 'दोस्ती हवाओं से' 'परिन्दे धूप के' 'बूंद बूंद अहसास' 'सूरज मेरा तुम्हारा', और 'बीहड़ के फूल' (सभी काव्य संग्रह) 'हाशिए पर बिन्दु' 'क्यों न कहूँ।

कहानी संग्रह : 'कहानी संग्रह आपके 'काव्य संग्रह' 'कथा संग्रह' पर शोध कार्य भी हो चुका है।

आपके साहित्यिक योगदान के लिए विभिन्न 'साहित्यिक संगठनों' व प्रशासन द्वारा आपको कई बार पुरस्कृत किया गया। आपको पंजाबी भाषा विभाग की ओर से 'ज्ञानी संत सिंह पुरस्कार' व 'सुदर्शन पुरस्कार' तथा पंजाब हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा 'वीरेन्द्र सारस्वत सम्मान' दिया गया। इसके अतिरिक्त आपको 'बलराज साहनी राष्ट्रीय सम्मान' तथा पंकस अकादमी द्वारा 'अकादमी अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

पाठ परिचय

उषा. आर. शर्मा द्वारा रचित लघुकथा 'अहसास' शारीरिक चुनौतियों का सामना करने वाले बच्चों में आत्म विश्वास जगाने वाली एक प्रेरणादायक लघुकथा है। दिवाकर ऐसा ही एक बच्चा है। किसी दुर्घटना वश उसकी एक टांग चली जाती है। वह पहले पहल अपने सहपाठियों की अपेक्षा

स्वयं में अधूरापन अनुभव करता है, लेकिन अवसर आने पर वह अपनी सूझ–बूझ और बहादुरी से अपने सहपाठियों को विकट परिस्थिति से छुटकारा दिलाता है। स्कूल प्राचार्य द्वारा पुरस्कृत होने पर उसे अहसास होता है कि वह किसी से कम नहीं। लेखिका बतलाना चाहती है कि शारीरिक चुनौतियों का सामना करने वाले बच्चे किसी से कम नहीं है। अगर किसी कारण वश उनमें कुछ कमी आ गई है तो ईश्वर ने उन्हें कुछ खास भी दिया है जो दूसरों के पास नहीं है। बस उस 'खास' के अहसास की ज़रूरत है। इसके साथ ही लेखिका बतलाना चाहती है कि अध्यापकों का सहयोग व सौहार्दपूर्ण व्यवहार इस प्रकार के बच्चों को बहुत मदद देता है।

लघुकथा के लघु कलेवर के बावजूद भी कहानी में कहानी तत्व विद्यमान है—गति है कौतूहल भी है। लघुकथा का नामकरण 'अहसास' संक्षिप्त व सार्थक है। भाषा साधारण है। दिवाकर का चरित्र भी उभारने का अच्छा प्रयास है। कहानी का अन्त सुखद व प्रेरणादायक है।

अहसास

एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण के लिए स्कूल की बस रवाना हो चुकी थी। परीक्षा के फौरन बाद के इस कार्यक्रम ने सभी को राहत दी थी। छात्र-छात्राएँ मस्ती से झूम रहे थे। छात्राएँ अन्ताक्षरी खेल रही थीं। छात्र तालियाँ बजाकर उनका हौसला बढ़ा रहे थे, लेकिन दिवाकर खामोश बैठा था। कभी वह खिड़की के बाहर के वृक्षों को देखता और कभी दूर तक फैले आसमां को। उसने अभी कुछ दिन पहले ही तो दाखिला लिया था। पापा की ट्रांसफर के बाद वह गाँव के स्कूल से यहाँ आ गया था। नई जगह नए लोग। कई बार तो उसे वैशाखियों से यहाँ चलने में भी दिक्कत आती थी। परन्तु कक्षा अध्यापक नीरू मैडम के स्नेहपूर्ण व्यवहार ने उसे बहुत हिम्मत दी थी।

बस रुक चुकी थी। रोज़ गार्डन आ गया था—छात्र-छात्राएँ उछलते कूदते पार्क में पहुँच गए थे। चारों तरफ खिले फूल, वृक्षों के झुण्ड तथा हरी भरी घास थी। बीच में रंग बिरंगे झूले थे। अध्यापिका छात्रों को रिफ्रेशमेंट दे रही थी। दिवाकर भी एक बैंच पर बैठ गया था। उसने अपनी बैशाखियाँ एक ओर रख दी थीं— जबकि अन्य छात्र-छात्राएं झूलों का आनन्द ले रहे थे। सभी को उछलते कूदते देख उसे भी वे दिन याद आ रहे थे-जब दो वर्ष पहले वह बड़ी मौसी के पास दिल्ली गया था तो फन सिटी में कितनी मस्ती की थी। पर पिछले साल हुई दुर्घटना ने उसकी एक टाँग ले ली थी। वह कितना अधूरा था। उसे लगता कि वह कक्षा के बाकी लड़कों के समान नहीं है शायद। वह अभी सोच ही रहा था कि नीरू मैडम ने सभी को वहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए बुला लिया। लड़के और लड़कियाँ वृक्षों के नीचे घास पर ही अपने-अपने समूह में बैठ गए थे। दिवाकर सामने बैंच पर बैठा था। कार्यक्रम चल रहा था। अचानक एक साँप वृक्षों के बीच में से रेंगता हुआ इस ओर आ गया था। अपने सामने इतने बड़े साँप को देखकर छात्र-छात्राओं के चेहरे का रंग उड़ गया। नीरू मैडम भी वहीं की वहीं रह गई। साँप फन उठाकर फुंकार रहा था। दिवाकर ने देखा तो घबराया नहीं। वह गाँव में इस तरह के जानवरों को खेतों में कई बार देख चुका था। वह चीते की सी फुर्ती के साथ वहाँ पहुँच गया। उसकी निगाहें साँप पर थी। फिर अचानक उसने अपनी बैसाखी से साँप को उठाकर दूर फेंक दिया। छात्र छात्राओं में जैसे जान आ गई। नीरू मैडम ने दिवाकर की पीठ थपथपाते हुए कहा—'दिवाकर। तुमने आज हम सब की जान बचाई है। तुमने तो कमाल कर दिया। तुम वाकई बहादुर हो—असली हीरो हो।''

अगले दिन प्रात:कालीन सभा में दिवाकर को उसकी सूझ-बूझ व बहादुरी के लिए प्राचार्य महोदय ने सम्मानित किया। तालियों की गड़गड़ाहट में उसे भी अपनी पूर्णता का अहसास हो रहा था।

शब्दार्थ

शैक्षिक भ्रमण = शिक्षा सम्बन्धी भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का जाना; **अन्ताक्षरी** = एक प्रकार का मनोरंजक खेल जिसमें दो दल बन जाते हैं। पहले दल के द्वारा गाए गीत या कविता के अन्तिम अक्षर पर दूसरे दल के द्वारा गीत या कविता गाई जाती है। **ट्रॉसफर** = तबदीली; **रिफ्रैंशमेंट** = खाने के लिए कुछ देना; **चेहरे का रंग उड़ना** = डर जाना; **पीठ थपथपाना** = शाबाशी देना; **अहसास** = महसूस करना।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) दिवाकर की नए स्कूल में किसने मदद की ?

(2) स्कूल बस पर छात्र-छात्राएं कहाँ जा रहे थे ?

(3) छात्राएँ बस में क्या कर रही थीं ?

(4) दिवाकर बस में बैठा क्या देख रहा था ?

(5) दिवाकर को अपने मन में अधूरेपन का अहसास क्यों होता था ?

(6) कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राएं क्या देखकर डर गए ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए—

(1) दिवाकर बैंच पर बैठकर क्या सोच रहा था ?

(2) साँप को देखकर दिवाकर क्यों नहीं डरा ?

(3) दिवाकर ने अचानक साँप को सामने देखकर क्या किया ?

(4) दिवाकर को क्यों पुरस्कृत किया गया ?

(5) लघुकथा 'अहसास' का उद्‌देश्य क्या है ?

(6) 'अहसास' नामकरण की सार्थकता स्पष्ट कीजिए?

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण शब्द बनाएँ :

खामोश	=	____________	व्यवहार	=	____________
सम्मान	=	____________	बहादुरी	=	____________
रंग	=	____________	हिम्मत	=	____________

II. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य**
चेहरे का रंग उड़ जाना	डर जाना	____________
पीठ थपथपाना	शाबास देना	____________
जान में जान आ जाना	राहत महसूस करना	____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

(1) आपने अपने सहपाठी की किसी प्रकार की मदद की हो तो अपने शब्दों में लिखिए।

(2) अपने स्कूल के किसी शैक्षिक भ्रमण का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

(1) 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर बहादुर बच्चों का वृत्ताँत इंटरनेट पर देखें—उनकी बहादुरी के किस्सों को पढ़े और अपने मित्रों को सुनाएं।

(2) शारीरिक चुनौतियों का सामना करने वाले उन महान चरित्रों की सूची बनाएं—जिन्होंने अपने आत्म विश्वास के बल पर चुनौतियों का सामना करते हुए अपने जीवन के मकसद को हासिल किया—उनमें हैलन-कैलर का नाम गर्व से लिया जाता है जो देखने, बोलने और सुनने में असमर्थ होने के बावजूद भी शिक्षा के उच्चतम शिखर पर पहुँची। इसी तरह 'सुधा चन्द्रन' प्रसिद्ध नर्तकी-जिसकी एक दुर्घटना में टांग चली गई थी ने अपनी मेहनत और विश्वास के बलबूते पर नृत्य के क्षेत्र में अपना मुकाम हासिल किया—इसी तरह के अन्य चरित्रों के बारे में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करें।

(ङ) ज्ञान विस्तार

हम जीवन में आने वाली छोटी-छोटी परेशानियों से निराश और हताश हो जाते हैं। हमें अपने चारों ओर अंधकार ही अंधकार दिखाई देता है। कहीं कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। हम थक कर बैठ जाते हैं। कभी भाग्य को, कभी अपने आपको तो कभी किसी को कोसने लगते हैं। पर सोचो! रुकावटें किसके रास्ते में नहीं आतीं? सभी के जीवन में मुश्किल भरे पल आते हैं किन्तु उन मुश्किलों से पार वे ही जा पाते हैं जो उनके आगे सिर नहीं झुकाते, उनका दृढ़ता से सामना करते हैं। सामान्य व्यक्तियों की तो बात ही छोड़ो, दुनिया में ऐसे विकलांग व्यक्ति भी हुए हैं जिन्होंने अपनी विकलांगता को चुनौती के रूप में लिया और परिणाम यह हुआ कि खुद विकलांगता ने ही उनके अदम्य साहस और दृढ़ निश्चय के आगे घुटने टेक दिये। अष्टावक्र आठ जगह से टेढ़े थे किन्तु अपनी इस विकलांगता को उन्होंने अपने जीवन में कभी आड़े नहीं आने दिया। सभी उनकी विद्वता के आगे नतमस्तक हुए। भक्तिकालीन कवि सूरदास, अंग्रेज़ी कवि मिल्टन ने अंधे होने के बावजूद काव्य क्षेत्र में अनुपम स्थान प्राप्त किया। इसी तरह सुनने की शक्ति खो चुके विश्व के महान आविष्कारक थामस अल्वा एडीसन को भला कौन भूल सकता है? उन्होंने जीवन में अनेक कष्ट झेले पर निराश नहीं हुए। उन्होंने अनेक आविष्कार किए जिसमें बिजली का आविष्कार दुनिया के लिए सबसे बड़ी देन है। इसी तरह लुई ब्रेल नेत्रहीन होने के बाद स्वयं भी पढ़े और नेत्रहीनों के लिए ब्रेल लिपि का आविष्कार किया, जो आज नेत्रहीनों के लिए वरदान है।

अतएव बच्चो! यदि दिल में कुछ कर गुज़रने की तमन्ना और जज़्बा हो तो तमाम मुसीबतों को आखिरकार घुटने टेकने ही पड़ते हैं। अब आप ही बताइये यदि इन विभूतियों ने जीवन के संघर्ष में अपनी हार मान ली होती तो क्या वे आज दुनिया के लिए प्रेरणास्रोत बन पाते? आइए, उठिये, अपने आत्मविश्वास, सकारात्मकता, दृढ़निश्चय, चित्त की एकाग्रता और अपनी शक्तियों को केन्द्रित करें और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें। कहा भी है, ''भाग्य संवरता नहीं संवारना पड़ता है और भी कहा गया है, '' ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता अपने आप करते हैं।''

****

(निबंध भाग)

पाठ-12

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(सन 1889-1941)

लेखक परिचय—

हिंदी साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्ल साहित्य-इतिहासकार, निबंधकार और आलोचक के रूप में विख्यात रहे हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती ज़िले के अगोना गांव में सन् 1889 ई. में हुआ था तथा देहावसान बनारस (काशी) में सन् 1941 ई. में हुआ। इनके पिता चन्द्रबली शुक्ल कानूनगो थे, जो पत्नी का देहांत होने के कारण मिर्ज़ापुर में आ गए थे। बालक राम चंद्र की आरम्भिक शिक्षा यहीं हुई। तथा यहीं से उन्होंने सन् 1901 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। विपरीत परिस्थितियों के कारण यह आगे विधिवत् शिक्षा नहीं ले पाए। इनका सम्पूर्ण ज्ञान तथा शिक्षा इनके व्यक्तिगत प्रयत्नों का परिणाम था।

साहित्य के क्षेत्र में आचार्य शुक्ल का प्रवेश निबंध और कविता से शुरू होता है। शीघ्र ही इन्होंने इतिहास आलोचना और निबंध के क्षेत्र में नए प्रतिमान स्थापित किए। हिंदी की प्रारम्भिक कहानियों में इनकी कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903) का उल्लेखनीय स्थान है। इनकी अन्य रचनाओं में-हिंदी साहित्य का इतिहास, जायसी, तुलसीदास की ग्रंथावली की भूमिका तथा सूरदास (भ्रमरगीत-सार की भूमिका) और 'रस मीमांसा' उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने अनुवाद और सम्पादन का कार्य भी किया।

गद्य और गद्य में निबंध के क्षेत्र में आचार्य शुक्ल का विशिष्ट स्थान है। इस संदर्भ में राम स्वरूप चतुर्वेदी का कहना है कि जैसे आधुनिक कविता में निराला, नाटक में जयशंकर प्रसाद और कथा-साहित्य में प्रेमचन्द अपना विशेष स्थान रखते हैं उसी प्रकार निबंध और आलोचना में आचार्य शुक्ल विशिष्ट हैं। इनके प्रारम्भिक निबंधों में—साहित्य, भाषा की शक्ति, उपन्यास, भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिंदी तथा मित्रता आदि उल्लेखनीय हैं।

परिपक्वावस्था के निबंधों में चिंतामणि भाग-1, भाग-2 तथा भाग-3 (मृत्यु के बाद प्रकाशित) में संकलित निबंध मनोविकारों और समीक्षा से सम्बन्धित है। इतिहास, समीक्षा और निबंध आदि सर्वत्र इनकी दृष्टि लोकमंगल से जुड़ी रही है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत निबंध 'मित्रता' में शुक्ल ने जीवन में मित्र के महत्त्व एवं उसके चुनाव में रखी जाने वाली सावधानियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। निबंधकार का मानना है कि मित्र का चरित्र हमारे जीवन को दूर तक प्रभावित करता है और हमारे समूचे जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। सच्चा और अच्छा मित्र हमें समयानुसार उचित सलाह देकर जहाँ हमारे कष्टों, दु:खों को दूर करके हमें जीवन में अच्छा बनने में सहायता दे सकता है वहीं मूर्ख और बुरे-आचरण वाला हमें गलत आदतों का शिकार बना कर हमारे विनाश का कारण भी बन सकता है। निबंधकार की सलाह है कि उज्ज्वल और निष्कलंक बना रहने के लिए सोच-समझ कर सावधानी पूर्वक मित्र का चयन करना चाहिए, क्योंकि संगति का प्रभाव बहुत तेज़ी से और गहराई तक प्रभावित करने वाला होता है।

मित्रता

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में आती है। यदि उसकी स्थिति बिल्कुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान-पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका हेल-मेल हो जाता है। यही हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरम्भ करते हैं, जब कि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है। हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले-चाहे राक्षस बनाए चाहे देवता।

ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है पर ऐसे लोगों का साथ करना और भी बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवकों को प्राय: बहुत कम रहता है। यदि विवेक से काम लिया जाए तो यह भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष प्राय: विवेक से कम काम लेते हैं। कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके सौ गुण-दोष को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी-ही-अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस—ये ही दो-चार बातें किसी में देखकर लोग चटपट उसे अपना बना लेते हैं। हम लोग यह नहीं सोचते कि मैत्री का उद्देश्य क्या है ? क्या जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है ? यह बात हमें नहीं सूझती कि यह ऐसा साधन है, जिससे आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है। एक प्राचीन विद्वान का वचन है, ''विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खज़ाना मिल गया।'' विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती

है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए।

छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ पड़ती है। पीछे के जो स्नेह-बंधन होते हैं, उनमें न तो उतनी उमंग रहती है, न उतनी खिन्नता। बाल-मैत्री में जो मग्न करने वाला आनन्द होता है, जो हृदय को बेधनेवाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है, वह और कहाँ? कैसी मधुरता और कैसी अनुरक्ति होती है, कैसा अपार विश्वास होता है! हृदय के कैसे उद्‌गार निकलते हैं! वर्तमान कैसा आनन्दमय दिखाई पड़ता है और भविष्य के संबंध में कैसी लुभानेवाली कल्पनाएँ मन में रहती है। कितनी जल्दी बातें लगती हैं और कितनी जल्दी मानना होता है।

'सहपाठी की मित्रता' इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है। किन्तु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है, उसी प्रकार युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मैं समझता हूँ कि मित्र चाहते हुए बहुत-से लोग मित्र के आदर्श की कल्पना मन में करते होंगे, पर इस कल्पित आदर्श से तो हमारा काम जीवन के झंझटों में चलता नहीं। सुन्दर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति, ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है, पर जीवन-संग्राम में साथ देनेवाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे-छोटे काम ही हम निकालते जाएँ, पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें।

मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। राम धीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाईयों में अत्यन्त प्रगाढ़ स्नेह था। उन दोनों की मित्रता खूब निभी। यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था। नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

मित्र का कर्त्तव्य इस प्रकार बताया गया है, ''उच्च और महान कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।'' यह कर्त्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़ चित्त और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

जो बात ऊपर मित्रों के संबंध में कही गई है, वही जान-पहचानवालों के संबंध में भी ठीक है। जान-पहचान के लोग ऐसे हों, जिनसे हम कुछ लाभ उठा सकते हों, जो हमारे जीवन को उत्तम और आनन्दमय बनाने में कुछ सहायता दे सकते हों, यद्यपि उतनी नहीं जितनी गहरे मित्र दे सकते हैं। मनुष्य का जीवन थोड़ा है, उसमें खोने के लिए समय नहीं। यदि क, ख और ग हमारे लिए कुछ नहीं कर सकते, न कोई बुद्धिमानी या विनोद की बातचीत कर सकते हैं, न कोई अच्छी बात बतला सकते हैं, न सहानुभूति द्वारा हमें ढाढ़स बँधा सकते हैं, न हमारे आनन्द में सम्मिलित हो सकते हैं, न हमें कर्त्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं, तो ईश्वर हमें उनसे दूर ही रखे। हमें अपने चारों ओर जड़ मूर्तियाँ सजानी नहीं हैं। आजकल जान-पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी युवा पुरुष ऐसे अनेक युवा पुरुषों को पा सकता है, जो उसके साथ थियेटर देखने जाएँगे, नाचरंग में जाएंगे, सैर-

सपाटे में जाएंगे, भोजन का निमंत्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान-पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी। सोचो तो तुम्हारा जीवन कितना नष्ट होगा। यदि ये जान-पहचान के लोग उन मनचले युवकों में से निकलें, जो अमीरों की बुराइयों और मूर्खताओं की नकल किया करते हैं, दिन-रात बनाव सिंगार में रहा करते हैं, महफ़िलों में "ओ-हो-हो", "वाह-वाह" किया करते हैं, गालियों में ठट्ठा मारते हैं और सिगरेट का धुआँ उड़ाते हैं। ऐसे नवयुवकों से बढ़कर शून्य, निस्सार और शोचनीय जीवन और किसका है? वे अच्छी बातों के सच्चे आनन्द से कोसों दूर हैं। उनके लिए न तो संसार में सुन्दर मनोहर उक्ति वाले कवि हुए हैं और न संसार में सुन्दर आचरण वाले महात्मा। उनके लिए न तो बड़े वीर अद्‌भुत कर्म कर गए हैं और न बड़े-बड़े ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गए हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौन्दर्य नहीं, झरनों के कल-कल में मधुर संगीत नहीं, अनंत सागर तरंगों में गंभीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनन्द नहीं, उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख और कोमल हृदय की शांति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इंद्रिय-विषयों में ही लिप्त है, जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अंधकार में पतित होते देख कौन ऐसा होगा जो तरस न खाएगा? हमें ऐसे प्राणियों का साथ न करना चाहिए।

मकदूनिया का बादशाह डेमट्रियस कभी-कभी राज्य के सब काम छोड़कर अपने ही मेल के दस-पाँच साथियों को लेकर मौज़-मस्ती में लिप्त रहा करता था। एक बार बीमारी का बहाना करके इसी प्रकार वह अपने दिन काट रहा था। इसी बीच उसका पिता उससे मिलने के लिए गया और उसने एक हँसमुख जवान को कोठरी से बाहर निकलते देखा। जब पिता कोठरी के भीतर पहुँचा तब डेमेट्रियस ने कहा, "ज्वर ने मुझे अभी छोड़ा है।" पिता ने कहा, "हाँ, ठीक है, वह दरवाज़े पर मुझे मिला था।"

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्‌वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-रात अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जाएगी।

इंग्लैंड के एक विद्वान को युवावस्था में राज-दरबारियों मे जगह नहीं मिली। इस पर ज़िन्दगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। बहुत-से लोग तो इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत-से लोग ऐसे होते हैं, जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उतने ही बीच मे ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे

प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्राय: सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं। एक बार एक मित्र ने मुझसे कहा कि उसने लड़कपन में कहीं से बुरी कहावत सुनी थी, जिसका ध्यान वह लाख चेष्टा करता है कि न आए, पर बार-बार आता है। जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद करना नहीं चाहते, वे बार-बार हृदय में उठती हैं और बेधती हैं। अत: तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें। सावधान रहो। ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्र बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें कहने वाले आगे चलकर आप सुधर जाएंगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जाएगी। अंत में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे। अत: हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति की छूत से बचो। एक पुरानी कहावत है—

"काजल की कोठरी में कैसो ही सयानो जाय।
एक लीक काजल की लागि है पै लागि है।"

शब्दार्थ

परिणत होना = बदल जाना; **संगति** = साथ; **हेल मेल** = मेल जोल, घनिष्ठता; **अपरिमार्जित** = जो साफ सुथरा न हो; **अपरिपक्व** = जो पका न हो, अविकसित; **दृढ़ संकल्प** = पक्का इरादा; **विवेक** = अच्छे-बुरे को पहचानने की क्षमता; **अनुसंधान** = खोज, पड़ताल; **चटपट** = फटाफट, जल्दी-जल्दी; **आत्मशिक्षा** = जीवन-ज्ञान; **संकल्प** = निश्चय; **मर्यादा** = जीवन अनुशासन; **हतोत्साहित** = जिसमें उत्साह न हो; **उत्साहित** = उत्साह, हौंसला; **निपुण** = कुशल, प्रवीण; **उमंग** = रोमांच; **खिन्नता** = खीजना, चिढ़ जाना; **अनुरक्ति** = लीन होना, जुड़ना, लगाव; **उथल-पुथल** = हलचल; **जीवन-संग्राम** = जीवन संघर्ष; **स्नेह** = प्रेम-प्यार; **प्रीति-पात्र** = कृपा-पात्र; **वांछनीय** = अपेक्षित; **चिन्ताशील** = परेशान; **उच्च आकांक्षा** = उत्कृष्ट इच्छा; **युक्ति** = तरीका; **नीति विशारद** = नीति-निपुण, नीतिवान; **कर्त्तव्य** = फर्ज़; **सामर्थ्य** = योग्यता; **दृढ़ चित्त** = पक्का इरादा; **सत्य-संकल्प** = शुभ-विचार; **आत्मबल** = नैतिक शक्ति; **प्रतिष्ठित** = स्थापित; **मृदुल** = कोमल, नम्र; **पुरुषार्थ** = परिश्रम; **शिष्ट** = सभ्य, सदाचारी; **सत्यनिष्ठ** = सत्य पर अडिग रहने वाला, सत्यवान; **विनोद** =

मनोरंजन; **मनचला** = छिछला; **निस्सार** = सारहीन, व्यर्थ; **शोचनीय** = चिंताजनक; **सात्विकता** = सात्विक होने का भाव; **अनंत** = जिसका अंत नहीं होता; **गंभीर** = गहन; **रहस्य** = छिपा हुआ; **इंद्रिय-विषय** = इन्द्रियों से सम्बन्धित; **नीचाशय** = घटिया इरादे; **कुत्सित विचार** = बुरे विचार; **कलुषित** = दूषित; **कुसंग** = बुरी-संगत; **क्षय** = हानि, कम होना; **अवनति** = पतन; **चेष्टा** = प्रयत्न; **बेधना** = घाव करना; **चौकसी** = सावधानी; **अभ्यस्त** = निपुण; **कुंठित** = अप्रखर, अक्षम, कमज़ोर, मद्धम; **निष्कलंक** = बिना कलंक के, पवित्र।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :—

1. घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में विचरने पर युवाओं के सामने पहली कठिनाई क्या आती है?
2. हमसे अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोगों का बुरा हो सकता है?
3. आजकल लोग दूसरों में कौन-सी दो चार बातें देखकर चटपट उसे अपना मित्र बना लेते है?
4. किस प्रकार के मित्र से भारी रक्षा रहती है?
5. चिंताशील, निर्बल तथा धीर पुरुष किस प्रकार का साथ ढूँढ़ते हैं?
6. उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति व उपाय के लिए किसका मुँह ताकता था?
7. नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए किसकी ओर देखता था?
8. मकदूनिया के बादशाह डेमेट्रियस के पिता को दरवाज़े पर कौन सा ज्वर मिला था?
9. राज दरबार में जगह न मिलने पर इंग्लैड का एक विद्वान अपने भाग्य को क्यों सराहता रहा?
10. हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय क्या है?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :—

1. विश्वासपात्र मित्र को खजाना, औषध और माता जैसा क्यों कहा गया?
2. अपने से अधिक आत्मबल रखने वाले व्यक्ति को मित्र बनाने से क्या लाभ है?
3. लेखक ने युवाओं के लिए कुसंगति और सत्संगति की तुलना किससे की और क्यों?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए :—

1. सच्चे मित्र के कौन–कौन से गुण लेखक ने बताएं हैं ?
2. बाल्यावस्था और युवावस्था की मित्रता के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।
3. दो भिन्न प्रकृति के लोगों में परस्पर प्रीति और मित्रता बनी हो सकती है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. मित्र का चुनाव करते समय हमें किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
5. बुराई अटल भाव धारण करके बैठती हैं ? क्या आप लेखक की इस उक्ति से सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :—

मित्र	____________	बुरा	____________
कोमल	____________	अच्छा	____________
शांत	____________	निपुण	____________
लड़का	____________	दृढ़	____________

II. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :—

जिसका सत्य में दृढ़ विश्वास हो	____________
जो नीति का ज्ञाता हो	____________
जिस पर विश्वास किया जा सके	____________
जो मन को अच्छा लगता हो	____________
जिसका कोई पार न हो	____________

III. निम्नलिखित में संधि कीजिए :

युवा + अवस्था	____________	बाल्य + अवस्था	____________
नीच + आशय	____________	महा + आत्मा	____________
नशा + उन्मुख	____________	वि + अवहार	____________
हत + उत्साहित	____________	प्रति + एक	____________
सह + अनुभूति	____________	पुरुष + अर्थी	____________

IV. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए :—

नीति -विशारद	____________	सत्यनिष्ठा	____________
राजदरबारी	____________	जीवन-निर्वाह	____________
पथप्रदर्शक	____________	जीवन-संग्राम	____________
स्नेह बंधन	____________		

V. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य**
कच्ची मिट्टी की मूर्ति	परिवर्तित होने योग्य	________________
खज़ाना मिलना	अधिक मात्रा में धन मिलना	________________
जीवन की औषधि होना	जीवन रक्षा का साधन	________________
मुँह ताकना	आशा लगाए बैठना	________________
ठट्ठा मारना	ठठोली करना, हँसी मज़ाक करना, ऐश करना	________________
पैरों में बँधी चक्की	पाँव की बेड़ी	________________
घड़ी भर का साथ	थोड़ी देर का साथ	________________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. आपने अपने मित्रों का चुनाव उनके किन-किन गुणों से प्रभावित होकर किया है ? कक्षा में बताइए।
2. आपका मित्र बुरी संगति में पड़ गया है। आप उसे कुसंगति से बचाकर सत्संगति की ओर लाने के लिए काय उपाय करेंगे ?
3. एक अच्छी पुस्तक, अच्छे विचार भी सच्चे मित्र की तरह ही होते है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं ?
4. क्या आपने कभी अपनी बुरी आदत को अच्छी आदत में बदलने का प्रयास किया है ? उदाहरण देकर कक्षा में बताइए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. सच्ची मित्रता पर कुछ सूक्तियाँ चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाइए।
2. सत्येन बोस द्वारा निर्देशित 'दोस्ती' फिल्म जिसे राष्ट्रीय पुरस्कार तथा छः फिल्म फेयर अवार्ड भी मिले थे, देखिए।
3. अपने मित्रों की जन्म तिथि, टेलीफोन नम्बर तथा उसका पता एक डायरी में नोट कीजिए।
4. अपने मित्रों के जन्म दिवस पर बधाई कार्ड बनाकर भेंट कीजिए।
5. कक्षा में अपने मित्रों की अच्छी आदतों की सूची तैयार कीजिए।
6. अपने सहपाठियों के साथ एक समूह चित्र (ग्रुप फोटो) खिंचवाकर अपने पास रखें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

राम-सुग्रीव—राम अयोध्या के राजा दशरथ और रानी कौशल्या के सबसे बड़े पुत्र थे। इनके तीन भाई थे-लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न। हनुमान, भगवान राम के सबसे बड़े भक्त माने जाते है। हनुमान के कारण ही किष्किंधा के राजा बालि के छोटे भाई सुग्रीव की मित्रता राम से हुई तब सुग्रीव अपने बड़े भाई बालि के भय से ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान तथा कुछ अन्य वानर सेनापतियों के साथ रह रहा था। श्री राम ने सुग्रीव से मित्रता निभाते हुए सुग्रीव के साथ हुए अन्याय को दूर करने में सहायता की तथा उसमें आत्मबल का संचार किया। सुग्रीव भी सीता की खोज में श्री राम के सहायक बने।

चन्द्रगुप्त-चाणक्य—चन्द्रगुप्त मौर्य भारत के चक्रवर्ती सम्राट थे। इन्होंने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। चन्द्रगुप्त एक कुशल योद्धा, सेनानायक तथा महान विजेता ही नहीं था वरन एक योग्य शासक भी था अपने मंत्री चाणक्य (कौटिल्य) की सहायता से उसने ऐसी शासन व्यवस्था का निर्माण किया, जो उस समय के अनुकूल थी। वास्तव में चाणक्य को मौर्य साम्राज्य का संस्थापक और संरक्षक माना जाता है। किवदंती के अनुसार एक बार मगध के राजा महानंद द्वारा अपमानित किए जाने पर चाणक्य ने नंदवंश का नाश करने का प्रण किया। नंदवंश के विनाश के बाद उसने चंद्रगुप्त मौर्य को राजगद्दी पर बैठाने में हर संभव सहायता की। चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा गद्दी पर आसीन होने के बाद उसे पराक्रमी बनाने और मौर्य साम्राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से उसने व्यावहारिक राजनीति में प्रवेश किया। उनके द्वारा रचित अर्थशास्त्र मौर्यकालीन भारतीय समाज का दर्पण माना जाता है।

अकबर-बीरबल—मुगल सम्राट अकबर एक उदार शासक के रूप में इतिहास में दर्ज हैं। तेरह वर्ष की आयु में ही इन्होंने राजपाट सम्भाल लिया था। उस समय बैरम खां नाम का मंत्री इनका संरक्षक बना था। अकबर ने मुगल परम्परा के विपरीत समन्वय और उदार नीति अपनाई। अकबर के दरबारी

रत्नों (नवरत्नों) में हिन्दू मंत्री बीरबल हाजिर जवाब और कुशल मंत्री था। बीरबल अपनी बुद्धिमानी और समझदारी के कारण बादशाह अकबर का स्नेहपात्र था। अकबर इन्हें सदा अपने साथ रखता था और प्रत्येक काम में इनकी सलाह लिया करता था। अकबर बीरबल का सम्बन्ध और बीरबल की वाक् चातुरी, हाजिर जवाबी लोक-जीवन में काफी चर्चित है।

मकदूनिया (Macedonia) —मकदूनिया यूनान (ग्रीक) का एक प्रसिद्ध गणराज्य, जहाँ के राजा सिकन्दर महान (Alescander the great) हुए है। यूनान के अन्य दो राज्य-एथेन्स और स्पार्टा थे। एथेन्स का ज्ञान-विज्ञान में बोलबाला था। महान दार्शनिक सुकरात (Socrotes) यहीं के थे परन्तु स्वतंत्र विचार रखने के कारण वहाँ के शासन ने इनको जेल में डाल दिया था, जहाँ ज़हर का प्याला पीने के कारण इनकी मृत्यु हुई थी। इन्हीं के शिष्य प्लेटो (Plato) और प्लेटो के शिष्य अरस्तु (Aristotle) हुए है। अरस्तू के पिता मकदूनिया के राजवैद्य थे। सुकरात की मृत्यु के बाद प्लेटो ने आदर्श गणराज्य बनाने के लिए एक विद्यापीठ की स्थापना की थी। अरस्तू इसी विद्यापीठ का होनहार विलक्षण विद्यार्थी रहा है।

****

पाठ-13

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'

लेखक परिचय—

कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर का जन्म सन् 1906 ई० में सहारनपुर ज़िला के देवबन्द गाँव में हुआ था। प्रारम्भ से ही राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यों में गहरी दिलचस्पी लेने के कारण आपको अनेक बार जेल यात्रा करनी पड़ी। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी आपने बराबर कार्य किया है। 'ज्ञानोदय' का आप सम्पादन कर चुके हैं। आपने अपने लेखन के अतिरिक्त अपने वैयक्तिक स्नेह और सम्पर्क से भी हिंदी के अनेक नए लेखकों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया है।

रचनाएँ : प्रभाकर की अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें 'नयी पीढ़ी नए विचार', 'ज़िन्दगी मुस्करायी', माटी हो गयी सोना', आपके रेखाचित्रों के संग्रह हैं। 'आकाश के तारे', 'धरती के फूल' प्रभाकर जी की लघु कहानियों के संग्रह का शीर्षक है। 'दीप जले शंख बजे' में जीवन में छोटे पर अपने आप में बड़े व्यक्तियों के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का संग्रह है। 'ज़िन्दगी मुस्करायी' तथा 'बाजे पायलिया के घुंघरू' नामक संग्रहों में आपके कतिपय छोटे प्रेरणादायक ललित निबन्ध संगृहीत हैं।

पाठ-परिचय : प्रस्तुत निबन्ध **'मैं और मेरा देश'** में लेखक ने बहुत ही रोचक ढंग से देश के प्रति हमारे कर्त्तव्य-बोध को चित्रित करते हुए उसके सम्मान और उत्थान के लिए कार्य करने को प्रेरित किया है। हमें मात्र अपनी सुविधाओं से संतुष्ट नहीं होना चाहिए, अपितु यह देखना और जानना अधिक आवश्यक है कि हमारे देश को किस चीज़ की आवश्यकता है अथवा उसे कैसे सम्मानीय अवस्था में पहुँचाया जा सकता है। लेखक ने कुछ रोचक घटनाओं द्वारा इन्हीं तथ्यों को साक्षात स्वरूप दिया है।

मैं और मेरा देश

मैं अपने घर में जन्मा था, पला था।

अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा बड़ा हुआ था।

अपने नगर में घूम-फिरकर वहाँ के विशाल समाज का संपर्क पा, वहाँ के संचित ज्ञान-भंडार का उपयोग कर, उसे अपनी सेवाओं का दान दे, उसकी सेवाओ का सहारा पा और इस तरह एक मनुष्य से एक भरा-पूरा नगर बन कर मैं खड़ा हुआ था।

मैं अपने नगर के लोगों का सम्मान करता था, वे भी मेरा सम्मान करते थे।

मुझे बहुतों की अपने लिए ज़रूरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की ज़रूरत का उनके लिए जवाब था।

इस तरह मैं समझ रहा था कि मैं अपने में अब पूरा हो गया हूँ, पूरा फैल गया हूँ, पूरा मनुष्य हो गया हूँ।

मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही, मुझे अब कुछ न चाहिए, जो चाहिए , वह सब मेरे पास है—मेरा घर, मेरा पड़ोस, मेरा नगर और मैं। वाह, कैसी सुन्दर कैसी संगठित और कैसी पूर्ण है मेरी स्थिति।

एक दिन आनन्द की इस दीवार में एक दरार पड़ गई और तब मुझे सोचना पड़ा कि अपने घर, अपने पड़ोस, अपने नगर की सीमाओं में ममता, सहारा, ज्ञान और आनन्द के उपहार पाकर भी मेरी स्थिति एकदम हीन है और हीन भी इतनी कि मेरा कहीं भी कोई अपमान कर सकता है-एक मामूली अपराधी की तरह और मुझे यह भी अधिकार नहीं कि मैं उस अपमान का बदला लेना तो दूर रहा, उसके लिए कहीं अपील या दया-प्रार्थना ही कर सकूँ।

''क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में यह दरार पड़ गई?''

बड़े महत्त्व का प्रश्न है। इस अर्थ में भी कि यह बात को खिलने का, आगे बढ़ने का, अवसर देता है और इस अर्थ में भी कि ठीक समय पर पूछा गया है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनन्द आता है, तो उत्तर यह है आपके प्रश्न का :

जी हाँ, एक भूकंप आया था, जिससे दीवार में यह दरार पड़ गई और लीजिए आपको कोई नया प्रश्न न पूछना पड़े, इसलिए मैं अपनी ओर से ही कह दे रहा हूँ कि यह दीवार थी मानसिक विचारों की, मानसिक विश्वासों की। इसलिए यह भूकंप भी किसी प्राँत या प्रदेश में नहीं उठा, मेरे मानस में ही उठा था।

''मानस में भूकंप उठा था।''

हाँ, जी, मानस में भूंकप उठा था और भूकंप में कहीं कोई धरती थोड़े ही हिली थी, आकाश थोड़े ही काँपा था, एक तेजस्वी पुरुष का अनुभव ही वह भूकंप था, जिसने मुझे हिला दिया।

वे तेजस्वी पुरुष थे—स्वर्गीय पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय। अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए और जो घोर अंधकार और भयंकर बवंडरों के झकझोरों में जीवन भर खेल, उन दीपको को बुझने से बचाते रहे, उन्हीं में एक थे हमारे लाला जी। उनकी कलम और वाणी दोनों में तेजस्विता की ऐसी किरणें थीं कि वे फूटतीं, तो अपने मुग्ध हो जाते और पराए भौचक!

वे उन्हीं दिनों सारे संसार में घूमे थे। उनके व्यक्तित्व के गठन में उनके परिवार, उनके पास-पड़ोस और उनके नगर ने अपने सर्वोत्तम रत्नों की जोत उन्हें भेंट दी थी। अजी क्या बात थी उनके व्यक्तित्व की। क्या देखने में, क्या सुनने में, वे एक अपूर्व मनुष्य थे। कौन था भला ऐसा, जिस पर वे मिलते ही छा न जाते। संसार के देशों में घूम-कर वे अपने देश में लौटे, तो उन्होंने अपना सारा अनुभव एक ही वाक्य में भरकर बखेर दिया। वह अनुभव ही तो वह भूकंप था, जिसने मेरी पूर्णता की ठसक की अपूर्णता की कसक में बदल दिया।

उनका अनुभव यह था ''मैं अमेरिका गया, इंग्लैंड गया, फ्रांस गया और संसार के दूसरे देशों में भी घूमा, पर जहाँ भी मैं गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।''

क्या सचमुच यह अनुभव एक मानसिक भूकंप नहीं है, जो मनुष्य को झकझोरकर कहे कि मनुष्य के पास संसार एक ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों, पर उसका देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में हीन हो, तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।

इस अनुभव की छाया में मैं-सोचता हूँ कि मेरा यह कर्त्तव्य है कि मुझे निजी रूप में सारे संसार का राज्य भी क्यों न मिलता हो, मैं कोई ऐसा काम न करूँ, जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में उसके सम्मान को धक्का पहुँचे, उसकी किसी भी प्रकार की शक्ति की कमी आए। साथ ही उसके एक नागरिक के रूप में मेरा यह अधिकार भी है कि अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग मुझे मिले और उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का मुझे, जहाँ भी मैं हूँ, भरोसा रहे।

अजी भला एक आदमी अपने इतने बड़े देश के लिए कर ही क्या सकता है ? फिर कोई बड़ा वैज्ञानिक हो, तो वह अपने आविष्कारों से ही देश को कुछ बल दे-दे या फिर कोई बहुत बड़ा धनपति हो, तो वह अपने धन का भामाशाह की तरह समय पर त्याग कर ही देश के काम आ सकता है, पर हरेक आदमी न तो ऐसा वैज्ञानिक ही हो सकता है, न धनिक ही। फिर जो बेचारा अपनी ही दाल-रोटी की फ्रिक में लगा हुआ हो, वह अपने देश के लिए चाहते हुए भी क्या कर सकता है ?

आपका प्रश्न विचारों की उत्तेजना देता है, इसमें संदेह नहीं, पर इसमें भी कोई संदेह नहीं कि

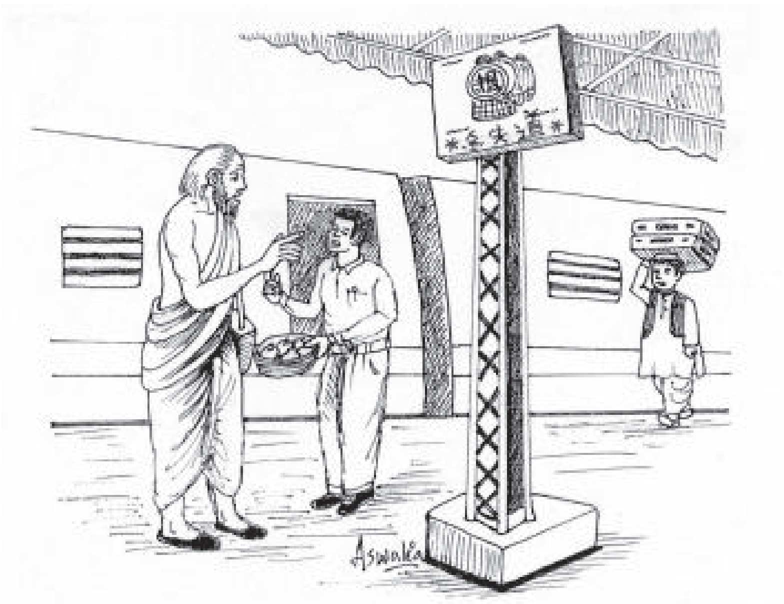

इसमें जीवन-शास्त्र का घोर अज्ञान भी भरा हुआ है। अरे भाई, जीवन कोई आपके मुन्ने की गुड़िया थोड़े ही है कि आप कह सकें कि बस यह है, इतना ही है। वह तो एक विशाल समुद्र का तट है, जिस पर हरेक अपने लिए स्थान पा सकता है।

लो, एक और बात बताता हूँ आपको। जीवन को दर्शन शास्त्रियों ने बहुमुखी बताया है, उसकी अनेक धाराएँ हैं। सुना नहीं आपने कि जीवन एक युद्ध है और युद्ध में लड़ना ही तो कोई एक काम नहीं होता। लड़ने वालों को रसद न पहुँचे, तो वे कैसे लड़ें ? किसान ठीक खेती न उपजाएँ तो रसद पहुँचाने वाले क्या करें और लो, जाने दो बड़ी-बड़ी बातें, युद्ध में जय बोलने वालों का भी महत्त्व है।

''जय बोलने वालों का ?''

हाँ जी, युद्ध में जय बोलने वालों का भी बहुत महत्त्व है। कभी मैच देखने का तो अवसर मिला ही होगा आपको ? देखा नहीं आपने कि दर्शकों की तालियों से खिलाड़ियों के पैरों में बिजली लग जाती है और गिरते खिलाड़ी उभर जाते हैं। कवि-सम्मेलनों और मुशायरों की सारी सफलता दाद देने वालों पर ही निर्भर करती है। इसलिए मैं अपने देश का कितना भी साधारण नागरिक क्यों न हूँ, अपने देश के सम्मान की रक्षा के लिये बहुत कुछ कर सकता हूँ। ''अकेला चना क्या भाड़ फोड़े।'' यह कहावत मैं अपने अनुभव के आधार पर ही आपसे कह रहा हूँ कि सौ फीसदी झूठ है। इतिहास साक्षी है, बहुत बार अकेले चने ने ही भाड़ फोड़ा है और ऐसा फोड़ा है कि भाड़ खील-खील ही नहीं हो गया, उसका निशान तक ऐसा छूमंतर हुआ कि कोई यह भी न जान पाया कि वह बेचारा आखिर था कहाँ ?

मैं जानता हूँ इतिहास की गहराइयों में उतरने का यह समय नहीं है, पर दो छोटी कहानियाँ तो सुन ही सकते हैं आप। और कहानियाँ भी न प्रेमचन्द की, न एंटन चेखोव की, दो युवकों के जीवन की दो घटनाएँ हैं, पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है, जो नागरिक और देश को एक साथ बाँधती है कि आप बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़कर भी उसे इतनी साफ नहीं देख सकते।

हमारे देश के महान संत स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान गये। वे रेल में यात्रा कर रहे थे कि एक दिन ऐसा हुआ कि उन्हें खाने को फल न मिले और उन दिनों फल ही उनका भोजन था। गाड़ी एक स्टेशन पर ठहरी, तो वहाँ भी उन्होंने फलों की खोज की पर वे पा न सके। उनके मुँह से निकला, ''जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते।''

एक जापानी युवक प्लेटफार्म पर खड़ा था। वह अपनी पत्नी को रेल में बैठाने आया था, उसने ये शब्द सुन लिए। सुनते ही वह अपनी बात बीच में ही छोड़कर भागा और कहीं दूर से एक टोकरी ताज़े फल लाया। वे फल उसने स्वामी रामतीर्थ को भेंट करते हुए कहा, ''लीजिए, आपको ताज़े फलों की ज़रूरत थी। ''

स्वामी जी ने समझा यह कोई फल बेचने वाला है और उनके दाम पूछे पर उसने दाम लेने से इन्कार कर दिया। बहुत आग्रह करने पर उसने कहा, ''आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं तो वह यह है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।''

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान आप दूसरी घटना सुनकर ही पूरी तरह लगा सकेंगे। एक दूसरे देश का निवासी एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से कोई पुस्तक पढ़ने को लाया। इस पुस्तक में कुछ दुर्लभ चित्र थे। ये चित्र इस युवक ने पुस्तक में से निकाल लिए और पुस्तक वापस कर आया। किसी जापानी विद्यार्थी ने यह देख लिया और पुस्तकालय को उसकी सूचना दे दी। पुलिस ने तलाशी लेकर वे चित्र उस विद्यार्थी के कमरे से बरामद किए और उस विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया गया।

मामला यहीं तक रहता, तो कोई बात न थी। अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए पर मामला यहीं तक नहीं रुका और उस पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया कि उस देश का (जिसका वह विद्यार्थी था) कोई निवासी इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता।

मतलब साफ है, एक दम साफ कि जहाँ एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया था, वहीं एक युवक ने अपने काम से अपने देश के मस्तक पर कलंक का ऐसा टीका लगाया, जो जाने कितने वर्षों तक संसार की आँखों में उसे लांछित करता रहा।

इन घटनाओं से क्या यह स्पष्ट नहीं है कि हरेक नागरिक अपने देश के साथ बँधा हुआ है और देश की हीनता और गौरव का फल उसे ही नहीं मिलता, उसकी हीनता और गौरव का फल उसके देश को भी मिलता है।

मैं अपने देश का एक नागरिक हूँ और मानता हूँ कि मैं ही अपना देश हूँ। जैसे मैं अपने लाभ और सम्मान के लिए हरेक छोटी-छोटी बात पर ध्यान देता हूँ, वैसे ही मैं अपने देश के लाभ और सम्मान के लिए भी छोटी-छोटी बात पर ध्यान दूँ, यह मेरा कर्त्तव्य है और जैसे मैं अपने सम्मान और साधनों से अपने जीवन में सहारा पाता हूँ, वैसे ही देश के सम्मान और साधनों से ही सहारा पाऊँ, यह मेरा अधिकार है। बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीज़ तो हैं ही नहीं।

मैंने जो कुछ जीवन में अध्ययन और अनुभव से सीखा है, वह यही है कि महत्त्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है। बड़े से बड़ा कार्य हीन है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना नहीं है और छोटे से छोटा कार्य भी महान है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना है।

महान कमालपाशा उन दिनों अपने देश तुर्की के राष्ट्रपति थे। राजधानी में उनकी वर्षगाँठ बहुत धूमधाम से मनाई गई। देश के लोगों ने उस दिन लाखों रुपए के उपहार उन्हें भेंट किए। वर्षगाँठ का उत्सव समाप्त कर जब वे अपने भवन के ऊपर चले गए तो एक देहाती बूढ़ा उन्हें वर्षगाँठ का उपहार भेंट करने आया। सेक्रेटरी ने कहा, ''अब तो समय बीत गया है।'' बूढ़े ने कहा, ''मैं तीस मील से पैदल चलकर आ रहा हूँ, इसलिए मुझे देर हो गई।''

राष्ट्रपति तक उसकी सूचना भेजी गई। कमालपाशा विश्राम के वस्त्र बदल चुके थे। वे उन्हीं कपड़ों के नीचे चले आए और उन्होंने आदर के साथ बूढ़े किसान का उपहार स्वीकार किया। यह उपहार मिट्टी की छोटी-सी हँडिया में पाव-भर शहद था, जिसे बूढ़ा स्वयं तोड़कर लाया था। कमालपाशा ने हँडिया को स्वयं खोला और उसमें दो उँगलियाँ भरकर चाटने के बाद तीसरी ऊँगली शहद से भरकर बूढ़े के मुँह में दे दी। बूढ़ा निहाल हो गया।

राष्ट्रपति ने कहा, ''दादा, आज सर्वोत्तम उपहार तुमने ही मुझे भेंट किया, क्योंकि इसमें तुम्हारे हृदय का शुद्ध प्यार है।'' उन्होंने आदेश दिया कि राष्ट्रपति की शाही कार में शाही-सम्मान वे साथ उनके दादा को गाँव तक पहुँचाया जाए। क्या वह-शहद बहुत कीमती था? क्या उसमें मोती-हीरे मिले हुए थे? न, उस शहद के पीछे उसके लाने वाले की भावना थी, जिसने उसे सौ लालों का एक लाल बना दिया।

हमारे देश में भी एक ऐसी ही घटना घटी थी। एक किसान ने रंगीन सुतलियों से एक खाट बुनी और उसे रेल में रखकर वह दिल्ली लाया। दिल्ली स्टेशन से उस खाट को अपने कंधे पर रख, वह भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू की कोठी पर पहुँचा। पंडित जी कोठी से बाहर आए तो वह खाट उसने उन्हें दी। पंडित जी को देखकर, वह इतना भाव-मुग्ध हो गया कि कुछ कह ही न सका। पंडित जी ने पूछा, ''क्या चाहते हो तुम?''

उसने कहा, ''यही कि आप इसे स्वीकार करें।'' प्रधानमंत्री ने उसका यह उपहार प्यार से स्वीकार किया और अपना एक फोटो दस्तख़त करके उसे स्वयं भी उपहार में दिया। जिस दस्तख़ती फोटो के लिए देश के बड़े-बड़े लोग, विद्वान और धनी तरसते हैं, वह क्या उस मामूली खाट के बदले में दिया गया था? न, वह तो उस खाट वाले की भावना का ही सम्मान था।

''क्यों जी, हम यह कैसे जान सकते हैं कि हमारा काम देश के अनुकूल है या नहीं?''

वाह, क्या सवाल पूछा है, आपने! सवाल क्या, बातचीत में आपने तो एक कीमती मोती ही जड़ दिया यह, पर इसके उत्तर में सिर्फ़ ''हाँ'' या ''न'' से काम न चलेगा। मुझे थोड़ा विवरण देना पड़ेगा।

हम अपने कार्यों को देश के अनुकूल होने की कसौटी पर कस कर चलने की आदत डालें, यह बहुत उचित है, बहुत सुन्दर है, पर हम इसमें तब तक सफल नहीं हो सकते, जब तक कि हम अपने देश की भीतरी दशा को ठीक-ठीक न समझ लें और उसे हमेशा अपने सामने न रखें।

हमारे देश को दो बातों की सबसे पहले और सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। एक शक्ति-बोध और दूसरा सौंदर्य-बोध! बस, हम यह समझ लें कि हमारा कोई भी काम ऐसा न हो जो देश में कमज़ोरी की भावना को बल दे या कुरुचि की भावना को।

''ज़रा अपनी बात को और स्पष्ट कर दीजिए।'' यह आपकी राय है और मैं इससे बहुत ही खुश हूँ कि आप मुझसे यह स्पष्टता माँग रहे हैं।

क्या आप चलती रेलों में, मुसाफिरखानों में, क्लबों में, चौपालों पर और मोटर-बसों में कभी ऐसी चर्चा करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है और यह गड़बड़ है, वह परेशानी है। साथ ही क्या इन स्थानों में या इसी तरह के दूसरे स्थानों में आप कभी अपने देश के साथ दूसरे देशों की तुलना करते हैं और इस तुलना में अपने देश को हीन और दूसरे देशों को श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं।

यदि इन प्रश्नों का उत्तर हाँ है, तो आप देश के शक्ति-बोध को भयंकर चोट पहुँचा रहे हैं और आपके हाथों देश के सामूहिक मानसिक बल का ह्रास हो रहा है। सुनी है आपने शल्य की बात। वह महाबली कर्ण का सारथी था। जब भी कर्ण अपने पक्ष की विजय की घोषणा करता, हुंकार भरता, वह अर्जुन की अजेयता का एक हलका-सा उल्लेख कर देता। बार-बार इस उल्लेख ने कर्ण के सघन आत्मविश्वास में संदेह की तरेड़ डाल दी, जो उसके भावी पराजय की नींव रखने में सफल हो गई।

अच्छा, आप इस तरह की चर्चा कभी नहीं करते, तो मैं आपसे दूसरा प्रश्न पूछता हूँ। क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं? अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं? मुँह में गंदे शब्दों से गंदे भाव प्रकट करते हैं? इधर की उधर, उधर की इधर, लगाते हैं? अपना घर, दफ़्तर, गली, गंदा रखते हैं? होटलों, धर्मशालाओं में या दूसरे ऐसे ही स्थानों में, जीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं। उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलमठेल करते हैं, निमंत्रित होने पर समय से लेट पहुँचते हैं यह वचन देकर भी घर आने वालों को समय पर नहीं मिलते और इसी तरह किसी भी रूप में क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?

यदि आपका उत्तर हाँ है, तो आपके द्वारा देश के सौंदर्य-बोध को भयंकर आघात लग रहा है और आपके द्वारा देश की संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

"क्या कोई ऐसी कसौटी भी बनाई जा सकती है, जिससे देश के नागरिकों को आधार बनाकर देश की उच्चता और हीनता को हम तोल सकें।"

लीजिए चलते-चलते आपको इस प्रश्न का भी उत्तर दे ही दूँ। इस उच्चता और हीनता की कसौटी है, चुनाव।

जिस देश के नागरिक यह समझते है कि चुनाव में किसे अपना मत देना चाहिए और किसे नहीं, वह देश उच्च है और जहाँ के नागरिक गलत लोगों के उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के गलत प्रभाव में आकर मत देते हैं, वह हीन है।

इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि मेरा, यानि हरेक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह जब भी कोई चुनाव हो, ठीक मनुष्य को अपना मत दें और मेरा अधिकार है कि मेरा मत लिए बिना कोई भी आदमी, वह संसार का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष ही क्यों न हो, किसी अधिकार की कुर्सी पर न बैठ सके।

शब्दार्थ

संचित = एकत्रित किया हुआ; **दुर्लभ** = कठिनता से प्राप्त होने वाला; **संगठित** = एकत्रित, जोड़ा हुआ; **हीन** =तुच्छ, नगण्य; **लांछित** = कलंकित ; **भूकंप** = भूचाल; **विश्राम** = आराम; **बवंडर** = आँधी-तूफान; **हँडिया** = एक तरह की मिट्टी का बर्तन; **भौचक** = हक्का बक्का, हैरान; **निहाल** = प्रसन्न एवं संतुष्ट; **ठसक** = अभिमान, गर्व; **खाट** = चारपाई; **कसक** = रुक-रुक कर होने वाली पीड़ा, टीस; **दस्तखत** = हस्ताक्षर; **विवरण** = व्याख्या; **लज्जा** = शर्म, लाज; **कसौटी** = परख, जाँच; **गौरव**= आदर, सम्मान; **ह्रास** = कमी, अभाव; **धनिक** = धनवान व्यक्ति; **संदेह** = शंका; **मुशायरों** = उर्दू फारसी का कवि सम्मेलन; **तरेड़** = दरार; **जीनों में** = सीढ़ियों में; **साक्षी** = गवाही देने वाला; **ठेलम-ठेल** = धक्कम धक्का; **आग्रह** = हठ, हठपूर्वक प्रार्थना; **उत्तेजक** = भड़काने वाला

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :—

1. लेखक को अपनी पूर्णता का बोध कब हुआ?
2. मानसिक भूकम्प से क्या अभिप्राय है?
3. किस तेजस्वी पुरुष के अनुभव ने लेखक को हिला दिया?
4. मनुष्य के लिए संसार के सारे उपहारों और साधनों को व्यर्थ क्यों कहा?

5. युद्ध में 'जय' बोलने वालों का क्या महत्व है ?
6. दर्शकों की तालियाँ खिलाड़ियों पर क्या प्रभाव डालतीं हैं ?
7. जापान के स्टेशन पर स्वामी रामतीर्थ क्या ढूंढ़ रहे थे ?
8. कमालपाशा कौन थे ?
9. बूढ़े किसान ने कमालपाशा को क्या उपहार दिया ?
10. किसान ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को क्या उपहार दिया ?
11. लेखक के अनुसार हमारे देश को किन दो बातों की आवश्यकता है ?
12. शल्य कौन था ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :—

1. लाला लाजपतराय के किस अनुभव ने लेखक की पूर्णता को अपूर्णता में बदल दिया ?
2. स्वामी रामतीर्थ द्वारा फलों की टोकरी का मूल्य पूछने पर जापानी युवक ने क्या कहा ?
3. किसी देश के विद्यार्थी ने जापान में ऐसा कौन सा काम किया जिससे उसके देश के माथे पर कलंक का टीका लग गया ?
4. लेखक के अनुसार कोई भी कार्य महान कैसे बन जाता है ?
5. शल्य ने कौन-सा महत्त्वपूर्ण कार्य किया ? पाठ के आधार पर लिखिए।
6. शक्ति बोध और सौंदर्य बोध से क्या तात्पर्य है ? पाठ के आधार पर बताइए।
7. हम अपने देश के शक्तिबोध को किस प्रकार चोट पहुँचाते हैं ?
8. हम अपने देश के सौन्दर्य बोध को किस प्रकार चोट पहुँचाते हैं ?
9. देश की उच्चता और हीनता की कसौटी क्या है ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए :—

1. लाला लाजपतराय जी ने देश के लिए कौन सा महत्त्वपूर्ण कार्य किया ? निबन्ध के आधार पर उत्तर दीजिए।
2. तुर्की के राष्ट्रपति कमालपाशा और भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू से सम्बन्धित घटनाओं द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है ?
3. लेखक ने देश के नागरिकों को चुनावों में किन बातों की ओर ध्यान देने के लिए कहा है ?

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाइए :—

शब्द	भाववाचक संज्ञा	शब्द	भाववाचक संज्ञा
मनुष्य	____________	ऊँचा	____________
पूर्ण	____________	लड़ना	____________
स्वतंत्र	____________	गुलाम	____________
उच्च	____________	व्यक्ति	____________
हीन	____________	पुरुष	____________

II. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण शब्द बनाइए :—

शब्द	विशेषण	शब्द	विशेषण
नगर	____________	राष्ट्र	____________
संसार	____________	भारत	____________
संस्कृति	____________	दया	____________
परिवार	____________	घर	____________

III. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :—

शब्द	विपरीत शब्द	शब्द	विपरीत शब्द
ज्ञान	____________	लाभ	____________
अंधकार	____________	सफल	____________
जीवन	____________	पराजय	____________
साधारण	____________	पक्ष	____________
स्वतंत्र	____________	सम्मान	____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. आप अपने देश के सम्मान और गरिमा को बनाए रखने में क्या योगदान दे सकते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. हम सभी अपने देश से जुड़े हुए है। हमारे अच्छे और बुरे कार्यों का प्रभाव देश पर पड़ता है। इस संदर्भ में अपने अध्ययन और अनुभव के आधार पर किसी घटना का वर्णन करें।

3. आप आपने विद्यालय में शक्ति–बोध और सौंन्दर्य बोध कैसे ला सकते हैं? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा हम सब कैसे करें। इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

I. 1. लाला लाजपत राय के जन्मदिन और पुण्यतिथि पर इनके बारे में अपने विचार विद्यालय की प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करें।

2. 'अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा' कहावत को शत प्रतिशत झूठ सिद्ध करने वाले देश भक्तों/महान पुरुषों के चित्र एकत्रित कर कक्षा–पत्रिका तैयार कीजिए।

II. निम्नलिखित प्रेरक-प्रसंगों का कक्षा में मंचन कीजिए :—

1. स्वामी रामतीर्थ और जापानी युवक का प्रसंग।
2. पंडित जवाहर लाल नेहरू और किसान का प्रसंग।
3. तुर्की के राष्ट्रपति और बूढ़े किसान का प्रसंग।
4. कर्ण और शल्य का प्रसंग।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

भामाशाह :—(1542—लगभग 1598) भामाशाह बाल्यकाल से मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप के मित्र, सहयोगी और विश्वासपात्र सलाहकार थे। आपको मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम था और दानवीरता के लिए आप का नाम इतिहास में अमर है। आपके पास बहुत बड़ी मात्रा में धन–सम्पत्ति थी जो आपने मेवाड़ के उद्धार के लिए महाराणा प्रताप को समर्पित कर दी थी। भामाशाह के प्राप्त सहयोग से महाराणा प्रताप में नया उत्साह उत्पन्न हुआ। उन्होंने पुनः सैन्य शक्ति संगठित कर मुगल शासकों को पराजित कर फिर मेवाड़ का राज्य प्राप्त किया।

कर्ण—कर्ण महाभारत के सबसे प्रमुख पात्रों में से एक हैं। उनकी की वास्तविक माँ कुन्ती थी। वे दुर्योधन के सबसे अच्छे मित्र थे और महाभारत के युद्ध में वे अपने भाइयों के विरुद्ध लड़े। उन्हें सूर्य पुत्र के रूप में जाना जाता था। वे एक महान दानी थे।

शल्य—शल्य माद्रा (मद्रयदेश) के राजा जो पांडु के सगे साले व नकुल सहदेव के मामा थे, परन्तु

महाभारत में इन्होंने पांण्डवों का साथ नहीं दिया और कर्ण के सारथी बन गए थे। कर्ण की मृत्यु पर युद्ध के अंतिम दिन इन्होंने कौरव सेना का नेतृत्व किया और उसी दिन युधिष्ठिर के हाथों मारे गए। इनकी बहन माद्री, कुन्ती की सौत थी और पांडु के शव के साथ चिता पर जीवित भस्म हो गई थी।

चेखोव—एंटोन पाब्लोविच चेखोव एक रूसी चिकित्सक, कथाकार और नाटककार थे। चेखोव अपने साहित्यिक जीवन के दिनों में ज़्यादातर चिकित्सा के व्यवसाय में लगे रहे। वे कहते थे चिकित्सा मेरी धर्मपत्नी है और साहित्य प्रेमिका।

कमालपाशा—अतातुर्क उर्फ मुस्तफ़ा कमालपाशा (1881–1938) को आधुनिक तुर्की का निर्माता कहा जाता है। तुर्की के साम्राज्यवादी शासक सुल्तान अब्दुल हमीद द्वितीय का पासा पलट कर वहाँ कमाल की सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक व्यवस्था कायम करने का जो क्रान्तिकारी कार्य उन्होंने किया, उस ऐतिहासिक कार्य ने उनके नाम को सार्थक सिद्ध कर दिया।

****

पाठ-14
महादेवी वर्मा
(सन् 1907-1987)

लेखिका परिचय—

1907 की होली के दिन उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद में जन्मी महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई। इन्होंने विवाह के बाद पढ़ाई कुछ अंतराल से फिर शुरू की। वे मिडल स्तर की परीक्षा में पूरे प्रांत में प्रथम आयीं और छात्रवृत्ति भी पायी। यह सिलसिला कई कक्षाओं तक चला। बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहा, लेकिन महात्मा गांधी के आह्वान पर सामाजिक कार्यों में जुट गई। उच्च शिक्षा के लिए विदेश न जाकर नारी शिक्षा प्रसार में जुट गयीं। इन्होंने स्वतन्त्रता आंदोलन में भी भाग लिया।

रचनाएँ—महादेवी की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं—नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, प्रथम आयाम, अग्नि रेखा यात्रा। महादेवी का समस्त काव्य वेदनामय है। काव्य के साथ-साथ महादेवी ने उच्चकोटि के गद्‌य साहित्य की भी रचना की। उन्होंने मुख्य रूप से संस्मरण और रेखाचित्र प्रस्तुत किए हैं। इनकी गद्य रचनाएं हैं—अतीत के चलचित्र, शृंखला की कड़ियां, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार और चिंतन के क्षण। महादेवी की रुचि चित्रकला में भी रही। उनके बनाए चित्र उनकी कई कृतियों में प्रयुक्त किए गए हैं।

11 सितंबर 1987 को उनका देहावसान हुआ। उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित प्राय: सभी प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने 1956 में उन्हें पद्‌मभूषण अलंकरण से अलंकृत किया था।

पाठ परिचय—'राजेंद्र बाबू' श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा लिखित एक जीवंत संस्मरण है। जो महादेवी द्वारा लिखे संस्मरणों के संग्रह 'पथ के साथी' में से लिया गया है। इस संस्मरण में लेखिका ने भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व की विशेषताओं को रेखांकित किया है। उनके शरीर की बनावट, वेशभूषा की सादगी, उनका देहातीपन और अस्त-व्यस्तता से लेकर उनकी प्रतिभा और बुद्धि की विशिष्टता, उनके स्वभाव की कोमलता-कठोरता तथा उनकी गंभीर संवेदना का चित्रण लेखिका ने बड़ी भावुकता के साथ किया है एक तरह से महादेवी वर्मा राजेंद्र बाबू के समग्र जीवन दर्शन को परखने का प्रयत्न किया है। राजेंद्र बाबू की पत्नी के स्वभाव की विशेषताओं के उल्लेख से यह संस्मरण और भी आत्मीयपूर्ण हो गया है। इस संस्मरण में राजेन्द्र बाबू के निजी सचिव श्री चक्रधर की सादगी और निष्ठा का भी उष्कृष्ण वर्णन है। यह संस्मरण महादेवी वर्मा के चिंतन, अनुभूति और दृष्टिकोण की विशद विशेषताओं को रेखांकित करता है।

राजेंद्र बाबू

राजेंद्र बाबू को मैंने पहले-पहले एक सर्वथा गद्यात्मक वातावरण में ही देखा था, परन्तु उस गद्य ने कितने भावात्मक क्षणों की अटूट माला गूँथी है, यहाँ बताना कठिन है।

मैं प्रयाग में बी.ए. की विद्यार्थी थी और शीतावकाश में अपने घर भागलपुर जा रही थी। पटना में भाई से मिलने की बात थी, अत: स्टेशन पर ही प्रतीक्षा के कुछ घंटे व्यतीत करने पड़े।

स्टेशन के एक ओर तीन पैर वाली बेंच पर देहातियों की वेशभूषा में परन्तु कुछ नागरिक जनों से घिरे सज्जन जो विराजमान थे, उनकी ओर मेरी विहंगम दृष्टि जाकर लौट आई। वास्तव में भाई से यह जानने के उपरांत कि उक्त सज्जन ही राजेंद्र बाबू हैं, मुझे अभिवादन का ध्यान आया।

पहली दृष्टि में ही जो आकृति स्मृति में अंकित हो गई थी, उसमें इतने वर्षों ने न कोई नई रेखा जोड़ी है और न कोई नया रंग भरा है।

सत्य में से जैसे कुछ घटाना या जोड़ना संभव नहीं रहता, वैसे ही सच्चे व्यक्तित्व में भी कुछ जोड़ना-घटाना संभव नहीं है।

काले घने पर छोटे कटे हुए बाल, चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, घनी भृकुटियों के नीचे बड़ी आँखें, मुख के अनुपात में कुछ भारी नाक, कुछ गोलाई लिए चौड़ी ठुड्डी, कुछ मोटे पर सुडौल होंठ, श्यामल झाँई देता हुआ गेहुआँ वर्ण, ग्रामीणों जैसी बड़ी-बड़ी मूँछें जो ऊपर के होंठ पर ही नहीं नीचे के होंठ पर भी रोमिल बालों का आवरण डाले हुए थीं। हाथ, पैर, शरीर सबमें लम्बाई की ऐसी विशेषता थी, जो दृष्टि को अनायास आकर्षित कर लेती थी।

उनकी वेशभूषा की ग्रामीणता तो दृष्टि को और भी उलझा लेती थी। खादी की मोटी धोती ऐसा फेंटा देकर बाँधी गई थी कि एक ओर दाहिने पैर पर घुटना छूती थी और दूसरी ओर बाएँ पैर की पिंडली। मोटे, खुरदरे, काले बंद गले के कोट के ऊपर का भाग बटन टूट जाने के कारण खुला था और घुटने के नीचे का बटनों से बंद था, सरदी के कारण पैरों में मोज़े-जूते तो थे, परन्तु कोट और धोती के समान उनमें भी विचित्र स्वच्छंदतावाद था। एक मोज़ा जूते पर उतर आया था और दूसरा टखने पर घेरा बना रहा था। मिट्टी की पर्त से न जूतों के रंग का पता चलता था, न रूप का। गांधी टोपी की स्थिति तो और भी विचित्र थी। उसकी आगे की नोक बायीं भौंह पर खिसक आई थी और टोपी की कोर माथे पर पट्टी की तरह लिपटी हुई थी। देखकर लगता था मानो वे किसी हड़बड़ी में चलते-चलते कपड़े पहनते आए हैं, अत: जो जहाँ स्थिति में अटक गया, वह वहीं उसी स्थिति में अटका रह गया।

उनकी मुखाकृति देखकर अनुभव होता था मानो इन्हें पहले कहीं देखा है। अनेक व्यक्तियों ने उन्हें प्रथम बार देखकर भी ऐसा ही अनुभव किया होगा। बहुत सोचने के उपरांत उस प्रकार की अनुभूति का कारण समझ में आ सका।

राजेन्द्र बाबू की मुखाकृति ही नहीं, उनके शरीर के संपूर्ण गठन में एक सामान्य भारतीय जन की आकृति और गठन की छाया थी, अत: उन्हें देखने वाले को कोई-न-कोई आकृति या व्यक्ति स्मरण हो आता था और वह अनुभव करने लगता था कि इस प्रकार के व्यक्ति को पहले भी कहीं देखा है। आकृति तथा वेशभूषा के समान ही वे अपने स्वभाव और रहन-सहन में सामान्य भारतीय या भारतीय कृषक का ही प्रतिनिधित्व करते थे। प्रतिभा और बुद्धि की विशिष्टता के साथ-साथ उन्हें जो गंभीर संवेदना प्राप्त हुई थी, वही उनकी सामान्यता को गरिमा प्रदान करती थी।

भाई जवाहरलाल जी की अस्त-व्यस्तता भी व्यवस्था से निर्मित होती थी, किंतु राजेन्द्र बाबू की सारी व्यवस्था ही अस्त-व्यस्तता का पर्याय थी। दूसरे यदि जवाहरलाल जी की अस्त व्यवस्तता को देख लें तो उन्हें बुरा नहीं लगता था, परंतु अपनी अस्त-व्यस्तता के प्रकट होने पर राजेन्द्र बाबू भूल करने वाले बालक के समान संकुचित हो जाते थे। एक दिन यदि दोनों पैरों में दो भिन्न रंग के मोज़े पहने किसी ने उन्हें देख लिया तो उनका संकुचित हो उठना अनिवार्य था। परन्तु दूसरे दिन जब वे स्वयं सावधानी से रंग का मिलान करके पहनते तो पहले से भी अधिक अनमिल रंगों के पहन लेते।

उनकी वेशभूषा की अस्त-व्यस्तता के साथ उनके निजी सजिव और सहचर भाई चक्रधर जी का स्मरण अनायास हो आता है। अब मोज़ों में से पाँचों उँगलियाँ बाहर निकलने लगतीं, जब जूते के तले पैर के तलवों के गवाक्ष बनने लगते, जब धोती, कुरते, कोट आदि का खद्दर अपने मूल ताने-बाने में बदलने लगता, तब चक्रधर इस पुरातन सज्जा को अपने लिए सहेज लेते। उन्होंने वर्षों तक इसी प्रकार राजेंद्र बाबू के पुराने परिधान से अपने-आपको प्रसाधित कर कृतार्थता का अनुभव किया था। मैंने ऐसे गुरु-शिष्य या स्वामी-सेवक फिर अब तक नहीं देखे।

राजेंद्र बाबू के निकट संपर्क में आने का अवसर मुझे सन् 1937 में मिला जब वे कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में महिला विद्यापीठ महाविद्यलय के भवन का शिलान्यास करने प्रयाग आए। उनसे ज्ञात हुआ कि उनकी 15-16 पौत्रियाँ हैं, जिनकी पढ़ाई की व्यवस्था नहीं हो पाई है। मैं यदि अपने छात्रावास में रखकर उन्हें विद्यापीठ की परीक्षाओं में बैठा सकूँ तो उन्हें शीघ्र कुछ विद्या प्राप्त हो सकेगी।

पहले बड़ी, फिर छोटी, फिर उनसे छोटी के क्रम से बालिकाएँ मेरे संरक्षण में आ गईं और उन्हें देखने प्राय: उनकी दादी और कभी-कभी दादा भी प्रयाग आते रहे। तभी राजेन्द्र बाबू की सहधर्मिणी के निकट संपर्क में आने का अवसर मिला। वे सच्चे अर्थ में धरती की पुत्री थीं-साध्वी, सरल, क्षमामयी, सबके प्रति ममतालु और असंख्य संबंधों की सूत्रधारिणी। ससुराल में उन्होंने बालिका-वधू रूप में पदार्पण किया था। संभ्रांत जमींदार परिवार की परंपरा के अनुसार उन्हें घंटों सिर नीचा करके एकासन बैठना पड़ता था, परिणामत: उनकी रीढ़ की हड्डी इस प्रकार झुक गई कि युवती होकर वे सीधी खड़ी नहीं हो पाईं।

बिहार के ज़मींदार परिवार की वधू और स्वातंत्र्य युद्ध के अपराजेय सेनानी की पत्नी होने का न उन्हें कभी अहंकार हुआ और न उनमें कोई मानसिक ग्रंथि ही बनी। छात्रावास की सभी बालिकाओं तथा नौकर-चाकरों का उन्हें समान रूप से ध्यान रहता था। एक दिन या कुछ घंटों ठहरने पर भी वे सबको बुला-बुलाकर उनका तथा उनके परिवार का कुशल-मंगल पूछना न भूलती थीं। घर से अपनी पौत्रियों के लिए लाए मिष्ठान्न में से प्राय: सभी बँट जाता था। देखने वाला यह जान ही नहीं सकता था कि वह सबकी इया, अइया अर्थात दादी नहीं हैं।

गंगा-स्नान के लिए तो मुझे उनके साथ प्राय: जाना पड़ता था। उस दिन संगम पर जितना दूध मिलता, जितने फूल दिखाई देते सब उनकी ओर से ही गंगा-यमुना की भेंट हो जाते। कोलाहल करते हुए पंडों की पूरी पलटन उन्हें घेर लेती थी, पर वे बिना विचलित हुए शांत भाव से प्रत्येक को उसका प्राप्य देती चलती थीं।

बालिकाओं के संबंध में राजेंद्र बाबू का स्पष्ट निर्देश था कि वे सामान्य बालिकाओं के साथ बहुत सादगी और संयम से रहें। वे ख़ादी के कपड़े पहनती थीं, जिन्हें वे स्वयं ही धो लेती थीं। उनके साबुन, तेल आदि का व्यय भी सीमित था। कमरे की सफ़ाई, झाड़-पोंछ, गुरुजनों की सेवा आदि भी उनके अध्ययन के आवश्यक अंग थे।

उस समय संघर्ष के सैनिकों का गंतव्य जेल ही रहता था, अत: प्राय: किसी की पत्नी, किसी की बहन, किसी की बेटी विद्यापीठ के छात्रावास से अनुपस्थित होती थी। स्वतंत्रता के उपरांत उनमें से कुछ दिल्ली चली गयीं और कुछ विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए अंग्रेज़ी के विद्यालयों में भर्ती हो गईं। केवल राजेंद्र बाबू की पौत्रियाँ अपवाद रहीं। राजेंद्र बाबू के भारत के प्रथम राष्ट्रपति हो जाने के उपरांत मुझे स्वयं उनकी पौत्रियों के संबंध में चिंता हुई। उनका स्पष्ट उत्तर मिला, ''महादेवी बहन, दिल्ली मेरा नहीं है, राष्ट्रपति-भवन मेरा नहीं है। अहंकार से मेरी पोतियों का दिमाग खराब न हो जाए, तुम केवल इसकी चिंता करो। वे जैसे रहती आई हैं, उसी प्रकार रहेंगी। कर्त्तव्य विलास नहीं, कर्मनिष्ठा है।''

उनकी सहधर्मिणी में भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ। जब राष्ट्रपति-भवन में उनके कमरे से संलग्न रसोईघर बन गया तब वे दिल्ली गयीं और अंत तक स्वयं भोजन बनाकर सामान्य भारतीय ग्रहिणी के समान पति, परिवार तथा परिजनों को खिलाने के उपरांत स्वयं अन्न ग्रहण करती थीं।

उस विशाल भवन में यदि अपने अद्‌भुत आतिथ्य की बात न कहूँ, तो कथा अधूरी रह जाएगी। बालिकाओं की दादी ने मुझे दिल्ली आने का विशेष निमंत्रण तो दिया ही, साथ ही, प्रयाग से सिरकी के बने एक दर्जन सूप लाने का भी आदेश दिया। उन्होंने बार-बार आग्रह किया कि मैं उनके लिए

इतना कष्ट अवश्य उठाऊँ, क्योंकि फटकने-पछोरने के लिए सिरकी के सूप बहुत अच्छे होते हैं, पर कोई उन्हें लाने वाला ही नहीं मिलता।

प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बारह सूपों के टाँगने पर जो दृश्य उपस्थित हुआ, उससे भी अधिक विचित्र दृश्य तब प्रत्यक्ष हुआ,जब राष्ट्रपति-भवन से आई बड़ी कार पर यह उपहार लादा गया। राष्ट्रपति-भवन के हर द्वार पर सलाम ठोंकने वाले सिपाहियों की आँखें विस्मय से खुली रह गई। ऐसी भेंट लेकर कोई अतिथि न कभी वहाँ पहुँचा था, न पहुँचेगा। पर भवन की तत्कालीन स्वामिनी ने मुझे अंक में भर लिया।

राजेंद्र बाबू तथा उनकी सहधर्मिणी सप्ताह में एक दिन अन्न नहीं ग्रहण करते थे। संयोग से मैं उनके उपवास के दिन ही पहुँची, अत: उनकी यह जिज्ञासा स्वाभाविक थी कि मैं कैसा भोजन पसंद करूँगी। उपवास में भी आतिथेय का साथ देना उचित समझकर मैंने निरन्न भोजन की ही इच्छा प्रकट की। फलाहार के साथ उत्तम खाद्य पदार्थों की कल्पना स्वाभाविक रहती है। सामान्यत: हमारा उपवास अन्य दिनों के भोजन की अपेक्षा अधिक व्ययसाध्य हो जाता है, क्योंकि उस दिन हम भाँति-भाँति के फल, मेवे, मिष्ठान्न आदि एकत्र कर लेते हैं।

मुझे आज भी वह संध्या नहीं भूलती, जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति को मैंने सामान्य आसन पर बैठ कर दिन भर के उपवास के उपरांत केवल कुछ उबले आलू खाकर पारायण करते देखा। मुझे भी वही खाते देखकर उनकी दृष्टि में संतोष और होठों पर बालकों जैसी सरल हँसी छलक उठी।

जीवन मूल्यों की परख करने वाली दृष्टि के कारण उन्हें देशरत्न की उपाधि मिली और मन की सरल स्वच्छता ने उन्हें अजातशत्रु बना दिया। अनेक बार प्रश्न उठता है, क्या वह साँचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन कोमल चरित्र ढलते थे।

शब्दार्थ

गद्यात्मक = सादा, सामान्य; **गंतव्य** = जाने का स्थान; **शीतावकाश** = सर्दियों की छुट्टियाँ; **झाँई** = छाया, झलक, आभा; **विलास** = सुखोपभोग, मौज-मस्ती; **विहंगम दृष्टि** = पूरा-पूरा देखना; एक सरसरी निगाह; **कर्मनिष्ठा** = कर्म के प्रति समर्पण; **आतिथ्य** = मेहमान नवाजी; **भृकुटि** = भौंह; **संभ्रांत** = कुलीन, अभिजात; **संवेदना** = सहानुभूति, दुख को महसूस करने की भावना; **अपराजेय** = अविजित, जिसे पराजित न किया जा सके; **सिरकी** = सींक; **गरिमा** = गौरव, महत्त्व; **सूप** = अनाज साफ़ करने का पात्र, छाज; **अस्त-व्यस्तता** = बिखराव; **अंक भरना** = आलिंगन में लेना, गले लगाना; **गवाक्ष** = सुराख, झरोखा; **संयोग** = इत्तिफ़ाक, आकस्मिकता; **परिधान** = वस्त्र; **उपवास** = व्रत; **प्रसाधित करना** = सजाना-सँवारना; **आतिथेय** = मेजबान, [अतिथि का स्वागत करने वाला]; **शिलान्यास** = नींव का पत्थर रखना; **निरन्न** = बिना अन्न का; **सहधर्मिणी** = गृहस्थ धर्म में साथ देने वाली, धर्मपत्नी; **व्ययसाध्य** = खर्चीला; **पारायण** = व्रत की समाप्ति; **सूत्र धारिणी** =

संचालन करने वाली; **उपाधि** = पदवी; **एकासन** = बैठने की एक ही मुद्रा; **अजातशत्रु** = जिसका कोई शत्रु न हो; **अपवाद** = सामान्य नियम से भिन्न; **प्राप्य** = पाने योग्य, जो मिलना चाहिए।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :—

1. राजेंद्र बाबू को लेखिका ने प्रथम बार कहाँ देखा था ?
2. राजेंद्र बाबू अपने स्वभाव और रहन सहन में किसका प्रतिनिधित्व करते थे ?
3. राजेंद्र बाबू के निजी सचिव और सहचर कौन थे ?
4. राजेंद्र बाबू ने किनकी शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए लेखिका से अनुरोध किया ?
5. लेखिका प्रयाग से कौन सा उपहार लेकर राष्ट्रपति भवन पहुँची थी ?
6. राष्ट्रपति को उपवास की समाप्ति पर क्या खाते देखकर लेखिका को हैरानी हुई ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :—

1. राजेंद्र बाबू को देखकर हर किसी को यह क्यों लगता था कि उन्हें पहले कहीं देखा है ?
2. पं. जवाहरलाल नेहरू की अस्त-व्यस्तता तथा राजेंद्र बाबू की सारी व्यवस्था किस का पर्याय थी ?
3. राजेंद्र बाबू की वेशभूषा के साथ उनके निजी सचिव और सहचर चक्रधर बाबू का स्मरण लेखिका को क्यों हो आया ?
4. लेखिका ने राजेंद्र बाबू की पत्नी को सच्चे अर्थों में धरती की पुत्री क्यों कहा है ?
5. राजेंद्र बाबू की पोतियों का छात्रावास में रहन-सहन कैसा था ?
6. राष्ट्रपति भवन में रहते हुए भी राजेंद्र बाबू और उनकी पत्नी में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ—उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिये—

1. राजेंद्र बाबू की शारीरिक बनावट, वेशभूषा और स्वभाव का वर्णन करें।
2. पाठ के आधार पर राजेंद्र बाबू की पत्नी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करें।
3. आशय स्पष्ट कीजिये—
   (क) सत्य में जैसे कुछ घटाना या जोड़ना संभव नहीं रहता वैसे ही सच्चे व्यक्तित्व में भी कुछ जोड़ना-घटना संभव नहीं है।
   (ख) क्या वह सांचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन कोमल चरित्र ढलते थे।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित में संधि कीजिए :

शीत + अवकाश	____________	विद्या + अर्थी	____________
मुख + आकृति	____________	छात्र + आवास	____________
प्रति + ईक्षा	____________	प्रति + अक्ष	____________

II. निम्नलिखित शब्दों का संधिविच्छेद कीजिए—

राजेन्द्र	____________	वातावरण	____________
फलाहार	____________	व्यतीत	____________
मिष्ठान्न	____________	प्रत्येक	____________
व्यवस्था	____________	एकासन	____________

III. निम्नलिखित विग्रह पदों को समस्त पद में बदलिए—

राष्ट्र का पति	____________	रसोई के लिए घर	____________
कर्म में निष्ठा	____________	विद्या की पीठ	____________
गंगा में स्नान	____________	राष्ट्रपति का भवन	____________

IV. निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए—

गाँव में रहने वाला	____________
नगर में रहने वाला	____________
कृषि कर्म करने वाला	____________
छात्रों के रहने का स्थान	____________
जिसका कोई शत्रु न हो	____________
जिसे पराजित न किया जा सके	____________
अतिथि का स्वागत करने वाला	____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. राजेंद्र बाबू सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति थे। आप उनके कौन-कौन से गुणों को अपने जीवन में अपनाना चाहेंगे ?
2. आप किसी महान व्यक्तित्व से मिले हो अथवा आपने किसी महान व्यक्तित्व के बारे में पढ़ा हो तो संक्षेप में लिखिए।
3. भारत के सभी राष्ट्रपतियों के चित्र एकत्र करके एक चार्ट पर चिपकाकर पुस्ताकलय अथवा अन्य किसी समुचित स्थान पर लगाइए।
4. भारत के राष्ट्रपति-चुनाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कीजिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. राजेंद्र बाबू के बाद के भारत के विभिन्न राष्ट्रपतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उनकी जीवनियां पढ़िए।
2. राजेन्द्र प्रसाद जैसी आकृति व वेशभूषा धारण करके फैन्सी ड्रैस प्रतियोगिता में भाग लीजिए।
3. सरलता व सादगी का व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस विषय के पक्ष और विपक्ष में कक्षा में परिचर्चा करें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **डॉ.राजेन्द्र प्रसाद—**

पूरा नाम — डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद
जन्म — 3 दिसम्बर, 1884
जन्म भूमि — जीरा देयू, बिहार
मृत्यु — 28 फरवरी, 1963
मृत्यु स्थान — सदाकत आश्रम , पटना
अविभावक — महादेव सहाय
पत्नी — राजवंशी देवी
पद — भारत के प्रथम राष्ट्रपति
कार्यकाल — 26 जनवरी, 1950 से 13 मई, 1962
विद्यालय — कलकत्ता विश्वविद्यालय, प्रेसीडेंसी कॉलेज (कलकत्ता)
शिक्षा — स्नातक, बी. एल. कानून में मास्टर डिग्री और डॉक्टरेट
पुरस्कार — भारत रत्न

भारत के राष्ट्रपतियों की सूची

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
2. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
3. डॉ. ज़ाकिर हुसैन
4. वी. वी. गिरि (वराहगिरि वेंकट गिरि)
5. फ़ख़रुद्दीन अली अहमद
6. नीलम संजीव रेड्डी
7. ज्ञानी जैल सिंह
8. रामास्वामी वेंकटरमण
9. डॉ. शंकरदयाल शर्मा
10. के. आर. नारायणन
11. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
12. प्रतिभा पाटिल
13. प्रणब मुखर्जी

राष्ट्रपति भवन

राष्ट्रपति भवन भारत सरकार के राष्ट्रपति का सरकारी आवास है। सन् 1950 तक इसे वाइसरॉय हाउस कहा जाता था। तब यह तत्कालीन भारत के गवर्नर जनरल का आवास हुआ करता था। यह नई दिल्ली के हृदय क्षेत्र में स्थित है। इसमें 340 कक्ष है और यह विश्व में किसी भी राष्ट्राध्यक्ष के आवास से बड़ा है।

****

पाठ–15
हरिशंकर परसाई
(सन् 1922–1995)

लेखक परिचय—

हरिशंकर परसाई का जन्म सन् 1922 में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले के जमानी गाँव में हुआ। नागपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. करने के बाद कुछ दिनों तक अध्यापन किया। सन् 1947 से स्वतंत्र लेखन करने लगे। संसार में काफी सराहना हुई। सन् 1995 में उनका निधन हो गया।

परसाई जी हिंदी साहित्य की दुनिया में मुख्यतः व्यंग्यकार के रूप में चर्चित रहे हैं, लेकिन उन्होंने व्यंग्य के अतिरिक्त उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, निबन्ध आदि गद्य विधाओं में भी अपना योगदान दिया है। परसाई जी की कृतियों में — 'हँसते हैं रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे' (कहानी संग्रह), 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज' (उपन्यास), 'तब की बात और थी', 'भूत के पाँव पीछे', 'बेईमानी की परत', 'पगडंडियों का ज़माना', 'सदाचार का तावीज़', 'खिसायत मुझे भी है', और अंत में (निबंध संग्रह), 'वैष्णव की फिसलन', 'तिरछी रेखाएँ', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'विकलांग श्रद्धा का दौर (व्यंग्य संग्रह) उल्लेखनीय हैं। परसाई जी का समस्त साहित्य 'परसाई रचनावली' के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विषमताओं पर सीधा प्रहार किया है। भारतीय जीवन के पाखंड, भ्रष्टाचार, अंतर्विरोध, बेईमानी आदि पर उनका व्यंग्य तीखा और मर्माहत करने वाला होने पर भी मर्यादित है। उनके व्यंग्य के पीछे उनका गंभीर विचारक रूप भी झलकता है।

'सदाचार का तावीज' व्यंग्य पाठ में हरिशंकर परसाई जी ने भ्रष्टाचार के कारण तथा निवारण के उपायों को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। इस व्यंग्य के माध्यम से लेखक स्पष्ट करता है कि किसी को सदाचारी तभी बनाया जा सकता है जब भ्रष्टाचार के मौके खत्म हों। रिश्वतखोरी या भ्रष्टाचार तब तक समाप्त नहीं होगा, जब तक कि सभी कर्मचारियों को सन्तोषजनक वेतन नहीं मिल जाता, आर्थिक सुरक्षा नहीं मिल जाती। परसाई जी ने मानव मन की स्वाभाविकता पर भी प्रकाश डाला है। मनुष्य समय और परिस्थिति के अनुरूप अपने विचारों और आदर्शों को बदल लेता है।

सदाचार का तावीज़

एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है।

राजा ने एक दिन दरबारियों से कहा, ''प्रजा बहुत हल्ला मचा रही है कि सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ।''

दरबारियों ने कहा—''जब हुज़ूर को नहीं दिखा तो हमें कैसे दिख सकता है ?''

राजा ने कहा—''नहीं, ऐसा नहीं, ऐसा नहीं है। कभी-कभी जो मुझे नहीं दिखता, वह तुम्हें दिखता होगा। जैसे मुझे बुरे सपने कभी नहीं दिखते, पर तुम्हें दिखते होंगे।''

दरबारियों ने कहा—''जो, दिखते हैं। पर वह सपनों की बात है।''

राजा ने कहा—''फिर भी तुम लोग सारे राज्य में ढूँढ़कर देखो कि कहीं भ्रष्टाचार तो नहीं है। अगर कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना लेते आना। हम भी तो देखें कि कैसा होता है।''

एक दरबारी ने कहा—''हुज़ूर, वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गई हैं कि हमें बारीक चीज़ नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी, क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है जिसे ''विशेषज्ञ'' कहते हैं। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में आँजकर वे बारीक से बारीक चीज़ भी देख लेते हैं। मेरा निवेदन है कि इन विशेषज्ञों को ही हुज़ूर भ्रष्टचार ढूँढ़ने का काम सौंपे।''

राजा ने ''विशेषज्ञ'' जाति के पाँच आदमी बुलाए और कहा—''सुना है, हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है। पर वह कहाँ है, यह पता नहीं चलता। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़ कर हमारे पास ले आना। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा-सा ले आना।''

विशेषज्ञों ने उसी दिन से छान-बीन शुरू कर दी।

दो महीने बात वे फिर से दरबार में हाज़िर हुए।

राजा ने पूछा—''विषेषज्ञो, तुम्हारी जाँच पूरी हो गई ?''

''जी, सरकार।''

''क्या तुम्हें भ्रष्टाचार मिला।''

''जी, बहुत-सा मिला।''

राजा ने हाथ बढ़ाया—''लाओ, मुझे बताओ। देखूँ, कैसा होता है।''

विशेषज्ञों ने कहा—''हुज़ूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।''

राजा सोच में पड़ गए। बोले—''विशेषज्ञो, तुम कहते हो कि वह सूक्ष्म है, अगोचर है और सर्वव्यापी है। ये गुण तो ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है ?''

विशेषज्ञों ने कहा—''हाँ, महाराज, अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।''

एक दरबारी ने पूछा—''पर वह है कहाँ ? कैसे अनुभव होता है ?''

विशेषज्ञों ने जवाब दिया—''वह सर्वत्र है। वह इस भवन में है। वह महाराज के सिंहासन में है।''

''सिंहासन में है !'' कहकर राजा साहब उछलकर दूर खड़े हो गए।

विशेषज्ञों ने कहा—''हाँ, सरकार, सिंहासन में है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के जिस बिल का भुगतान किया गया है, वह बिल झूठा है। वह वास्तव में दुगुने दाम का है। आधा पैसा बीच वाले खा गए। आपके पूरे शासन में भ्रष्टाचार है और वह मुख्यत: घूस के रूप में है।''

विशेषज्ञों की बात सुनकर राजा चिन्तित हुए और दरबारियों के कान खड़े हुए।

राजा ने कहा—''यह तो बड़ी चिन्ता की बात है। हम भ्रष्टाचार बिल्कुल मिटाना चाहते हैं। विशेषज्ञों, तुम बता सकते हो कि वह कैसे मिट सकता है ?''

विशेषज्ञों ने कहा—''हाँ महाराज, हमने उसकी भी योजना तैयार की है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था ने बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है और ठेकेदार है तो अधिकारियों को घूस है। ठेका मिट जाए तो उसकी घूस मिट जाए। इसी तरह और बहुत सी चीज़ है। किन कारणों से आदमी घूस लेता है, यह भी विचारणीय है।''

राजा ने कहा—''अच्छा, तुम अपनी पूरी योजना रख जाओ। हम और हमारा दरबार उस पर विचार करेंगे।''

विशेषज्ञ चले गए।

राजा ने और दरबारियों ने भ्रष्टाचार मिटाने की योजना को पढ़ा। उस पर विचार किया।

विचार करते दिन बीतने लगे और राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा।

एक दिन एक दरबारी ने कहा—''महाराज, चिन्ता के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। उन विशेषज्ञों ने आपको झंझट में डाल दिया।''

राजा ने कहा—''हाँ, मुझे रात को नींद नहीं आती।''

दूसरा दरबारी बोला—''ऐसी रिपोर्ट को आग के हवाले कर देना चाहिए जिससे महाराज की नींद में खलल पड़े।''

राजा ने कहा—''पर करें क्या ? तुम लोगों ने भी भ्रष्टाचार मिटाने की योजना का अध्ययन किया है। तुम्हारा क्या मत है ? क्या उसे काम में लाना चाहिए ?''

दरबारियों ने कहा—''महाराज, वह योजना क्या है एक मुसीबत है। उसके अनुसार कितने उलट-फेर करने पड़ेंगे! कितनी परेशानी होगी। सारी व्यवस्था उलट-पलट हो जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई-नई कठिनाइयां पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब चाहिए जिससे बिना कुछ उलट-फेर किए भ्रष्टाचार मिट जाए।''

राजा साहब बोले—''मैं भी यही चाहता हूँ। पर यह हो कैसे ? हमारे प्रपितामह को तो जादू आता था; हमें वह भी नहीं आता। तुम लोग ही कोई उपाय खोजो।''

एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधू को पेश किया और कहा—''महाराज, एक कन्दरा में तपस्या करते हुए इस महान साधक को हम ले आये हैं। इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह मन्त्रों से सिद्ध है और उसके बाँधने से आदमी एकदम सदाचारी हो जाता है।''

साधु ने अपने झोले में से एक तावीज़ निकालकर राजा को दिया। राजा ने उसे देखा। बोले—''हे साधु, इस तावीज के विषय में मुझे विस्तार से बताओ। इससे आदमी सदाचारी कैसे हो जाता है?''

साधु ने समझाया—''महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें

'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दाबकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएँ ? मैं कई वर्षों से इसी के चिन्तन में लगा हूँ। अभी मैंने यह सदाचार का तावीज़ बनाया है। जिस आदमी की भुजा पर यह बँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। मैंने कुत्ते पर भी इसका प्रयोग किया है। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता। बात यह है कि इस तावीज़ में से भी सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है तब इस तावीज़ की शक्ति आत्मा का गला घोंटती है और आदमी को तावीज़ से ईमान के स्वर सुनाई पड़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है। यही इस तावीज़ का गुण है, महाराज!''

दरबार में हलचल मच गई। दरबारी उठ-उठकर तावीज़ को देखने लगे।

राजा ने खुश होकर कहा—''मुझे नहीं मालूम था कि मेरे राज्य में ऐसे चमत्कारी साधु भी हैं। महात्मन्, हम आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमारा संकट हर लिया। हम सर्वव्यापी भ्रटाचार से बहुत परेशान थे। मगर हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। हम राज्य की और से तावीज़ों का कारखाना खोल देते हैं। आप उसके जनरल मैनेजर बन जाएँ और अपनी देख-रेख में बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।''

एक मन्त्री ने कहा—''महाराज, राज्य क्यों झंझट में पड़े ? मेरा तो निवेदन हे कि साधु बाबा को ठेका दे दिया जाए। वे अपनी मण्डली से तावीज़ बनवा कर राज्य को सप्लाई कर देंगे ?''

राजा को यह सुझाव पसन्द आया। साधु को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया। उसी समय उन्हें पाँच करोड़ रुपये कारखाना खोलने के लिए पेशगी मिल गए।

राज्यों के अखबारों में खबरें छपी—''सदाचार के तावीज़ की खोज ! तावीज़ बनाने का कारखाना खुला!''

लाखों तावीज़ बन गए। सरकार के हर सरकारी कर्मचारी की भुजा पर एक-एक तावीज़ बाँध दिया गया।

भ्रष्टाचार की समस्या का ऐसा सरल हल निकल आने से राजा और दरबारी सब खुश थे।

एक दिन राजा की उत्सुकता जागी। सोचा—''देखें तो कि यह तावीज़ कैसे काम करता है।''

वह वेश बदलकर एक कार्यालय गए। उस दिन 2 तारीख थी। एक दिन पहले तनख्वाह मिली थी।

वह एक कर्मचारी के पास गए और कई काम बताकर उसे पाँच रुपये का नोट देने लगे।

कर्मचारी ने उन्हें डांटा—''भाग जाओ यहां से! घूस लेना पाप है!''

राजा बहुत खुश हुए। तावीज़ ने कर्मचारी को ईमानदार बना दिया था।

कुछ दिन बाद वह फिर वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गए। उस दिन इकतीस तारीख थी—महीने का आखिरी दिन।

राजा ने फिर उसे पाँच का नोट दिखाया और उसने लेकर जेब में रख लिया।

राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया। बोले—''मैं तुम्हारा राजा हूँ। क्या तुम आज सदाचार का तावीज़ बाँधकर नहीं आए ?''

''बाँधा है, सरकार, यह देखिए।''

उसने आस्तीन चढ़ाकर तावीज़ दिखा दिया।

राजा असमंजस में पड़ गए। फिर ऐसा कैसे हो गया ?

उन्होंने तावीज़ पर कान लगाकर सुना। तावीज़ में से स्वर निकल रहे थे—''अरे, आज इकतीस है। आज तो ले ले।''

शब्दार्थ

सदाचार = अच्छा आचरण; **घूस** = रिश्वत; **भ्रष्टाचार** = बुरा आचार-विचार; **तरकीब** = उपाय, युक्ति; **विराटता** = बहुत बड़ा, विशालता; **प्रपितामह** = परदादा; **विशेषज्ञ** = किसी विषय-विशेष का ज्ञान रखने वाला; **कंदरा** = गुफ़ा; **अंजन** = काजल; **तावीज़** = रक्षा-कवच, मंत्र लिखा कागज़ या धातु का टुकड़ा जिसे हाथ पर या गले में धारण किया जाता है; **आँजकर** = आँखों में काजल लगाकर; **कल** = यंत्र, मशीन; **स्थूल** = मोटा; **सूक्ष्म** = बारीक; **पेशगी** = किसी वस्तु के मूल का वह अंश जो काम करने वाले को पहले ही दे दिया जाता है, अग्रिम; **अगोचर** = अप्रत्यक्ष, अदृश्य; **उत्सुकता** = अधीरता, बेचैनी; **व्याप्त** = समाया हुआ; **आस्तीन** = पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढकता है, बाँह; **सर्वव्यापी** = हर तरफ फैला हुआ; **असमंजस** = दुविधा;

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—**

   (1) राजा ने राज्य में किस चीज़ के फैलने की बात दरबारियों से पूछी ?

   (2) राजा ने भ्रष्टाचार ढूंढ़ने का काम किसे सौंपा ?

   (3) एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने किसे पेश किया ?

   (4) साधु ने राजा को कौन सी वस्तु दिखायी ?

   (5) साधु ने तावीज़ का प्रयोग किस पर किया ?

(6) तावीज़ों को बनाने का ठेका किसे दिया गया ?

(7) राजा वेश बदल कर पहली बार कार्यालय कब गए थे ?

(8) साधु को तावीज़ बनाने के लिए कितनी पेशगी दी गई ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(1) दरबारियों ने भ्रष्टाचार न दिखने का क्या कारण बताया ?

(2) राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से क्यों की ?

(3) राजा का स्वास्थ्य क्यों बिगड़ता जा रहा था ?

(4) साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार के बारे में क्या कहा ?

(5) तावीज़ किस लिए बनवाए गए थे ?

(6) महीने के आखिरी दिन तावीज़ में से कौन से स्वर निकल रहे थे ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(1) विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार खत्म करने के क्या-क्या उपाय बताए ?

(2) साधु ने तावीज़ के क्या गुण बताए ?

(3) 'सदाचार का तावीज़' पाठ में छिपे व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

(ख) भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए—

एक	____________	पाप	____________
गुण	____________	विस्तार	____________
सूक्ष्म	____________	ईमानदारी	____________

2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

राजा	____________	कान	____________
मनुष्य	____________	दिन	____________
सदाचार	____________	भ्रष्टाचार	____________

3. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए—

अच्छे आचरण वाला ____________

बुरे आचरण वाला ____________

जो किसी विषय का ज्ञाता हो	____________
हर तरफ फैला हुआ	____________
जो दिखाई न दे	____________
जिसकी आत्मा महान हो	____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. साधु के स्थान पर आप राजा को भ्रष्टाचार समाप्त करने का कौन सा सा उपाय बताते ?
2. विद्यार्थी के रूप में भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए आप कौन-कौन से कदम उठाएंगे ?
3. भ्रष्टाचार या रिश्वत से सम्बन्धित आप अपना या अपने माता पिता का कोई अनुभव लिखिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. भ्रष्टाचार के विरुद्ध स्लोगन लिखकर स्कूल में निश्चित स्थान पर लगाइए।
2. 'भ्रष्टाचार और उसका समाधान'—विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।
3. ईमानदारी से सम्बन्धित कहानियाँ पढ़िए।
4. इस निबन्ध में आए संवादों के आधार पर किसी एक प्रसंग को लघु नाटिका में रूपांतरित करके उसे स्कूल/कक्षा में मंचित कीजिए।
5. समय-समय पर विभिन्न पत्रिकाओं/समाचार पत्रों आदि में 'भ्रष्टाचार उन्मूलन' सम्बन्धी विषय पर कविता, निबन्ध, स्लोगन राइटिंग (नारे लेखन) आदि प्रतियोगिताओं में भाग लीजिए।
6. स्कूल अथवा अपने इलाके में चल रहे लीगल लिटरेसी क्लब के सक्रिय सदस्य बनें तथा अपने आस-पास हो रहे भ्रष्टाचार-उन्मूलन में सहयोग करें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

हरिशंकर परसाई जी ने हिंदी साहित्य में व्यंग्य को एक विधा का दर्जा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने व्यंग्य को हल्के-फुल्के मनोरंजन की परिधि से बाहर निकालकर समाज के और देश की ज्वलंत समस्याओं से जोड़ने का काम किया है। उन्होंने अनेक वर्षों तक स्कूल-कॉलजों में अध्यापन कार्य के साथ-साथ लेखन कार्य भी किया। किन्तु लेखन को

पूर्णकालिक कार्य मानते हुए उन्होंने लेखन कार्य में नौकरी को बाधक मानकर नौकरी छोड़ दी जोकि एक साहसिक कार्य था। इसके बाद वे पूरी निष्ठा से स्वतंत्र लेखन कार्य में जुट गए और आर्थिक विपन्नता के बावजूद भी उन्होंने पुन: नौकरी नहीं की। इसके बाद वे पूरी तरह से स्वतंत्र लेखन में जुट गये। उनका व्यंग्य लेखन केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं था अपितु उन्होंने सामाजिक व राजनीतिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार और शोषण पर करारा व्यंग्य किया है जो कि हिंदी साहित्य में विलक्षण स्थान रखता है।

'सदाचार' शब्द सत् + आचार दो शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ है — सदैव अच्छा आचरण करना। सदाचार के समांतर शब्द हैं — अच्छा चाल चलन, सुशीलता, शीलाचार, शुद्ध आचरण, पारसाई, नेकचलनी। सदाचार के कारण ही मानव सर्वत्र शोभा पाता है। हमें स्वामी विवेकानन्द, लालबहादुर शास्त्री, कार्ल मार्क्स, मदर टेरेसा आदि महान सदाचारी विभूतियों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। हमें प्रण करना चाहिए कि हम सदा सदाचार को जीवन में अपनाकर स्वयं का, समाज का और देश का गौरव बढ़ाएंगे।

'भ्रष्टाचार' शब्द भ्रष्ट + आचार दो शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ है — बुरा आचरण। भ्रष्टाचार के समांतर शब्द हैं— अनाचार, दुराचार, दुष्ट आचरण, पतित व्यवहार, पापाचार, कदाचार, बेईमानी, बदनीयती। अत: वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक एवं अनुचित होता है, भ्रष्टाचार कहलाता है और न्याय व्यवस्था के नियमों के विरुद्ध जाकर अपना उल्लू सीधा करने के लिए अनुचित आचरण करने वाला भ्रष्टाचारी कहलाता है। कमीशन बाज़ी, काला बाज़ारी, अपना कर्त्तव्य न निभाना, तस्करों का साथ देना, रिश्वत लेना आदि सब कुछ भ्रष्टाचार के ही रूप हैं।

अत: हम स्वयं जागृत होकर तथा समाज में भ्रष्टाचार के विरुद्ध चेतना जगाकर तथा सदाचार का मार्ग अपनाकर ही इस भ्रष्टाचार रूपी राक्षस का अंत कर सकते हैं।

****

पाठ-16

डॉ. धर्मवीर भारती

लेखक परिचय—

डॉ. धर्मवीर आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और विचारक थे। उनका जन्म 25 दिसम्बर 1926 ई. में इलाहाबाद में हुआ था। वहीं से उन्होंने एम. ए. तथा पीएच. डी. की उपाधियां प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक रहे। वे साप्ताहिक पत्रिका 'धर्मयुग' के प्रधान संपादक भी रहे। उनकी साहित्यिक सेवाओं के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने सन् 1972 में उन्हें पदमश्री से अलंकृत किया गया।

रचनाएँ—भारती जी बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार थे। उन्होंने गद्य एवं पद्य दोनों क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उनकी रचनाओं का उल्लेख इस प्रकार है—

कहानी संग्रह—मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान, सांस की कलम से।

काव्य रचनाएं—ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी।

उपन्यास—गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा, ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन।

निबंध-संग्रह—कहनी—अनकहनी, ठेले पर हिमालय, पश्यंती।

काव्य-नाटक—अंधायुग

आलोचना—प्रगतिवाद : एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य।

विशेषताएँ—भारती जी के काव्य में दार्शनिक तत्व की प्रधानता है। निबंधों एवं कथा-साहित्य में उन्होंने सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सफल चित्रण किया है।

भाषा—भारती जी की भाषा प्राय: सरल है। उनके साहित्यिक निबंधों की भाषा का स्तर ऊँचा उठ गया है। अपने वर्णनात्मक निबंधों में उन्होंने सरल तत्सम शब्दों तथा छोटे-छोटे वाक्यों को प्राथमिकता दी है।

पाठ-परिचय—

इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक हमें पर्वत-सम्राट, हिम सम्राट हिमालय के करीब ले जाता है, जहां बादल नीचे उतर रहे थे और एक-एक कर नए शिखरों की हिम रेखाएँ अनावृत हो रही थी। लेखक द्वारा हिम दर्शन का वर्णन बहुत ही चित्रात्मक एवं आलंकारिक बन पड़ा है। लेखक ने प्राकृतिक सौंदर्य के एक अद्भुत रूप की ओर हमारा ध्यान खींचते हुए पर्वतीय स्थानों के प्रति आकर्षण जगाने का भी सफल प्रयास किया है।

ठेले पर हिमालय

ठेले पर हिमालय! खासा दिलचस्प शीर्षक है न ! और यकीन कीजिए, इसे बिलकुल ढूँढ़ना नहीं पड़ा। बैठे-बिठाए मिल गया। अभी कल की बात है, मैं एक पान की दुकान पर अपने अल्मोड़ावासी मित्र के साथ खड़ा था कि तभी ठेले पर बरफ़ की सिलें लादे हुए बरफ़ वाला आया। ठंडी, चिकनी, चमकती बरफ़ से भाप उड़ रही थी। वे क्षणभर उस बरफ़ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए-खोए से ही बोले, ''यही बरफ़ तो हिमालय की शोभा है।'' और तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया—ठेले पर हिमालय।

सच तो यह है कि सिर्फ़ बरफ़ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हम लोग कौसानी गए थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी। कोसी से एक सड़क अल्मोड़ा चली जाती है, दूसरी कौसानी।

कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता! पानी का कहीं नाम-निशान नहीं, सूखे-भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाए हुए टेढ़े-मेढ़े रास्ते। कोसी पहुंचे तो सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे।

कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी! हरी-भरी! एक के बाद एक बस स्टैंड पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दुकाने और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी-नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुज़रती थी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिल्कुल उजड़ा-सा गाँव और बरफ़ का तो कहीं नाम-निशान नहीं। ऐसा लगा जैसे हम ठगे गए। बस से उतरते समय मैं बहुत खिन्न था।

बस से उतरा ही था कि जहां का तहां पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने के घाटी में। पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो बास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफ़ेद-सफ़ेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जाने वाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँ। आँखों से लगा लूँ।

अकस्मात हम एक दूसरे ही लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और न निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए।

धीरे–धीरे मेरी निगाह ने इस घाटी को पार किया और जहां ये हरे खेत, नदियाँ और वन, क्षितिज के धुँधलेपन में, नीले कोहरे में घुल जाते थे, वहां पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास अनुभव किया। इसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं। कुछ देर उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात फिर एक हलका–सा विस्मय का धक्का मन को लगा।

इन धीरे–धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन चीज़ है जो अटल है। यह छोटा–सा बादल के टुकड़े सा, और कैसा अजब रंग है इसका। न सफ़ेद, न रुपहला, न हलका नीला...पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या ? बरफ़ तो नहीं है। हाँ जी! बरफ़ नहीं है तो क्या है ? और बिजली–सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वत सम्राट हिमालय है। इन बादलों ने उसे ढाँप रखा है, वैसे वह जो सामने है, इसका एक कोई छोटा–सा बाल स्वभाव वाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा, ''बरफ़! वह देखो!''

शुक्ल जी, सेन और अन्य सभी ने देखा, पर अचानक वह फिर लुप्त हो गया। लगा, उसे झील–शिखर जान किसी ने अंदर खींच लिया। खिड़की से झाँक रहा है, कहीं गिर न पड़े।

पर उस एक क्षण के हिम–दर्शन ने हममें जाने क्या भर दिया था। सारी खिन्नता, निराशा और थकावट, सब छूमंतर हो गई। हम सब व्याकुल हो उठे। अभी ये बादल छंट जाएँगे और फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा—निरावृत। असीम सौंदर्यराशि हमारे सामने अभी–अभी अपना घूँघट धीरे से खिसका देगी और...और तब.... ? और तब... ? सचमुच मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था।

डाक बंगले के खानसामे ने बताया कि आप लोग खुशकिस्मत हैं साहब! आपसे पहले 14 टूरिस्ट आए थे। हफ़्ते भर पड़े रहे, बरफ़ नहीं दिखी। आज तो आपके आते ही आसार खुलने के हो रहे हैं।

सामान रख दिया गया। पर सभी बिना चाय पिए सामने के बरामदे में बैठे रहे और अपलक सामने देखते रहे। बादल धीरे-धीरे नीचे उतर रहे थे और एक-एक कर नए-नए शिखरों की हिम-रेखाएँ अनावृत हो रही थीं।

और फिर सब खुल गया। बाई ओर से शुरू होकर दाई ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिम शिखरों की ऊबड़-खाबड़, रहस्यमयी, रोमांचक शृंखला। हमारे मन में उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थीं, अगर बता पाता तो यह खरोंच, यह पीर ही क्यों रह गई होती ? सिर्फ़ एक धुँधला-सा संवेदन इसका अवश्य था कि जैसे बरफ़ की सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठंडी-ठंडी भाप लगती है, वैसे ही हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है।

सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघला केसर बहने लगा। बरफ़ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी। घाटियाँ गहरी पीली हो गई। अँधेरा होना लगा तो हम उठे। मुँह-हाथ धोने और चाय पीने लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो जिसे अंदर ही अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों।

दूसरे दिन घाटी में उतरकर मीलों चलकर हम बैजनाथ पहुंचे, जहां गोमती बहती है। गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों की छाया तैर रही थी। पता नहीं, उन शिखरों पर कब पहुँचूं, इसीलिए उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भर कर भेंटा, उसमें डूबा रहा।

आज भी उसकी याद आती है तो मन पिरा उठता है। कल ठेले पर बरफ़ को देखकर अल्मोड़े के मेरे मित्र जिस तरह स्मृतियों में डूब गए, उस दर्द को समझता हूँ। इसीलिए जब ठेले पर हिमालय की बात कह कर हँसता हूँ तो वह उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है। वे बरफ की ऊँचाइयां बार-बार बुलाती हैं, और हम हैं कि चौराहों पर खड़े, ठेले पर लदकर निकलने वाली बरफ़ को ही देखकर मन बहला लेते हैं।

शब्दार्थ

शीर्षक = वह शब्द जो विषय का परिचय कराने के लिए लेख के ऊपर उसके नाम के रूप में रहता है (हैडिंग) **यकीन** = विश्वास; **तत्काल** = तुरंत; **कौंधना** = चमकना; **कष्टप्रद** = दुख देने वाला; **सुडौल** = सुंदर बनावट वाला; **निर्जन** = जहां कोई न हो, एकांत; **ढाल** = उतार; **खिन्न** = दुखी, उदासीन; **स्तब्ध** = जो जड़ हो गया हो; **अंचल** = देश या प्रान्त का एक भाग; **गेरु** = एक तरह की लाल मिट्टी; **कतार** = पंक्ति; **बेसाख्ता** = हार्दिकता से; **निष्कलंक** = बेदाग़; **क्षितिज** = वह स्थान यहां धरती और आकाश मिलते दिखाई देते है; **विस्मय** = आश्चर्य; **हर्षातिरेक** = अत्यधिक

प्रसन्नता; **लुप्त** = छिपा हुआ, गायब; **निरावृत** = बिना ढका हुआ; **आसार** = लक्षण चिह्न; **अपलक** = लगातार, एकटक; **अनावृत** = खुला हुआ; **रोमांचक** = आश्चर्यजनक; **शृंखला** = वस्तुओं की क्रमानुसार माला; **संवेदन** = अनुभूति; **पिराना** = पीड़ा होना, दुख अनुभव करना;

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) लेखक कौसानी क्यों गये थे?

(2) बस पर सवार लेखक ने साथ-साथ बहने वाली किस नदी का ज़िक्र किया है ?

(3) कौसानी कहाँ बसा हुआ है?

(4) लेखक और उनके मित्रों की निराशा और थकावट किसके दर्शन से छूमंतर हो गयी ?

(5) लेखक और उनके मित्र कहाँ ठहरे थे?

(6) दूसरे दिन घाटी से उतर कर लेखक और उनके मित्र कहाँ पहुंचे ?

(7) बैजनाथ में कौन सी नदी बहती है ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

(1) लेखक को ऐसा क्यों लगा जैसे वे ठगे गये हैं?

(2) सबसे पहले बर्फ दिखाई देने का वर्णन लेखक ने कैसे किया है?

(3) खानसामे ने सब को खुशकिस्मत क्यों कहा?

(4) सूरज के डूबने पर सब गुमसुम क्यों हो गए थे ?

(5) लेखक ने बैजनाथ पहुंच कर हिमालय से किस रूप में भेंट की ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए—

(1) कोसी से कौसानी तक में लेखक को किन-किन दृश्यों ने आकर्षित किया ?

(2) लेखक को ऐसा क्यों लगा कि वे किसी दूसरे ही लोक में चले आए हैं?

(3) लेखक को 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक कैसे सूझा?

IV. निम्नलिखित में संधि कीजिए—

हिम + आलय	____________	सोम + ईश्वर	____________
हर्ष + अतिरेक	____________	वि + आकुल	____________

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए—

अच्छी किस्मत वाला	____________
चार रास्तों का समूह	____________
अपने में लीन	____________
जहां कोई न रहता हो	____________
जिसका कोई पार न हो	____________
जिसमें कोई कलंक न हो	____________

II. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

पहाड़	____________	सूरज	____________
धरती	____________	कमल	____________
मुँह	____________	नदी	____________
बादल	____________	हाथ	____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. यदि हिमालय न होता तो क्या होता ? इस विषय पर चर्चा कीजिए।
2. पहाड़, बरफ़, नदी, बादल, सीढ़ीनुमा खेत, घुमावदार रास्ते तथा हरियाली आदि शब्दों का प्रयोग करते हुए अपनी कल्पना से प्रकृति पर पाँच-छः पंक्तियां लिखें।
3. हम हर पल यात्रा करते है, कभी पैरों से तो कभी मन के पंखों पर—इस पर अपने विचार दीजिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. हिंदी यात्रा साहित्य के पितामह राहुल सांकृत्यायन जीवन पर्यंत दुनिया की सैर करते रहे। उनके यात्रा वृतांत लाइब्रेरी से लेकर पढ़िए।
2. छुट्टियों में आप घूमने जाते हो तो उस यात्रा के अनुभव को एक डायरी में लिखिए और कक्षा में बताइए।
3. यात्रा के दौरान एक कैमरा साथ रखिए तथा प्रकृति के दुर्लभ व अद्‌भुत चित्रों को अपने कैमरे में कैद कीजिए।

4. यात्रा के दौरान कैमरे से खींचे गए चित्रों को अपने कम्प्यूटर में अपलोड करना सीखिए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

नैनीताल—नैनीताल भारत के उत्तराखंड राज्य का एक प्रमुख पर्यटन नगर है। कुमाऊँ क्षेत्र में नैनीताल ज़िले का विशेष महत्त्व है। 'नैनी' शब्द का अर्थ है आँखें और 'ताल' का अर्थ है झील। झीलों का शहर नैनीताल उत्तराखंड का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच बसा यह स्थान झीलों से घिरा हुआ है। इनमें से सबसे प्रमुख नैनी झील है, जिसके नाम पर इस जगह का नैनीताल पड़ा है।

रानीखेत—रानी खेत भारत के उतराखंड राज्य के अल्मोड़ा ज़िले के अन्तर्गत एक प्रमुख पहाड़ी पर्यटन स्थल है। देवदार और बलूत के वृक्षों से घिरा रानीखेत बहुत ही रमणीक एक लघु हिल स्टेशन है। काठ गोदाम रेलवे स्टेशन से 85 कि. मी. की दूरी पर स्थित यह अच्छी पक्की सड़क से जुड़ा है।

अल्मोड़ा—अल्मोड़ा भारत के उत्तराखंड राज्य के कुमाऊँ का एक ज़िला है। नैनीताल से लगभग 70 कि. मी. दूर स्थित अल्मोड़ा एक रमणीक पर्यटन स्थल है। अल्मोड़ा अपनी सांस्कृतिक विरासत, हस्तकला, खानपान और वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है।

कौसानी—कौसानी उत्तराखंड राज्य के अल्मोड़ा ज़िले से 53 कि. मी. उत्तर में स्थित है। कौसानी भारत का खूबसूरत पर्वतीय पर्यटक स्थल है। यह बागेश्वर ज़िला में आता है। हिमालय की खूबसूरती के दर्शन कराता कौसानी पिगनाथ चोटी पर बसा है। यहां से बर्फ से ढके नंदा देवी पर्वत की चोटी का नज़ारा बड़ा भव्य दिखाई देता है। कोसी और गोमती नदियों के बीच बसा कौसानी भारत का स्विटज़रलैंड कहलाता है।

कोसी—अल्मोड़ा और फिर कौसानी जाते हुए साथ-साथ बहती नदी का नाम कोसी है। उत्तराखंड के अल्मोड़ा ज़िले के पट्टी बोरारू पल्ला के प्राकृतिक झरनों से कोसी निकलती है। यह पतली दुबली नदी संकीर्ण घाटियों के घुमावदार रास्तों के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए एक यात्री को कई खूबसूरत मंजर ज़रूर दिखा देती है। कोसी पट्टी बोरारू पल्ला से दक्षिण बहती सोमेश्वर की ओर बढ़ती है और वहां से दक्षिण पूर्व की ओर मुड़कर अल्मोड़ा पहुंचती है। फिर अपनी दिशा कई बार बदलने के बाद रामनगर के पास ही समाप्त हो जाती है।

गोमती—गोमती उत्तर भारत में बहने वाली एक नदी है। इसका उद्‌गम पीलीभीत ज़िले में माधोटान्डा के पास होता है। इसका बहाव उत्तर प्रदेश में 900 कि. मी. तक है। यह वाराणसी के निकट सैदपुर के पास गंगा में मिल जाती है।

बैजनाथ—बैजनाथ अल्मोड़ा ज़िला के उत्तराखंड में स्थित है। यह स्थान गोमती नदी के तट पर है। यह नागेश्वर ज़िले में गरुड़ के पास है। बैजनाथ में गोमती और गरुड़ गंगा बहती है। संगम के किनारे ही सन् 1150 का लगा हुआ मन्दिर समूह है जिनमें मुख्य मन्दिर भगवान शिव का है। बराबर में गोमती और गरुड़ गंगा का संगम एक छोटी सी झील का रूप ले चुका है।

ग्लेशियर (हिमानी)—

पृथ्वी की सतह पर गतिशील विशाल आकार के बर्फ राशि को ग्लेशियर (हिमनद या हिमानी) कहते हैं। प्राय: यह पर्वत के ऊपर निर्मित एक हिमखंड होता है जो पिघलने पर जल देता है। हिमालय में हज़ारों छोटे बड़े हिमनद है जो लगभग 3350 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में फैले हैं।

****

पाठ-17

डॉ. सुखविन्दर कौर बाठ

लेखिका परिचय—

डॉ. सुखविन्दर कौर बाठ का जन्म सन् 1962 में पंजाब के गुरदासपुर ज़िले के शेष 'छिछरेवाला' में हुआ। इन्होंने अपनी शिक्षा गांव से प्रारम्भ करके हिंदी में एम. ए. एम.फिल, पीएच. डी. अमृतसर तथा डी. लिट पटियाला में रहते हुए 2003 में अवध विश्वविद्यालय से की। हिंदी के साथ-साथ इन्होंने धर्म-अध्ययन विषय में भी एम. ए. की। इनके पिता सरहद के रक्षक होने के कारण अधिकतर बाहर ही रहते थे। फलत: इनमें साहित्यिक रुचि जगाने का कार्य इनकी माता ने किया। हिंदी साहित्य में शैक्षिक योग्यता पाने के बाद इन्होंने पंजाबी विश्वविद्यालय के पत्राचार विभाग के हिंदी सैल में प्राध्यापक का कार्य भार संभाला। पंजाब के ग्रामीण आँचल से संस्कारित होने के कारण इनका सीधा सम्बन्ध लोक भाषा, लोक-कथा, लोक गीत तथा लोक संस्कृति से है। 'पंजाब के संस्कारगत लोक-गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन' तथा 'पंजाबी लोकरंग' इसी आशय से लिखी गई इनकी पुस्तकें हैं। पंजाबी संस्कृति पर गहरी पकड़ को देखते हुए हिसार से निकलने वाली एक साहित्यिक पत्रिका 'पंजाबी संस्कृति' के लिए इन्हें अतिथि सम्पादक का भी गौरव प्रदान किया गया। इनका शोध- प्रबन्ध 'गुरु तेग बहादुर की वाणी: सन्दर्भ और विश्लेषण' नाम से प्रकाशित है। पंजाब के प्रसिद्ध कवि शिवकुमार बटालवी की रचना 'लूणा' का इन्होंने लिप्यंत्रण भी किया।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत पाठ में इन्होंने 'श्री गुरु नानक देव जी' के जीवन चरित्र का वर्णन किया है। गुरु जी एक ऐसे अवतारी पुरुष, सन्त, विचारक थे, जिन्होंने मध्यकाल के कालिमापूर्ण वातावरण में पंजाब के लोगों को सच्चे ज्ञान व मार्ग का उपदेश देकर उनका उद्धार किया था। उनका समूचा जीवन ही हमारे लिए आदर्शों का स्रोत है। उनके व्यवहार में जहाँ मानवता झलकती थी, वहीं उनके उपदेशों में साक्षात् करुणशील भगवान के दर्शन होते थे। उनकी वाणी में जहाँ जीवन, समाज और अध्यात्म की विस्तृत व्याख्या मिलती है, वहीं विभिन्न रंगों के माध्यम से अदभुत संगीत रस की मधुर ध्वनि झंकृत होती है। प्रस्तुत निबन्ध उनके जीवन और वाणी की अद्‌भुत विशेषताओं पर प्रकाश डालता है।

श्री गुरु नानक देव जी

जब गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ तब भारत अनेक प्रकार के कुसंस्कारों से ग्रस्त था। तत्कालीन समाज की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दशा बहुत शोचनीय थी। उस समय के राजा शोषक का रूप धारण कर चुके थे। समाज अनेक जातियों, सम्प्रदायों और धर्मों में विभाजित हो चुका था। धार्मिक तौर पर पाखण्डों, अन्धविश्वासों तथा कर्मकाण्डों का बोलबाला था। ऊँच-नीच और छुआछूत का ज़हर भारतीय लोगों की नस-नस में फैल चुका था तथा राजाओं की लूटमार से जनता कराह रही थी। ऐसे समय में लोगों की पुकार सुनकर परमात्मा ने दुनिया का सुधार करने के लिए गुरु नानक देव जी को इस संसार में भेजा जिस पर भाई गुरदास जी लिखते हैं :

'सुनी पुकार दातार प्रभु,
गुरु नानक जगि माहि पठाया।'

ऐसी महान विभूति पंजाब के भक्ति आन्दोलन के प्रवर्त्तक तथा पतनोन्मुखी तत्कालीन समाज के पथ-प्रदर्शक गुरु नानक देव जी का जन्म ज़िला शेख़ूपुरा के तलवंडी (अब पाकिस्तान) गाँव में कार्तिक पूर्णिमा को सन् 1469 ई. में हुआ था। तलवंडी गाँव अब ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध है। जन्म से क्षत्रिय, प्रकृति से भ्रमणशील, कर्म से शील, चतुर्दिक ज्ञान के भण्डार, उदात्त भावनाओं के सागर, आध्यात्मिक पथ के अविचलित पथिक गुरु नानक देव महान व्यक्तित्व लेकर संसार में आए।

आपके पिता का नाम मेहता कालू व माता का नाम तृप्ता था। आपकी बहन बीबी नानकी जी भी महान व्यक्तित्व वाली थी। आप बचपन से ही आध्याात्मिक विचारों के थे। आपका बचपन हरियाली से घिरी हुई तलवंडी में बीता। सात वर्ष की आयु में आपको गाँव की पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा गया परन्तु आपने आध्यात्मिक विचारों से अपने अध्यापक को प्रभावित किया। आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार आपको एक मौलवी सैयद हुसैन और एक पण्डित बृजनाथ ने भी शिक्षा दी। आपने छोटी आयु में ही पंजाबी, फ़ारसी, हिंदी, संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर लिया। परन्तु ये शिक्षा आपके लिए अल्प थी। इसलिए और ज्ञान के लिए आपने अनुभवी साधुओं से मेल-मिलाप बढ़ाया, ताकि मन की पिपासा शान्त हो सके। मेहता कालू ने आपको दुनियावी तौर पर जीविकोपार्जन के कार्यों में जैसे कृषि कार्य, व्यापार आदि में लगाने का यत्न किया परन्तु आप इन कार्यों में प्रवृत्त न होकर साधुओं की सेवा में लीन रहे। लगभग अठारह वर्ष की आयु तक आप अनेक मतों के साधुओं की संगति में रहे। इन साधुओं की संगति से आपको भारतीय धर्म, सम्प्रदाय और भारतीय धर्म ग्रन्थों व शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त हुआ। इसी काल में आपने भूखे साधुओं को 20 रुपए से खाना खिलाकर सच्ची सेवा व सच्चा सौदा किया। इसी समय में भाई मरदाना (रबाबी) से आपका स्नेह पैदा हुआ जो सदा आपके साथ रहा। आपके पिता जी ने आपकी दुनियावी विरक्ति देखते हुए आपको सांसारिकता में बाँधने के लिए आपकी शादी माता सुलखनी से कर दी। आपके दो सन्तानें हुईं। एक का नाम लखमीचन्द व दूसरे का श्री चन्द रखा गया। आपने कुछ समय तक सुलतानपुर में शाही मोदी खाने में नौकरी भी की।

उस समय सुलतानपुर, सूबे की राजधानी होने के कारण धार्मिक व सांस्कृतिक सरगर्मियों का केन्द्र था। यहां रहकर आपको हुकूमत की ज़्यादती तथा तत्कालीन समाज के धार्मिक आडम्बरों, कर्मकांडों, अन्ध-विश्वासों आदि की गहरी जानकारी प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त आपने भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक अवस्थाओं से गिरे हुए बनावटी जीवन को नज़दीक से देखा। इन सब चीज़ों को देखकर आप बहुत विचलित हुए। एक सुबह (1499 ई.) आप वेंई नदी में स्नान करने गए। इस घटना को इतिहास में 'वेंई प्रवेश' के नाम से जाना जाता है। वहाँ आप तीन दिन अलोप रहे। इस समय आपको निरंकार परमात्मा से संसार का कल्याण करने के लिए चारों दिशाओं की यात्रा करने का संदेश प्राप्त हुआ। तीन दिन बाद प्रकट होकर आपने यह वाक्य बोला, 'न कोई हिन्दू न मुसलमान'। इसके साथ ही आप संसार के उद्धार के लिए यात्राओं पर चल पड़े। भाई गुरदास जी आपके इस फैसले के लिए इस प्रकार लिखते हैं—

'चढ़िया सोधन धरत लुकाई'

आपने 1499 ई. से लेकर 1522 ई. के समय में पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं में चार उदासियां (यात्राएँ) कीं। इन यात्राओं में आपने क्रमश: आसाम, मक्का मदीना, लंका, तथा ताशकन्द तक की यात्राएँ कीं। इसी समय के दौरान ही आपने करतारपुर नगर बसाया। यात्राओं के

दौरान ही आपने कई स्थानों पर उचित उपदेश द्वारा भटके हुए जनमानस को सुरुचिपूर्ण मार्ग दर्शाया। कश्मीर विद्वानों का गढ़ था। आपने वहाँ के पण्डितों से विचार-विमर्श किया। हिमालय पर योगियों के केन्द्र थे। आपने उनको सही धर्म सिखाया तथा योगी सिद्धों को जन-सेवा का उपदेश दिया। हिन्दुस्तान में घूमते समय आपका अनेक पीरों-फकीरों, सूफी-संतों के साथ भी तर्क-वितर्क हुआ। मौलवी व मुसलमानों को आपने सही रास्ता दिखाया। इस्लामी देशों में यात्राओं द्वारा आपने 'सांझे' धर्म की शिक्षा दी। लगभग बाईस वर्ष आप घूम फिर कर धर्म का प्रचार करते रहे। आपने अपने जीवन के अंतिम वर्ष करतारपुर में गृहस्थ जीवन में रहते हुए खेतीबाड़ी करने के साथ-साथ धार्मिक उपदेश देते हुए व्यतीत किये।

गुरु नानक देव जी ने बहुत सहज व सरल भाषा में लोगों को प्रभावित किया। अपनी सहजता से ही उन्होंने कुतर्कों को काटा। यह बहुत टेढ़ा कार्य था। सहज धर्म की व्याख्या उन्होंने सहजता से ही की। कहीं भी पांडित्य का प्रदर्शन नहीं किया—

सब महि जोति जोति है सोइ।
तिस दै चानणि सब महि चानण होइ।

ऐसी ही मीठी भाषा से उन्होंने सबको प्रभावित किया।

गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन धार्मिक आडम्बरों तथा संकीर्णताओं को दूर करने के लिए लोगों के सामने वास्तविक सत्य को प्रस्तुत कर दिया, जिससे संकीर्ण विचार और आडम्बर अपने आप ही ढीले पड़ गए।

गुरु जी के जीवन से सम्बन्धित बहुत सी करामातों का वर्णन भी मिलता है जैसे मक्का मदीना में मक्का को घुमा देना, वली कंधारी का अहंकार तोड़ना, गिरते हुए पहाड़ को हाथ का पंजा लगाकर गिरने से रोक देना, कड़वे रीठे मीठे कर देना आदि।

गुरु नानक देव जी एक महान कवि तथा संगीताचार्य भी थे। आपकी वाणी सिक्खों के धार्मिक ग्रन्थ 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में संकलित है। 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में 974 पद और श्लोक गुरु नानक देव जी द्वारा रचित हैं। इनमें विभिन्न विषयों की चर्चा है। मुख्यत: गुरु जी द्वारा सृष्टि, जीव और ब्रह्म के सम्बन्ध, अकाल पुरुष का रूप और स्थान, माया का बन्धन काटने की प्रेरणा, निर्विकार एवं शुद्ध मन से प्रभु का नाम जपने का प्रोत्साहन आदि विषय लिए गये हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में मुख्य 31 राग हैं और उनमें उन्नीस का प्रयोग गुरु नानक देव जी ने अपनी वाणी में किया है। गुरु नानक देव जी के प्रात: कालीन प्रार्थना के लिए 'जपुजी' की रचना की, जो आज सिक्ख सिद्धान्तों का सार कही जा सकती है। इसके अतिरिक्त आपकी अन्य रचनाओं में, आसा की वार, सिद्ध गोसटि, पट्टी,

दक्खनी ऊँकार, पहरे-तिथि, बारह माह, सुचज्जी-कुचज्जी, आरती आदि प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनके अतिरिक्त गुरु नानक देव जी की अन्य वाणी श्लोक, पद, अष्टपदियाँ, सोहले, छन्द आदि के रूप में हैं।

'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में प्रत्येक कवि की अपनी अलग शैली है, परन्तु गुरु नानक देव जी की वाणी शैली पक्ष से बिल्कुल अद्‌भुत विशेषताएँ लिए हुए है। गुरु नानक देव जी के प्रत्येक वाक्य के पीछे उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व झलकता है, जो उनकी शैली को बिल्कुल अनूठी बना देता है। अपने समय के कर्मकांडों, बहुदेवोपासना को देखते हुए आपने एक परमेश्वर की पूजा करने का उपदेश दिया।

अन्त में कहा जा सकता है कि विश्व को एक नवीन दृष्टिकोण, जो सांसारिक संकीर्णताओं और पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष और नफरत से अछूता था, देने के कारण गुरु नानक देव जी विश्व विख्यात सुधारक कहलाए। गुरु नानक देव जी का प्रेम, समानता, सरलता आदि का उपदेश ही उस एक बड़े धर्म का बीज बना जो आगे चलकर सिक्ख धर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सन् 1539 में आप ज्योति-ज्योत समा गए।

शब्दार्थ

कुसंस्कार = बुरी आदत; **शोचनीय** = चिंताजनक; **शोषण** = शोषण करने वाला, बेगार लेने वाला; **छुआछूत** = अस्पृश्यता; **नस-नस** = प्रत्येक हिस्से में; **पतनोन्मुखी** = विनाश, पतन, गिरावट की ओर; **चतुर्दिक** = चारों ओर; **उदात्त भावना** = उच्च भावना; **अविचलित** = अटल; **जीविकोपार्जन** = जीवन-व्यापन हेतु किया जाने वाला व्यवसाय; **प्रवृत्त** = लगना; **विचलित** = डांवाडोल; **उद्धार** = कल्याण; **सुरुचिपूर्ण** = मनभावना (मन को अच्छा लगने वाला) उचित सद्‌मार्ग; **सांझा धर्म** = मानव धर्म; **कुतर्क** = नीचा दिखाने के लिए की गई अतार्किक बात; **सहज धर्म** = सरल, आडम्बर, विधि निषेधों से रहित (मुक्त) धर्म; **पांडित्य** = विद्वता, ज्ञानी; **संकीर्ण** = छोटी सोच; **शैली** = बात कहने का ढंग, तरीका, पद्धति-विशेष।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखिति प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए—

1. गुरु नानक देव जी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

2. गुरु नानक देव जी के माता और पिता का क्या नाम था ?
3. गुरु नानक देव जी ने छोटी आयु में ही कौन-कौन सी भाषाओं का ज्ञान अर्जित कर लिया था?
4. गुरु नानक देव जी को किस व्यक्ति ने दुनियावी तौर पर जीविकोपार्जन संबंधी कार्यों में लगाने का प्रयास किया था ?
5. गुरु नानक देव जी को दुनियादारी में बाँधने के लिए इनके पिता जी ने क्या किया ?
6. गुरु नानक देव जी के कितनी सन्तानें थीं और उनके नाम क्या थे ?
7. इस्लामी देशों की यात्रा के दौरान आपने किस धर्म की शिक्षा दी ?
8. 'श्री गुरु ग्रन्थ' साहिब में गुरु नानक देव जी के कुल कितने पद और श्लोक हैं ?
9. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में मुख्य कितने राग हैं ?
10. गुरु नानक देव जी के जीवन के अन्तिम वर्ष कहाँ बीते ?
11. गुरु नानक देव जी के जन्म के संबंध में भाई गुरदास जी ने कौन-सी तुक लिखी ?
12. गुरु नानक देव जी पढ़ने के लिए किन-किन के पास गए ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए—

1. साधुओं की संगति में रहकर गुरु नानक देव जी ने कौन-कौन से ज्ञान प्राप्त किए ?
2. गुरु नानक देव जी ने यात्राओं के दौरान कौन-कौन से महत्त्वपूर्ण शहरों की यात्रा की?
3. गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन भारतीय जनता को किन बुराइयों से स्वतन्त्र कराने का प्रयास किया ?
4. गुरु नानक देव जी की रचनाओं के नाम लिखें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात वाक्यों में उत्तर दीजिए—

1. जिस समय गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ उस समय भारतीय समाज की क्या स्थिति थी?
2. गुरु नानक देव जी ने अपनी यात्राओं के दौरान कहाँ-कहाँ और किन-किन लोगों को क्या उपदेश दिए?
3. गुरु नानक देव जी की वाणी की विशेषता अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित की संधिविच्छेद कीजिए :

परमात्मा ____________ पतनोन्मुखी ____________

जीविकोपार्जन	____________	संगीताचार्य	____________
देवोपासना	____________	परमेश्वर	____________

II. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण शब्द बनाइए :—

शब्द	विशेषण	शब्द	विशेषण
समाज	____________	धर्म	____________
अर्थ	____________	परस्पर	____________
राजनीति	____________	पंडित	____________
सम्प्रदाय	____________	भारत	____________
अध्यात्म	____________	पंजाब	____________

III. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :—

महान	____________	सरल	____________
सहज	____________	हरा	____________
समान	____________	शांत	____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

* गुरु नानक देव जी आपके लिए किस तरह प्रेरणा स्रोत हैं। अपने विचार प्रकट कीजिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. सिक्ख धर्म के सभी गुरुओं के जीवन चरित की जानकारी जुटाइए।
2. हिन्दू, सिक्ख, मुस्लिम, ईसाई, जैन और बौद्ध आदि धर्मों के चिह्न बनाइए।
3. विभिन्न धार्मिक स्थानों जैसे स्वर्ण मन्दिर, आनन्दपुर साहिब, हरिद्वार, मथुरा, मक्का मदीना आदि की जानकारी एकत्रित कीजिए ।
4. श्री गुरु नानक देव जी की यात्राओं से सम्बन्धित स्थानों को विश्व मानचित्र पर दर्शाइए।
5. सिक्ख धर्म के पाँच चिह्नों पर चर्चा कीजिए।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

ननकाना साहिब— ननकाना साहिब पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में स्थित एक शहर है। इसका वर्तमान नाम सिक्खों के पहले गुरु गुरु नानक देव जी के नाम पर पड़ा है। इसका पुराना नाम 'राय-भोई-दी-तलवंडी' था। यह सिक्खों का पवित्र ऐतिहासिक स्थान है। यह विश्व भर के सिक्खों का

प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है।

सुल्तानपुर लोधी—सुल्तानपुर लोधी पंजाब के कपूरथला ज़िले में एक पुराना शहर है। गुरु नानक देव यात्रा पर जाने से पहले सुल्तानपुर लोधी रहते थे। इस शहर में उनकी बहन बीबी नानकी और उनके पति भाई जय राम रहते थे।

मक्का—मक्का इस्लाम का पवित्रतम शहर है जो हज तीर्थ यात्रा के लिए प्रसिद्ध है। हर साल करीब 3 लाख हज यात्री मक्का आते है। 7वीं शताब्दी में इस्लामी पैगम्बर मोहम्मद ने शहर में इस्लाम की घोषणा की थी। 966 से लेकर 1924 तक मक्का शहर का नेतृत्व स्थानीय शरीफ द्वारा किया जाता था। 1924 में यह सउदी अरब के शासन के अधीन आ गया। आधुनिक मक्का शहर सउदी अरब के मक्काह प्रांत की राजधानी है।

मदीना या अल-मदीना—जिसे सम्मानपूर्वक 'अल-मदीना-अल मुनवरा' (अर्थ : चमकदार मदीना) बुलाया जाता है। सउदी अरब के पश्चिमी हिजाज क्षेत्र में स्थित एक शहर है जो मदीना प्रान्त की राजधानी भी है। यह इस्लाम में पवित्रतम दूसरा शहर है और इस्लामी पैगम्बर मोहम्मद की दफन गाह है और यह उनके हिज रह (विस्थापित होने) के बाद उनके घर आने के कारण ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है।

श्री लंका—श्री लंका दक्षिण एशिया में हिन्द महासागर के उत्तरी भाग में स्थित एक द्वीपीय देश है। भारत के दक्षिण में स्थित इस देश की दूरी भारत से मात्र 31 किलोमीटर है। 1972 तक इसका नाम सीलोन था, जिसे 1972 में बदल कर लंका तथा 1978 में इसके आगे सम्मानसूचक शब्द 'श्री' जोड़कर श्रीलंका कर दिया गया। श्री लंका का सबसे बड़ा नगर कोलम्बो समुद्री परिवहन की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है।

ताशकन्द—ताशकन्द उजवेकिस्तान की राजधानी है यह ताशकेंत प्रान्त की राजधानी भी है।

गुरु ग्रन्थ साहिब—आदि ग्रन्थ सिक्ख धर्म का प्रमुख धर्मग्रन्थ है इसे 'गुरु ग्रन्थ साहिब' भी कहते है। इसका संपादन सिक्ख धर्म के पाँचवे गुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी ने किया। गुरु ग्रन्थ साहिब जी का पहला प्रकाश 16 अगस्त 1604 को हरिमन्दिर साहिब अमृतसर में हुआ। 1705 में दमदमा साहिब में दशमेश पिता गुरु गोबिन्द सिंह जी ने गुरु तेग बहादुर जी के 116 शब्द जोड़कर इसको पूर्ण किया गया। इसमें कुल 1430 पृष्ठ हैं। गुरु ग्रन्थ साहिब में मात्र सिक्ख गुरुओं के उपदेश नहीं है वरन् 30 अन्य हिन्दू और मुस्लिम भक्तों की वाणी भी सम्मिलित हैं।

जपुजी साहिब—आदि गुरु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की मूल वाणी 'जपुजी' जगतगुरु श्री गुरु नानक देव जी द्वारा जनकल्याण हेतु उच्चरित की गई अमृतवाणी है। इसमें ब्रह्मज्ञान का अलौकिक ज्ञान प्रकाश है।

****

(एकांकी भाग)

पाठ-18

उपेन्द्रनाथ अश्क

लेखक परिचय—

हिंदी-साहित्य को आधुनिक भावबोध से जोड़ने वाले रचनाकारों में उपेन्द्रनाथ अश्क का विशिष्ट स्थान है। इनका जन्म 14 दिसंबर, 1910 ई. को जालंधर में हुआ। ये एक सफल कहानीकार व उपन्यासकार ही नहीं, एक प्रतिभाशाली एकांकीकार भी हैं। यूँ तो इनके एकांकियों की विषयवस्तु जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से ली गई है परन्तु 'पारिवारिक जीवन' इनका मुख्य क्षेत्र है। अभिनेयता के प्रति अश्क जी काफी सजग रहे हैं, इसी उद्‌देश्य से उन्होंने लंबे 'रंग-निर्देश' भी दिए हैं, इसीलिए इनके प्राय: सभी एकांकी सफलतापूर्वक मंच पर खेले जा सकते हैं। इन एकांकियों के संवाद भी सादगी, स्पष्टता व चुस्ती लिए हुए होते हैं। पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय भी अश्क जी उनके भीतरी तनाव को अभिव्यक्ति देने का सफल प्रयास करते हैं।

रचनाएँ

एकांकी संग्रह- 'देवताओं की छाया में', 'चरवाहे 'पक्का गाना', 'पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ', 'अन्धी गली', 'साहब को जुकाम है', 'पच्चीस श्रेष्ठ एकांकी' आदि।

नाटक - 'छठा बेटा', 'कैद', उड़ान 'जय-पराजय', 'अंजो दीदी', 'अलग-अलग रास्ते', 'पैंतरे', 'अंधी गली' आदि।

उपन्यास - 'सितारों के खेल', 'गिरती दीवारें', 'गर्म राख', बड़ी-बड़ी आँखें', 'पत्थर-अलपत्थर', 'शहर में घूमता आइना', 'एक नन्हीं कन्दील'।

कहानी-संग्रह- 'पिंजरा', 'जुदाई की शाम का गीत', 'दो धारा', 'छींटे', 'काले साहब', 'कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल', 'सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ', 'पलँग' आदि।

पाठ-परिचय

'सूखी डाली' एकांकी अश्क जी के 'चरवाहे' एकांकी-संग्रह में संकलित है। यह एक पारिवारिक एकांकी है जिसमें संयुक्त परिवारों के भीतरी सच की एक प्रामाणिक झांकी अश्क जी ने प्रस्तुत की है। नई पीढ़ी की नए विचारों वाली सुशिक्षिता बहू पारंपरिक ढंग से जीवन नहीं बिताना

चाहती। केवल घर के रोज़मर्रा के कामों में समय बिताने की अपेक्षा वह पढ़ाई-लिखाई में भी समय बिताना चाहती है। वह घर को नए तरीके से, ज़्यादा सलीके से सजाना-सँवारना चाहती है, मगर उसकी इस इच्छा को उसका 'अभिमान' कह कर सब उसका विरोध करते हैं। दादाजी के रूप में अश्क जी ने एक ऐसा पात्र गढ़ा है जो समझदार है और नई बहू के मनोविज्ञान को समझता है। यही नहीं, इस पात्र के प्रयासों से घर में फिर से सुख-शांति स्थापित होती है और संयुक्त परिवार विघटित होते-होते बच जाता है। नए-पुराने की टक्कर तथा घर-घर में होने वाले संघर्ष को थोड़े-से हास्य, थोड़े-से व्यंग्य व थोड़ी-सी करुणा के साथ अश्क जी ने बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति दी है। एकांकी का अंतिम वाक्य सर्वाधिक प्रभावशाली है और समूची एकांकी के सार-तत्त्व को पाठक के सामने रख कर उसे मंत्र-मुग्ध कर देता है। पाठक यह सोचने पर विवश हो जाता है कि एक सुखी परिवार वही है जिसका प्रत्येक सदस्य सुखी हो।

सूखी डाली

पुरुष पात्र	स्त्री पात्र
दादा (मूलराज)	बेला (छोटी बहू)
कर्मचन्द	छोटी भाभी (बेला की सास, इन्दु की माँ)
परेश	मँझली भाभी
भाषी	बड़ी भाभी
	मँझली बहू
	बड़ी बहू
	रजवा (मिश्रानी)
	पारो

पहला दृश्य

[मानव प्रगति के इस युग में, जब व्यक्तिगत-स्वतंत्रता को अराजकता की हद तक महत्त्व दिया जाता है और तानाशाही को 'सभ्य' समाज में अत्यन्त निन्दनीय माना जाता है, दादा मूलराज अपने समस्त कुटुम्ब को एक यूनिट (unit) बनाये, उस पर पूर्ण रूप से अपना प्रभुत्व जमाये, उस महान वट की भांति अटल खड़े हैं, जिसकी लम्बी-लम्बी डालियाँ उनके आँगन में एक बड़े छाते की भाँति धरती को आच्छादित किये हुए, अगणित घोंसलों को अपने पत्तों में छिपाये, वर्षों से तूफ़ानों और आँधियों का सामना किये जा रही हैं।

वर्षों इस वट की संगति में रहने के कारण दादा वट ही की भांति महान दिखाई देते हैं। आयु की ७२ सदियाँ देख लेने पर भी उनका शरीर अभी तक नहीं झुका और उनकी सफेद दाढ़ी वट की लम्बी-लम्बी दाढ़ियों की भाँति उनकी नाभि को छूती हुई मानो धरती को छूने का प्रण किये हुए है।

दादा का बड़ा लड़का 1914 के महायुद्ध में सरकार की ओर से लड़ते-लड़ते काम आया था। इसके बदले में सरकार ने दादा को एक मुरब्बा ज़मीन दी थी। किन्तु दादा सरकार की इस कृपा ही पर संतुष्ट नहीं रहे। अपने साहस, परिश्रम, निष्ठा, दूरदर्शिता और रुसूख से उन्होंने एक के दस मुरब्बे बनाये। उनके दो बेटे और पोते, ज़मीन, फ़ार्म, डेयरी और चीनी के उस कारखाने के काम की देखभाल करते हैं, जो उन्होंने हाल ही में अपनी ज़मीन में लगाया है। सबसे छोटा पोता अभी-अभी नायब तहसीलदार होकर इसी कस्बे में लगा है और कुछ ही दिन हुए उसका विवाह लाहौर के एक प्रतिष्ठित तथा सम्पन्न कुल की सुशिक्षित लड़की से हुआ है।

उनके छोटे पोते परेश का नायब तहसीलदार और उनकी छोटी पतोहू का सुशिक्षित होना, अपने में दो महत्त्वपूर्ण बातें हैं। पहली से सरकारी हलकों में उनकी प्रतिष्ठा और भी बढ़ जाने की

सम्भावना है; गाँव में उनका और भी आदर होने लगा है, किन्तु साथ ही दूसरी से उनके परिवार के लिए संकट भी उपस्थित हो गया है। उनकी तीनों बहुऐं (जो घर में बड़ी भाभी, मँझली भाभी और छोटी भाभी के नाम से पुकारी जाती हैं, सीधी-साधी महिलाएँ हैं। उन सब में उनकी पोती इन्दु ही (जिसने प्राइमरी स्कूल तक बड़ी सफलतापूर्वक शिक्षा पायी है) सबसे अधिक पढ़ी-लिखी समझी जाती है। घर में उसकी चलती भी खूब है और दादा अपनी इस पोती से प्यार भी बहुत करते हैं, किन्तु इस ग्रेजुएट छोटी पतोहू के आने से (जो घर में छोटी बहू के नाम से पुकारी जाती है) कुटुम्ब के इस तालाब में इस प्रकार लहरें-सी उठने लगी हैं जैसे स्थिर पानी में बड़ी-सी ईंट गिरने से पैदा हो जाती हैं।

पर्दा इमारत के बरामदे में खुलता है। वास्तव में यह बरामदा घर की स्त्रियों का रांदेवू (Rendezvous) सम्मिलन-स्थल है। दिन भर इसमें कोलाहल मचा रहता है। कभी घर की स्त्रियाँ यहाँ धूप लेती हैं; कभी चरखे कातती हैं; कभी गप्पें उड़ाती हैं ; कभी लड़ती-झगड़ती हैं और कुछ न हो तो स्नानागार में पड़े कपड़े ही धोया करती हैं। यह स्नानागार बाहर के अहाते में है—दायीं दीवार के कोनों में जो दरवाज़ा है, उसके साथ ही बाहर को। रसोई आदि से निबट कर दोपहर के बाद, घर की दो-चार स्त्रियाँ प्राय: रोज़ वहाँ कपड़े धोया करती हैं और निरंतर 'धप-धप' की ध्वनि इस बरामदे में गूँजा करती हैं।

सामने दीवार के बायें कोने में एक छोटी-सी गैलरी है, जिसमें (दोनों ओर आमने-सामने) पहले मँझली बहू और बड़ी बहू के कमरे हैं (जिनकी खिड़कियाँ बरामदे में खुलती हैं) फिर मँझली भाभी और बड़ी भाभी के। छोटी भाभी का कमरा (जो इन्दु की माँ और छोटी बहू बेला की सास है) दायीं ओर है। छोटी बहू का कमरा ऊपर की छत पर है और बायीं दीवार में सीढ़ियाँ बनी हैं, जो ऊपर को जाती हैं।

सामने की दीवार के साथ गैलरी के इधर को दो तख़्त बिछे हैं। दो-एक चारपाइयाँ दीवार के साथ खड़ी हैं। एक पुराने फ़ैशन की बड़ी आराम-कुर्सी भी सामने की दीवार के साथ लगी हुई है।

दोपहर होने में अभी काफ़ी देर है। अत: बरामदे में अपेक्षाकृत निस्तब्धता है ; केवल गैलरी से स्त्रियों के जल्दी-जल्दी बातें करने की आवाज़ आ रही है। पर्दा उठाने के कुछ क्षण पश्चात इन्दु तेज़-तेज़ गैलरी से निकलती है और बिफरी हुई-सी दायीं तरफ़ के तख्त पर बैठ जाती है। उसके पीछे-पीछे बड़ी बहू शान्त स्वभाव से चलती हुई आती है। इन्दु की भृकुटी चढ़ी है और बड़ी बहू शान्त और गम्भीर है।)

बड़ी बहू— **(इन्दु के कन्धों पर अपने दोनों हाथ रखते हुए)** आखिर कुछ कहो भी। क्या कह दिया छोटी बहू ने?

इन्दु— (चुप)

बड़ी बहू— क्या कह दिया उसने जो इतनी बिफरी हुई हो ?

इन्दु— (क्रोध से) और क्या ईंट मारती।

बड़ी बहू— कुछ कहो भी .....

इन्दु— मेरे मायके में यह होता है, मेरे मायके में यह नहीं होता **(हाथ मटका कर)** अपने और अपने मायके के सामने तो वह किसी को कुछ गिनती ही नहीं। हम तो उसके लिए मूर्ख, गँवार और असभ्य हैं।

बड़ी बहू— **(आश्चर्य से)** क्या ......

इन्दु— बैठक के बाहर मिश्रानी खड़ी रो रही थी। मैंने पूछा तो पता चला कि बहू रानी ने उसे काम से हटा दिया है।

बड़ी बहू— **(उसी आश्चर्य से)** काम से हटा दिया है! भला क्या दोष था उसका?

इन्दु— दोष यह था कि उसे काम करना नहीं आता।

बड़ी बहू— **(स्तम्भित)** काम करना नहीं आता?

इन्दु— उस बेचारी ने कहा भी कि मैं दस-पाँच दिन में सब कुछ सीख जाऊँगी। भला कै दिन हुए हैं मुझे आपका काम करते? फिर बहू रानी न मानीं। झाड़न उन्होंने उसके हाथ से छीन लिया और कहा कि हट तू, मैं सब कुछ स्वयं कर लूँगी। अभी तक इतना ही सलीका नहीं कि बैठक कैसे साफ़ की जाती है, पाँच-दस दिन में तू क्या सीख जाएगी!

बड़ी बहू— सलीका नहीं ....?

इन्दु— मैंने जा कर समझाया कि भाभी दस साल से यही मिश्रानी घर का काम कर रही है। घर भर की सफ़ाई करती है, बर्तन मलती है, कपड़े धोती है। जाने तुम्हारा कौन-सा ऐसा काम है जो इससे नहीं होता। और फिर मैंने समझाया कि भाभी नौकर से काम लेने की भी तमीज़ होनी चाहिए।

बड़ी बहू— हाँ और, क्या .....

इन्दु— झट से बोली, 'वह तमीज़ तो बस आप लोगों को है,' मैंने कहा, 'तुम तो लड़ती हो। मैं तो सिर्फ़ यह कहना चाहती थी कि नौकर से काम लेने का भी ढंग होता है।' इस पर तुनक कर बोलीं, और वह ढंग मुझे नहीं आता, मैंने नौकर जो यहीं आकर देखे हैं।' फिर कहने लगी, 'काम लेने का ढंग उसे आता है, जिसे काम की परख हो। सुबह-शाम झाड़ू देने मात्र से कमरा साफ़ नहीं हो जाता। उसकी बनावट-सजावट भी कोई चीज़ है। न जाने तुम लोग किस तरह इन फूहड़ नौकरों से गुज़ारा कर लेती हो। मेरे मायके में तो ऐसी गँवार मिश्रानी दो दिन छोड़, दो घड़ी भी न टिकती।'

बड़ी बहू— कहीं उसने ये सब बातें?

इन्दु— और कैसे कही जाती हैं—जब से आयी है यही तो सुन रहे हैं—नौकर अच्छे हैं तो उसके मायके में, खाना-पीना अच्छा है तो उसके मायके में,कपड़े पहनने का ढंग आता है तो उसके मायके वालों को, हम तो न जाने कैसे जी रहे हैं!

(नाक-भौं चढ़ा कर) यहाँ के लोगों को खाना-पीना; पहनना-ओढ़ना कुछ नहीं आता। हमारे नौकर गँवार, हमारे पड़ोसी गँवार, हम स्वयं गँवार ......

बड़ी बहू— (चकित-विस्मित सिर्फ़ सुनती है।)

इन्दु— मैंने भी कह दिया, 'क्या बात है भाभी तुम्हारे मायके की? एक नमूना तुम्हीं जो हो। एक मिश्रानी और ले आती तो हम गँवार भी उससे कुछ सीख लेते।'

[दायीं दीवार के कमरे से छोटी भाभी (इन्दु की माँ और छोटी बहू बेला की सास) प्रवेश करती हैं। उनके पीछे-पीछे रजवा है।]

छोटी भाभी— क्यों इन्दु बेटी, क्या बात हुई—यह रजवा रो रही है, कोई कड़वी बात कह दी छोटी बहू ने इसे?

इन्दु— मीठी वे कब कहती हैं जो आज कड़वी कहेंगी?

छोटी भाभी— क्या आज तुम कैसी जली-कटी बातें कर रही हो छोटी बहू से झगड़ा हो गया है क्या?

रजवा— **(भरे हुए गले से)** माँ जी, आज उन्होंने बरबस मुझे काम से हटा दिया ......इतने बरस हो गये आपकी सेवा करते, कभी किसी ने इस प्रकार अनादर न किया था। मुझे तो माँ जी आप अपने पास ही रखिए। मैं आज से उनका काम न करने जाऊँगी।

छोटी भाभी— यह तो बच्ची है मिश्रानी, तू भी उसके साथ बच्ची हो गयी।

इन्दु— **(मुँह बिचका कर)**—जी हाँ, बच्ची है! रोटी को चोची कहती है। उसे तो बात ही करनी नहीं आती **(क्रोध से)** अपने मायके के सामने तो वह किसी को कुछ समझती ही नहीं और गज भर की जबान ......

बड़ी बहू— बात यह है छोटी माँ कि छोटी बहू को हमारा खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना कुछ भी पसन्द नहीं। उसे हमसे, हमारे पड़ोस से, हमारी हर बात से घृणा है।

छोटी भाभी—(चिन्ता से) फिर कैसे चलेगा? हमारे घर में तो मिल कर रहना, बड़ों का आदर करना, अपने घर की रूखी-सूखी को दूसरों की चुपड़ी से अच्छा समझना, नौकरों पर दया और छोटों पर.....

(मँझली बहू बाहर से हँसती हुई प्रवेश करती है।)

मँझली बहू— खिहि....खिहि.....खिहि......हा-हा-हा....

इन्दु— क्या बात है भाभी, जो हँसी के मारे लोट-पोट हुई जा रही हो।

मँझली बहू—खिहि....खिहि....(**हाथ-पर-हाथ मारती है**) ....हा-हा-हा-हा-हा ....

(गैलरी से मँझली भाभी और बड़ी भाभी प्रवेश करती हैं।)

दोनों— क्या बात है जो आज इतनी 'हा-हा, ही-ही' हो रही है?

इन्दु— यह भाभी हैं कि बस हँसे जा रही हैं, कुछ बताती ही नहीं।

मँझली बहू—मैं कहती हूँ.....

(फिर हँस पड़ती है।)

बड़ी बहू— आखिर कुछ कहो भी।

मँझली बहू—आज भाई परेश की वह गत बनी कि बेचारा अपना-सा मुँह ले कर रह गया ....खिहि.....खिहि....हा-हा-हा-हा—हा-हा-हा.....

छोटी भाभी—ओ हो, तुम्हारी हँसी भी बहू .....

मँझली बहू—मैं क्या करूँ, मैं हँसी के मारे मर जाऊँगी, छोटी माँ! अभी-अभी छोटी बहू ने परेश की वह गत बनायी। बेचारा अपना-सा मुँह ले कर दादा जी के पास भाग गया।

बड़ी बहू इन्दु—(बात क्या हुई?)

मँझली बहू—मैं तो उधर ऊपर सामान रखने गयी थी। बहुत-सी बातें तो मैंने सुनी नहीं, बहुत सी समझ भी नहीं पायी। अंग्रेज़ी में गिटपिट कर रहे थे। छोटी बहू का पारा कुछ—चढ़ा हुआ था। इतना मालूम हुआ कि परेश स्नान कर कमरे में गया तो बहू रानी ने सारा फर्नीचर निकाल कर बाहर रख दिया था। परेश ने कारण पूछा। छोटी बहू ने कहा, 'मैं इन टूटी-फूटी कुर्सियों और गले-सड़े फर्नीचर को अपने कमरे में न रहने दूँगी। परेश कहने लगा, हमारे बुज़ुर्ग .....बात काट कर छोटी बहू ने कहा हमारे बुज़ुर्ग तो नंगे-बुच्चे जंगलों में घूमा करते थे तो क्या हम भी उनका अनुकरण करें (हँसती है) और जो सामान पड़ा था वह भी उठा कर बाहर फेंक दिया।

इन्दु— फिर....फिर....

मँझली भाभी—छोटी बहू .....

छोटी भाभी—यह तो ....

मँझली बहू—परेश ने कहा, 'इस फ़र्नीचर पर हमारे दादा बैठते थे, पिता बैठते थे, चाचा बैठते थे। उन लोगों को कभी शर्म नहीं आयी, उन्होंने कभी फर्नीचर के गले-सड़े होने की शिकायत नहीं की। अब यदि मैं जा कर इसे रखने पर आपत्ति करूँगा तो दादा कहेंगे, तहसीलदार होते ही लड़के का सिर फिर गया है। (**हाथ मटका कर**) न भाई ? ....

मँझली और बड़ी भाभी हाँ ठीक ही तो कहा परेश ने।

छोटी भाभी— परेश....मेरा बेटा भला ....

मँझली भाभी—तब बहू ने कहा, 'तो न कहो—मैं तो इस गले-सड़े सामान को कमरे के पास तक न फटकने दूँगी। इस बेडौल फ़र्नीचर से तो नीचे धरती पर चटाई बिछा कर बैठना-लेटना अच्छा है। मेरे मायके में ....'

इन्दु— **(क्रोध से)** बस, उसे तो अपने मायके की पड़ी रहती है चौबीसों घड़ी।

मँझली बहू—और छोटी बहू ने अपने मायके के बड़े-बड़े कमरों और उनके बहुमूल्य फ़र्नीचर का बखान किया **(हँसती है)** और महाशय परेश की एक भी न चलने दी। बेचारे भीगी बिल्ली बने दादा जी के पास चले गये—खि-हि-हि.....खि-हि-हि...

(हँसती है। दूसरी भी उसके साथ हँसती हैं।)

मँझली बहू—मैं तो चुपके से चली आयी। **(मुँह बिचका कर)** ज़बान है छोटी बहू की या कतरनी...और फिर जब अंग्रेज़ी बोलने लगती है तो कुछ समझ में ही नहीं आता। परेश बेचारा तो अपना-सा मुँह लेकर रह जाता है। जाने तहसीलदार कैसे बन गया।

इन्दु— बस ज़बान-ही-ज़बान है। बात तो जब है, जब काम भी हो। एक काम को कहो तो सौ नाक-भौंह चढ़ाती है। दादा जी ने चार कपड़े धोने को कहा था, वे तो पड़े गुसलखाने में गल रहे हैं।

छोटी भाभी—गुसलखाने में गल रहे हैं ! तू उठा क्यों न लायी उन्हें, जा भाग कर उठा ला और फटक कर आँगन में डाल दे। मैं बहू को समझा दूँगी—इस तरह कैसे चलेगा ....**(और भी चिन्ता से)** .....परेश ने समझाया नहीं उसे ?

इन्दु— परेश की तो जैसे वहाँ बड़ी सुनवाई होती है।

मँझली बहू—वह मलमल के थान और अबरों की बात याद है न—अभी तक पड़े हुए हैं। कह-कह कर हार गये परेश महाशय। बहूरानी ने हाथ तक न लगाया उन्हें और वे शर्म के मारे ले जाते नहीं दादा जी के पास। कचहरी में होंगे तहसीलदार, घर में तो अपराधियों से भी गये-बीते हो जाते हैं।

(हँसती है, इन्दु और बड़ी बहू भी हँसती हैं।)

छोटी भाभी—पर दादा जी के कपड़े ...

बड़ी भाभी—तुम भी बहन बस....क्या इतना पढ़-लिख कर छोटी बहू कपड़े धोयेगी !

इन्दु— क्यों ! उसके हाथ नमक-मिट्टी के हैं जो गल जायँगे ?

(बाहर से दादा के हुक्का गुड़गुड़ाने की आवाज़ आती है)

छोटी भाभी—तुम चलो इन्दु—कपड़े फटक कर अहाते में डाल दो। शायद उन्हें ज़रूरत हो। माँगेंगे

तो .....मैं बहू को समझा दूँगी।

(पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

[वही बरामदा। दायीं ओर के तख्त पर बिस्तर बिछा हुआ है। दीवार के साथ तकिया लगा है। दादा आराम से तकिये के सहारे बैठे हुक्का पी रहे हैं। उनका मँझला लड़का कर्मचन्द पास बैठा उनके पाँव दाब रहा है। हुक्का पीते-पीते दादा बच्चों को बाहर अहाते में खेलते हुए देख रहे हैं। स्नान-गृह से नल के जल्दी-जल्दी चलने की आवाज़ आ रही है। शायद कोई बच्चा उसे चला रहा है, क्योंकि कर्मचन्द की भृकुटी तन गयी है।

[पर्दा उठने के कुछ क्षण बाद तक नल के चलाये जाने और हुक्के के गुड़गुड़ाने की आवाज़ आती है। फिर ....]

कर्मचन्द— **(क्रोध से)** बस करो जगदीश! क्या खट-खट लगा रखी है? ज़रा आराम करने दो। अभी-अभी खाना खा कर बैठे हैं कि तुम......

दादा— **(हुक्के की नली को हटा कर उधर देखते हुए)** नहीं, नहीं, खेलने दो बच्चों को। **(फिर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)** बच्चे....(**हँसते हैं)** बरगद की पूरी डाल लाकर आँगन में लगा दी और उसे पानी दे रहे हैं। ....(**हँसते हैं) ....**नहीं जानते कि पेड़ से टूटी डाली जल देने से नहीं पनपती। **हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, फिर नली छोड़कर कर्मचन्द से** मैं कहा करता हूँ न बेटा, कि एक बार पेड़ से जो डाली टूट गयी, उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता न आयेगी और हमारा यह परिवार बरगद के इस महान पेड़ ही की भाँति है....

कर्मचन्द— लेकिन शायद अब इस पेड़ से एक डाली टूट कर अलग हो जाये।

दादा— **(चिन्ता से)** क्या कहते हो? कौन अलग हो रहा है?

कर्मचन्द— शायद छोटा अलग हो जाये।

दादा— परेश? पर क्यों—उसे क्या कष्ट है?

कर्मचन्द— कष्ट उसे तो नहीं, छोटी बहू को है।

दादा— मुझे किसी ने बताया तक नहीं। यदि कोई शिकायत थी तो उसे वहीं मिटा देना चाहिए था। हल्की-सी खरोंच भी, यदि उस पर तत्काल दवाई न लगा दी जाय, बढ़ कर एक बड़ा घाव बन जाती है और वही घाव नासूर हो जाता है, फिर लाख मरहम लगाओ, ठीक नहीं होता।

कर्मचन्द— मैं अच्छी तरह तो नहीं जानता, पर जहाँ तक मेरा विचार है, छोटी बहू के मन में दर्प

की मात्रा ज़रूरत से कुछ ज़्यादा है। मैंने वह मलमल के थान और रज़ाई के अबरे ला कर दिये थे न? और सबने तो रख लिये, पर सुना है कि छोटी बहू को पसन्द नहीं आये। अपने मायके के घराने को शायद वह इस घराने से बड़ा समझती है और इस घर की घृणा को दृष्टि से देखती है।

दादा— बेटा, बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं—बड़प्पन तो मन का होना चाहिए। और फिर बेटा, घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। बहू तभी पृथक होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जायगी। लेकिन यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी सारी घृणा धुँधली पड़ कर लुप्त हो जायगी। **हुक्का गुड़गुड़ाते हैं** और महानता भी बेटा, किसी से मनवायी नहीं जा सकती, अपने व्यवहार से अनुभव करायी जा सकती है। ठूँठ वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपनी महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में वह ऐसे पत्ते नहीं लाता, जिनकी शीतल-सुखद छाया मन के सारे ताप को हर लें और जिसके फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध हमारे प्राणों में पुलक भर दे।

भाषी— **(बाहर से)** दादा जी, मल्लू और जगदीश ने मेरा वट का पेड़ उखाड़ दिया **(मल्लू से लड़ते हुए चीख-चीख कर)** क्यों उखाड़ा तूने मेरा पेड़—क्यों उखाड़ा.... ?

दादा— पेड़ ? ...**(हँसते हैं।)** ...बच्चे!! **(हँसते हैं।) ठहरो** भाषी, लड़ो मत बेटा। जाना कर्मचन्द ज़रा हटाना दोनों को .....

[कर्मचन्द जाता है। — दादा फिर हुक्के की नली मुँह से लगा लेते हैं- परेश नीची नज़र किये प्रवेश करता है]

दादा— आओ बेटा परेश, वह मैंने एक दो कपड़े भेजे थे न, तनिक देखना बहू ने उन्हें धो डाला है या नहीं। धो डालें हों तो ले आओ ज़रा। फिर मैं तुम से बात करूँगा।

परेश— मैं लज्जित .....

दादा— नहीं धुले तो फिर धुल जायँगे बेटा? आओ, इधर बैठो मेरे पास। मैं तो तुम्हें बुलाने ही वाला था। आओ, आओ, इधर आकर बैठो!

[फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं परेश चुपचाप आकर दादा के पास बैठ जाता है।]

दादा— **(हुक्का गुड़गुड़ाना छोड़कर)** मुझे कर्मचन्द से अभी पता चला है कि तुम्हारी बहू को रज़ाई के अबरे और मलमल का थान पसन्द नहीं आया। तुम्हारे ताऊ ठहरे पुराने समय के आदमी, वे नये फ़ैशन की चीज़ें खरीदना क्या जानें? तभी तो मैं कहता हूँ कि छोटी बहू को बाज़ार ले जाओ। वह स्वयं अपनी पसन्द की चीज़ें ले आयेगी।

परेश— जी....

दादा— (**हुक्के का कश लगा कर**) और मैं सोचता था कि अब बहू आ गयी है तो इन्दु का दहेज तैयार करने में भी सहायता देगी।

परेश— जी मैं इसलिए आया था .....

दादा— हाँ, हाँ कहो, झिझकते क्यों हो!

परेश— जी बात यह है कि इस घर में बेला का मन नहीं लगता।

दादा— इतनी जल्दी उसका मन कैसे लग सकता है बेटा। अभी कै दिन हुए हैं उसे आये ? और फिर बेटा मन लगता नहीं, लगाया जाता है।

परेश— वह मन लगाती ही नहीं।

दादा— तो हमें उसका मन लगाना चाहिए। वह एक बड़े घर से आयी है। अपने पिता की इकलौती बेटी है। कभी नाते-रिश्तेदारों में रही नहीं। इस भीड़-भाड़ से वह घबराती होगी। इतने कोलाहल से वह ऊब जाती होगी। हम सब मिल कर इस घर में उसका मन लगायेंगे।

परेश— उसे कोई भी पसन्द नहीं करता। सब उसकी निन्दा करते हैं। अभी मेरे पास माँ, बड़ी ताई, मँझली ताई, बड़ी भाभी, मँझली भाभी, इन्दु, रजवा—सब आयी थीं। सब उसकी शिकायत करती थीं—ताने देती थीं कि तू उसके हाथ बिक गया है, तू उसे कुछ नहीं समझाता और इधर वह उन सब से दुखी है, कहती है—सब मेरा अपमान करती हैं, सब मेरी हँसी उड़ाती हैं। मेरा समय नष्ट करती हैं। मैं ऐसा महसूस करती हूँ, जैसे मैं परायों में आ गयी हूँ। अपना एक भी मुझे दिखायी नहीं देता....आप मेरी मानें तो ......

दादा— हाँ, हाँ, कहो ......

परेश— बात यह है कि वह आज़ादी चाहती है। दूसरों का हस्तक्षेप, दूसरों की आलोचना उसे पसन्द नहीं ......!

(दादा सिर्फ हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)

— वह समझती है कि वह छोटी बहू है, इसलिए सब उसकी आलोचना करना, उसे आदेश देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। **(दादा सिर्फ हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)**

— और वह अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है। जहाँ उसे कोई रोकने वाला न हो। जहाँ वह स्वेच्छापूर्वक अपना जीवन बिता सके। वह चाहती है कि यदि बाग़ वाला मकान उसे मिल जाय तो वह सुख और शान्ति से रहे। मैं तो सदैव यहाँ बना न रहूँगा, कुछ ही दिनों की बात है। मेरी तब्दीली हो जायगी। उतने दिन को यदि आप बाग़ वाले मकान का प्रबन्ध कर दें! ....उसकी सारी उद्‌विग्नता, अन्यमनस्कता और तिलमिलाहट में उसकी यही इच्छा काम करती है। अब मैं उसे कैसे समझाऊँ। ......

दादा— **(कुछ क्षण चुपचाप हुक्का गुड़गुड़ाते हैं फिर) हूँ (खाँसते हैं)** यों तो इस झंझट से छुटकारा पाने का सरल उपाय यही है कि तुम्हें बाग़ वाला मकान दे दिया जाय— वह पड़ा भी बेकार है और अभी मैं उससे किसी तरह का काम लेने का भी इरादा नहीं रखता, पर तुम जानते हो बेटा, मेरे जीते जी यह असम्भव है। **(हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)** मैं जब अपने परिवार का ध्यान करता हूँ तो मेरे सामने वट का महान पेड़ घूम जाता है। **(खाँस कर)** शाखाओं, पत्तों, फलों, फूलों से भरा-पूरा (**हुक्के से एक-दो कश लगाते हैं)** और फिर मेरी आँखों के सामने इस महान वृक्ष की डालियाँ टूटने लगती है और वह केवल ठूँठ रह जाता है। (**स्वर धीमा, जैसे अपने-आप से कह रहे हैं)** और मैं सिहर उठता हूँ। न बेटा, मैं अपने जीते जी यह सब न होने दूँगा। तुम चिन्ता न करो। मैं सबको समझा दूँगा—घर में किसी को तुम्हारी पत्नी का तिरस्कार करने का साहस न होगा। कोई उसका समय नष्ट न करेगा। ईश्वर की अपार कृपा से हमारे घर सुशिक्षित, सुसंस्कृत बहू आयी है तो क्या हम अपनी मूर्खता से उसे परेशान कर देंगे? तुम जाओ बेटा, किसी प्रकार की चिन्ता को मन में स्थान न दो। मैं कोई-न-कोई उपाय ढूँढ़ निकालूँगा। तुम विश्वास रखो, वह अपने-आपको परायों से घिरी अनुभव न करेगी। उसे वही आदर-सत्कार मिलेगा, जो उसे अपने घर में प्राप्त था।

परेश— जैसा आप उचित समझें!

दादा— और देखो, तुम स्वयं भी इस बात का ध्यान रखना, तुम्हारी किसी बात से उसका मन न दुखे। कोई भी ऐसी बात न करो जिसे वह अपना अपमान समझे।

(परेश चलने को होता है।)

— और तुम उसे साथ ले जाकर नगर से सब चीज़ें खरीद लाओ। शेष की चिन्ता तुम न करो, मैं कोई-न-कोई रास्ता अवश्य निकाल लूँगा।

परेश— जैसी आपकी इच्छा!

[चला जाता है। (दादा फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं, हुक्के के कश लम्बे हैं जो इस बात के साक्षी हैं कि दादा पीने के साथ-साथ सोच भी रहे हैं।]

(जैसे अचानक उन्हें कुछ सूझ गया हो) रजवा ....रजवा ..... **(फिर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं), रजवा नहीं आती, फिर आवाज़ देते हैं।** रजवा ....रजवा .....

रजवा— (दूर से) जी आयी।

(भागती हुई-सी प्रवेश करती है।)

दादा— छोटी बहू के अतिरिक्त सबको यहाँ भेज दो। कहो कि सब काम छोड़कर मेरे पास आयें (**रजवा जाने लगती है)** और सुनो, कोई न रहे—सब से कहना, कुछ क्षण के लिए अवश्य यहाँ आ जायें।

रजवा— जी मैं अभी जा कर सब से कहे देती हूँ।

[चली जाती है (दादा फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं) नल से किसी के कपड़े धोने की आवाज़ आने लगती है। दादा और भी लम्बे-लम्बे कश लेते हैं। धीरे-धीरे कुटुम्ब के प्राणी आने लगते हैं। बालक और युवक तख्त और चारपाइयों पर बैठते हैं और स्त्रियाँ बरामदे के फर्श पर। रजवा उनके बैठने के लिए मोढ़े और चटाइयाँ ला कर बिछा देती हैं।

दादा— **(हुक्का पीना छोड़कर)** इन्दु कहाँ है, वह नहीं दिखती?

[वे एक नज़र सबको देखते हैं। रजवा स्नान-गृह को जाने वाले दरवाज़े में जा कर इन्दु को आवाज देती है। कपड़े धोने का स्वर, जो इस बीच निरन्तर आता रहा है, सहसा बन्द हो जाता है।]

इन्दु— **(बाहर से)** जी आयी **(अन्दर आ कर)** मैं नल पर थी, कपड़े धो रही थी।

दादा— **(एक कश खींच कर)** बैठो बेटा, **(एक दो क्षण तक हुक्का गुड़गुड़ाते हैं)** मैंने

आज तुम सब को एक विशेष अभिप्राय से बुलाया है। मुझे यह सुन कर बड़ा दु:ख हुआ कि छोटी बहू का मन यहाँ नहीं लगा।

इन्दु— दादा जी ....

दादा— इन्दु बेटा, मुझे अपनी बात कह लेने दो। मुझे यह जान कर बड़ा दु:ख हुआ कि छोटी बहू का मन यहाँ नहीं लगा। दोष उसका नहीं, दोष हमारा है। वह एक बड़े घर की बेटी है, अत्यधिक पढ़ी-लिखी है। सबसे आदर पाती और राज करती आयी है। यहाँ वह केवल छोटी बहू है। यहाँ उसे हर एक का आदर करना पड़ता है ; हर एक से दबना पड़ता है ; हर एक का आदेश मानना पड़ता है—यहाँ उसका व्यक्तित्व दब कर रह गया है। मुझे यह बात पसन्द नहीं **(कुछ क्षण हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, फिर)** बेटा, बड़ा वास्तव में कोई उमर से या दर्जे से नहीं होता। बड़ा तो बुद्धि से होता है, योग्यता से होता है। छोटी बहू उम्र में न सही, अक्ल में हम सब से निश्चय ही बड़ी है। हमें चाहिए कि उसकी बुद्धि से, उसकी योग्यता से लाभ उठायें। मेरी इच्छा है कि उसे यहाँ वही आदर-सत्कार मिले, जो उसे अपने घर में प्राप्त था। सब उसका कहना मानें, उससे परामर्श लें और मैं प्रसन्न हूँगा, यदि उसका काम भी तुम लोग आपस में बाँट लो और उसे पढ़ने-लिखने का अधिक अवसर दो। उसे अनुभव ही न हो कि वह किसी दूसरे घर में, किसी दूसरे वातावरण में आ गयी है।

(फिर कुछ क्षण हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, फिर)

बेटा यह कुटुम्ब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों से ही पेड़ पेड़ है और डालियाँ छोटी हो चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को बढ़ाती हैं। मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूट कर पृथक हो जाय। तुम सदैव मेरा कहा मानते रहे हो। बस यही बात मैं कहना चाहता हूं............ यदि मैंने सुन लिया---- किसी ने छोटी बहू का निरादर किया है, उसकी हँसी उड़ायी है या उसका समय नष्ट किया है तो इस घर से मेरा नाता सदा के लिए टूट जायेगा............ अब तुम सब जा सकते हो।

(फिर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं सब धीरे-धीरे जाने लगते हैं।)

दादा— इन्दु बेटा और मँझली बहू, तुम ज़रा बैठो।

(दोनों के अतिरिक्त शेष सब चले जाते हैं।)

— मँझली बहू, तुम अपनी हँसी को उन लोगों तक ही सीमित रखो बेटा, जो उसे सहन कर सकते हैं। बाहर के लोगों पर घर में बैठ कर हँसा जा सकता है, किन्तु घर के लोगों को तब तक हँसी का निशाना बनाना ठीक नहीं, जब तक वे पूर्णतया घर का अंग न बन जायें और इन्दु बेटी, तेरी छोटी भाभी बड़ी बुद्धिमती, सुशिक्षित और सुसंस्कृत है ; तुझे

उसकी हँसी उड़ाने, उससे लड़ने-झगड़ने के बदले उसका आदर करना चाहिए, उससे ज्ञानार्जन करना चाहिए। तुम दोनों को मैं इस विषय में विशेष कर सावधान रहने का आदेश करता हूँ।

(फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं, फिर क्षण भर बाद)

— अब तुम जाओ और देखो फिर मुझे शिकायत का अवसर न मिले **(गला भर आता है।)** यहीं मेरी आकांक्षा है कि सब डालियाँ साथ-साथ बढ़ें, फलें-फूलें, जीवन की सुखद, शीतल वायु के परस से झूमें और सरसायें! पेड़ से अलग होने वाली डाली की कल्पना ही मुझे सिहरा देती है।

(फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं)

इन्दु— हमें क्षमा कीजिए दादा जी, हमारी ओर से आपको कभी शिकायत का अवसर न मिलेगा।

(दोनों चली जाती हैं। दादा कुछ देर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, फिर बाहर खेलते हुए बच्चों को आवाज़ देते हैं:)

— भाषी, मल्लू, जगदीश, आओ आज तुम्हें एक कहानी सुनायें .....बरगद के पेड़ और उसके बच्चों की।

भाषी— **(दरवाज़े से झाँक कर)** हम सुन चुके हैं। हम नहीं आते। हर बार वही कहानी ...

मल्लू— चाँद राजा, तारा राजा की सुनाओ तो आयें। हर बार वही कहानी **(नकल उतार कर)** एक था बरगद का पेड़ .....

(हँसते हुए अदृश्य हो जाते हैं)

दादा— **(हँसते हैं)** यही कहानी—यही कहानी तो कुटुम्ब का, समाज का, राष्ट्र का निर्माण करती है। यही तो जीवन की सुदृढ़ विशाल और महान बनाती है!

(हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं)

[पर्दा गिरता है]

तीसरा दृश्य

[वही बरामदा—दोनों तख्त पूर्ववत खिड़कियों के बराबर रखे हुए हैं और चारपाइयाँ वैसे ही दीवार के साथ लगी खड़ी हैं। हाँ, कुर्सी मध्य में आ गयी है—लगता है कि इस पर छोटी बहू—बेला—बैठी धूप ले रही थी—किन्तु पर्दा उठने पर वह आकुलता से बरामदे में घूमती हुई दिखायी देती है—एक हाथ में पुस्तक

है, मानो पढ़ते-पढ़ते कोई विचार आ जाने से उठकर घूमने लगी हो।]

बेला— **(अपने आप से)** मैं किन लोगों में आ गयी हूँ ? ये कैसे लोग हैं .....कुछ भी समझ नहीं पाती .....आज कुछ हैं कल कुछ ...पल में तोला, पल में माशा ...इनका कुछ भी तो पता नहीं चलता।

(फिर सोचती हुई धीरे-धीरे घूमती है।)

— गर्म होते हैं तो आग बन जाते हैं और नर्म होते हैं तो मोम से भी कोमल दिखायी देते हैं। आज जिस बात को बुरा कहते हैं, कल उसी की प्रशंसा करते हैं—मैं तो तंग आ गयी इन लोगों से।

[जा कर फिर कुर्सी पर बैठ जाती है और पुस्तक खोल लेती है। अन्दर गैलरी से उसकी सास, छोटी भाभी आती है।]

छोटी भाभी— तुम ठीक कहती थीं बेटी, इस रद्दी सामान से बैठक-बैठक नहीं, कबाड़ी का गोदाम दिखायी देती थी! सोचती थी कि यह सामान इतने दिनों से इस कमरे में पड़ा है, कुछ ऐसा बुरा भी नहीं और इस पर इतनी देर से सब बैठते आ रहे हैं, कहीं दादा जी बुरा न मानें ; पर अच्छा किया तुमने जो वह सब उठा दिया। मैंने परेश से कह दिया है—तुम उसके साथ जा कर अपनी रुचि का सामान खरीद लाओ। यह सब मैं रजवा से कह कर सुरेश के कमरे में भिजवा देती हूँ। कई बार निगोड़ी इन्हीं कुर्सियों के लिए मुझसे रूठ चुका है।

बेला— आप बैठिए माँ जी ....

छोटी भाभी— बस तुम बैठो बेटी। मैं तो यों ही तुम्हें इधर बैठे देख कर चली आयी। अनाज पड़ा है, उसे फटकना है ; मिर्चें पड़ी हैं, उन्हें कूटना है ; मक्खन कई दिनों का इकट्ठा हो गया है, उसका घी बनाना है—बीसों दूसरे काम हैं और दिन ढल रहा है। मैं सोचती थी, तुमने मेरी बात का बुरा न माना हो। वास्तव में बेटी, रजवा मेरे पास आ कर फूट-फूटकर रो दी। नौकरानी समझदार, विश्वसनीय और आज्ञाकारी है, किन्तु जो काम उसने कभी किया न हो, वह उससे किस प्रकार हो सकता है ?

बेला— **(उठती हुई)** आप बैठिए तो .....

छोटी भाभी— **(उसके कन्धों पर हाथ रख कर उसे बैठाते हुए)** बैठो-बैठो बेटा, कष्ट न करो। मैं तुम्हारा अधिक समय नष्ट न करूँगी। मैं तो केवल तुमसे उसकी सिफ़ारिश करने आयी थी। भावुक स्त्री है, जल्दी ही बात का बुरा मान जाती है। तुम यों करना कि ज्यों ही नया फर्नीचर आ जाये, अपने सामने लगवा कर रजवा को एक बार झाड़ना-बुहारना सिखा देना। फिर वह ग़लती नही करेगी, न हो तो कभी मुझे बता देना। मैं उसे समझा दूँगी।

बेला— नहीं, नहीं, आप ....

छोटी भाभी—तुम पढ़ी-लिखी समझदार हो बेटी, इसलिए तुमसे इतना कह दिया है। यों तुम न चाहो तो कोई दूसरा प्रबन्ध हो जायगा। तुम इस बात की तनिक भी चिंता न करो।

(चलने को उद्यत होती हैं।)

बेला— आप बैठिए तो सही ......

छोटी भाभी—नहीं, नहीं तुम अपना पढ़ो। मैं बेकार तुम्हारा समय नष्ट न करूँगी।

(चली जाती है।)

बेला— **(पुस्तक बन्द करके लम्बी साँस लेती हुई जैसे अपने-आप)** इन लोगों की कुछ भी तो समझ में नहीं आती। ये माँ जी एकदम कैसे बदल गयीं ? अभी परसों मुझे इसी रजवा के लिए डाँट रही थीं। इनका कुछ भी तो पता नहीं चलता।

[फिर पढ़ने लगती है। बड़ी बहू और मँझली भाभी बाहर के दरवाज़े से प्रवेश करती हैं]

मँझली भाभी—क्यों बेटी, अब रजवा कुछ काम सीख गयी है या नहीं ? **(ज़रा हँसती है।)** बुढ़िया है तो सयानी ....

बड़ी बहू— आपने इन्दु से ठीक ही कहा था। हमें वास्तव में काम की परख नहीं, पर अब ....

बेला— आइए इधर बैठिए, चारपाई सरका लीजिए।

मँझली भाभी—(वैसे ही खड़े-खड़े) मैंने एक अनुभवी नौकरानी खोज लाने के लिए कह दिया है, जो नये फैशन के बड़े घरों में काम कर चुकी हो। वास्तव में बहू, दादा जी पुराने नौकरों के हक में हैं—दयानतदार होते हैं और विश्वसनीय। हमारे पास पीढ़ी-दर-पीढ़ी काम करते आ रहे हैं। इस रजवा की सास भी यहीं काम करती थी, अब रजवा की बहू भी यहीं काम करती है, ...

बड़ी बहू— मैं कहती हूँ बहन जी, आप रजवा की बहू को ही अपने पास क्यों नहीं रख लेतीं ....उसकी उमर भी कम है और काम भी वह जल्दी सीख जायेगी।

बेला— **(अन्यमनस्क-सी)** नहीं, नये नौकर की आवश्यकता नहीं। रजवा काम सीख जाएगी। **(कुछ चिढ़ कर)** पर आप खड़ी क्यों हैं ?

मँझली भाभी—हम तुम्हारा हर्ज न करेंगी।

बेला— **(और भी चिढ़ कर)** मेरा कुछ हर्ज नहीं होता।

बड़ी बहू— हम आप से छोटी हैं, वर्ग में भी और बुद्धि में भी .....

बेला— **(रुआँसी आवाज़ में)** आप मुझे क्यों काँटों में घसीटती है.......आप मेरे साथ क्यों

परायों का-सा व्यवहार करती हैं ....

(उठ खड़ी होती है।)

बड़ी बहू— बैठिए-बैठिए, मँझली भाभी, आप भी बैठिए ......

बेला— मैं चलती हूँ.........

[रुलाई को रोक कर आँखों पर रूमाल रखे जल्दी-जल्दी चली जाती है।]

मँझली भाभी—(जैसे अपने-आप से) परायों का-सा.....

[बाहर से मँझली बहू के कहकहे की आवाज़ आती है—दूसरे क्षण वह इन्दु और पारो के कन्धे पर झूलती हुई बाहर के दरवाज़े से आती है।]

इन्दु— सच....... ?

मँझली बहू—(हँसी रोक कर) और क्या मैं झूठ कह रही हूँ? मैंने अपनी इन दो आँखों से देखा **(हँसती है)** मलावी ने सारी-की-सारी छत फावड़े से खोद डाली और बंसीलाल महाशय मुँह देखते रह गये।

(सब ठहाका मार कर हंस पड़ती हैं।)

बड़ी बहू— भाई मुझे भी बताना......क्या किया मलावी ने ....सच!

[मँझली बहू चारपाई बिछा कर उसमें धँस जाती है। उसकी एक ओर इन्दु और दूसरी ओर पारो बैठ जाती है। मँझली भाभी कुर्सी पर बैठती है और बड़ी बहू खड़ी रहती है।]

मँझली भाभी—(कुर्सी को ज़रा खिसका कर समीप होते हुए) बंसीसाल के सामने उखाड़ कर फेंक दी छत मलावी ने?

मँझली बहू—मैं कहती हूँ.....मुँह देखते रह गये बंसीलाल महाशय, ताका किये मुटर-मुटर.....

(सब ठहाका लगाती हैं।)

बड़ी बहू— अरे, कौन-सी छत खोद डाली यह तो बताओ .... ?

मँझली बहू—रसोई की और कौन-सी। अभी दो घण्टे भी नहीं हुए कि राज-मज़दूर छत डाल कर गये थे और बंसीलाल कारीगरों और मज़दूरों से निबट कर अभी दुकान को गया था कि आ गयी उधर से मलावी मारोमार करती। जाने किसने उसे जा कर बताया कि तुम्हारे देवर ने अपनी रसोई पर छत डाल ली है। ले के फावड़ा बस सारी-की-सारी छत उसने खोद डाली। बंसीलाल तब पहुँचे जब अन्तिम ईंट भी उखड़ चुकी थी। तब क्या-बस ताका किये मुटर-मुटर ......

(मंझली भाभी को छोड़ कर सब हँसती हैं।)

मँझली भाभी—पर बंसीलाल का लड़का ....

मँझली बहू—गली के सिरे पर खम ठोंक रहा है।

(जंघा पर हाथ मार कर बताती है कि कैसे खम ठोंक रहा है।)

इन्दु— खम ठोंक रहा है ?

मँझली बहू—(कहकहा लगाती है) सच, खम ठोंक रहा है और हवा ही में ललकार रहा है कि मैं डूयोढ़ी की छत खोद डालूँगा; मैं मकान को खंडहर बना दूँगा; मैं यह कर दूँगा; मैं वह कर दूँगा, और इधर मलावी कमर कसे खड़ी है कि आये जो माई का लाल है, रक्खे पाँव घर के भीतर ....

(सब हँसती हैं।)

इन्दु— **(अँगुली ओठों पर रख कर)** शश.....श....श भाभी आ रही हैं।

[हँसी एकदम बन्द हो जाती है। सन्नाटा छा जाता है। बेला एक हाथ में बन्द किताब थामे धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरती है।]

बेला— क्यों जीजी, आप चुप हो गयीं **(ज़रा हँसकर)** किस बात पर कहकहे लगाये जा रहे हैं ?

मँझली भाभी—(कुर्सी से उठ कर) योंही हँस रही थीं। आओ इधर कुर्सी पर बैठो।

बेला— नहीं-नहीं आप बैठिए। मैं इधर तख्त पर बैठ जाती हूँ।

मँझली बहू—(जल्दी से उठ कर) आइए-आइए, आप इधर बैठिए।

इन्दु और पारो—(दोनों चारपाई से उठ जाती हैं) आइए, आइए, आप इधर बैठिए।

[फिर नीरवता छा जाती है, जिसमें एक प्रकार की घुटन है। बेला बाहर की ओर चल पड़ती है।]

इन्दु— बैठिए भाभी जी, आप चली क्यों ?

बेला— **(मुड़कर क्लान्त तथा भारी स्वर में)** मैं तो उधर ही जा रही थी। यों ही जाते-जाते खड़ी हो गयी। मैं आपकी हँसी में बाधा नहीं डालना चाहती। **(खिन्न स्वर में हँसी के साथ)** आप हँसिए, ठहाके मारिए।

(चुपचाप अहाते के दरवाज़े से निकल जाती है।)

मँझली बहू—मैं कहती थी न कि इस ओर न आओ ? मेरी मुई आदत हुई हँसने की।

इन्दु— अब एक यही जगह थी बैठने को .....

मँझली बहू—हम हँसती हैं तो हँसती हैं दिल से और छोटी बहू के पढ़ने-लिखने में बाधा पड़ती है।

मैं कहती हूँ, दादा जी को यदि पता चल गया कि हमारे यहाँ बैठने से छोटी बहू के पढ़ने में खलल आता है तो वे .....

इन्दु— किन्तु यही एक जगह थी पर्दे वाली ....

मँझली बहू—तुम भूल गयीं, हमें ही तो दादा जी ने खास तौर पर सतर्क रहने को कहा था **(कहकहा लगा कर हँस पड़ती है।)** मैं कहती हूँ, चलो मेरे कमरे में।

इन्दु— मुझे तो दादा जी के कपड़े धोने हैं, मैं चली।

(जल्दी-जल्दी बाहर की ओर चली जाती है।)

मँझली भाभी—ठीक है। तुम लोग अब यहाँ इतना न बैठा करो **(बड़ी बहू से)** हम तो बहू गोदाम में जा रही थीं, चलो गेहूँ छँटवा लें। छोटी बहन तो कब की गयी हुई है। फिर तो अस्त हो जायगा दिन और महरियाँ चली जायेंगी।

बडी बहू— मैं तो फँस गयी मँझली की बातों में ....चलो....चलो।

(दोनों चली जाती हैं)

मँझली बहू—मैं कहती हूँ पारो, चल मेरे कमरे में। वहाँ चल कर बैठें।

पारो— **(चलते हुए)** मुझे तो जाना है भाभी। लल्ला आ गया होगा, न मिली तो चिल्लायेगा।

मँझली बहू ... (अपने-आप से) यह छोटी बहू तो उकाब-सी आ कर सबको डरा गयी!

[पारो चली जाती है। बाहर से बड़ी भाभी आती हुई दिखायी देती है। मँझली बहू भाग कर उसके पास जाती है।]

— बड़ी भाभी, सुनी तुमने मलावी की बात, खोद डाली उसने सारी-की-सारी छत।

(कहकहा लगाती है।)

बड़ी भाभी—मलावी ने छत खोद डाली? ....

मँझली बहू—(उसे अपने साथ लेकर कमरे की ओर जाती हुई) हाँ, हाँ, अभी राज-मजदूर छत बना कर गये थे कि आ गयी मलावी मारोमार करती .....

बड़ी भाभी—पर .....

मँझली बहू—चलो मेरे कमरे में। वहाँ चल कर सब बताती हूँ। यहाँ तो छोटी बहू की पढ़ाई में बाधा पड़ती है।

[उसे साथ ले कर अपने कमरे की ओर जाती है। बाहर से परेश और बेला बातें करते प्रवेश करते हैं।]

बेला— **(आर्द्र कंठ से)** आप मुझे मेरे मायके भेज दीजिए। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं

अपरिचितों में आ गयी हूँ। कोई मुझे नहीं समझता, किसी को मैं नहीं समझती।

परेश— आखिर बात क्या है! कुछ कहो भी।

बेला— मैं जाती हूँ तो सब खड़ी हो जाती हैं। बड़ी भाभी, मँझली भाभी और माँ जी तक! मेरे सामने कोई हँसता नहीं, कोई मुझसे अधिक समय तक बात नहीं करना चाहता। सब मुझसे ऐसे डरती हैं जैसे मुर्गी के बच्चे बाज़ से। अभी-अभी सब हँस रही थीं, ठहाके-पर ठहाके मार रही थीं, मैं गयी तो सब ऐसे सन्न रह गयीं, जैसे भरी सभा में किसी ने चुप की सीटी बजा दी हो।

परेश— पर इसमें .....

बेला— और कोई मुझे काम को हाथ नहीं लगाने देती। तनिक सा भी काम करने लगूँ तो सब भागी आती हैं। सब मेरा इस प्रकार आदर करती हैं, मानो मैं ही इस घर में सब से बड़ी हूँ।

परेश— मैं नहीं समझता तुम क्या चाहती हो? तुम्हें शिकायत थी, कोई तुम्हारा आदर नहीं करता? अब सब तुम्हारा आदर करते हैं। तुम्हें शिकायत थी, तुम्हें सब से दबना पड़ता है; अब सब तुम से दबते हैं। तुम्हें शिकायत थी, तुम सब का काम करती हो; अब सब तुम्हारा काम करते हैं। आदर, सत्कार, आराम—न जाने तुम और क्या चाहती हो?

(तेज़ी से सीढ़ियाँ चढ़ जाता है।)

बेला— **(निढाल हो कर कुर्सी में धँस जाती है)** न जाने मैं क्या चाहती हूँ? **(सिसकने लगती है)** न जाने मै क्या चाहती हूँ? पर मैं इतना जानती हूँ कि मैं यह सब आदर, सत्कार, सुख, आराम नहीं चाहती!

[बाहों में मुँह छिपा कर सिसकती है। इन्दु हाथ में कुछ मैले कपड़े लिए हुए बाहर के दरवाज़े से प्रवेश करती है।]

इन्दु— भाभी जी .....

बेला— **(उसी प्रकार चुप बैठी रहती है।)**

इन्दु— **(बेला के कन्धे को हिला कर)** भाभी जी .....भाभी जी ....

(बेला मुँह ऊपर उठाती है।)

इन्दु— हैं, भाभी जी, आप तो रो रही हैं?

बेला— **(आँखें पोंछ कर)** नहीं, मैं रो नहीं रही, पर इन्दु परमात्मा के लिए मुझे 'जी' 'जी' करके न बुलाया करो।

इन्दु— लो भला, यह कैसे हो सकता है। आप मुझसे बड़ी हैं और फिर आप मुझसे कहीं अधिक पढ़ी-लिखी हैं।

बेला— पहले तो तू मुझे यों 'जी' 'जी' करके नहीं बुलाती थी ?

इन्दु— मैं तो मूर्ख ठहरी भाभी जी। दादा जी ने कहा था .....

बेला— **(सहसा चौंक कर)** दादा जी ने क्या कहा था ?

इन्दु— उन्होंने सब को समझाया था कि घर में सबको आपका आदर करना चाहिए।

बेला— किन्तु उन्होंने यह सब क्यों कहा ? मैंने तो कभी उनसे इस बात की शिकायत नहीं की ?

इन्दु— शायद छोटे भैया ने उनसे यह कहा था कि आपका मन यहाँ नहीं लगता, आप बाग वाले ...

बेला— ओह ! यह बात है।

इन्दु— दादा जी और सब कुछ सह सकते हैं, किसी का अलग होना नहीं सह सकते—'हम सब एक महान पेड़ की डालियाँ हैं', वे कहा करते हैं, 'और इससे पहले कि कोई डाली टूट कर अलग हो, मैं ही इस घर से अलग हो जाऊँगा' और उन्होंने हम सबको समझाया कि हम आपका आदर करें, काम करें और आपको पढ़ने-पढ़ाने का समय दें।

बेला— पर मैं तो आदर नहीं चाहती और मैं तो तुम सब के साथ मिल कर काम करना चाहती हूँ।

इन्दु— यह कैसे हो सकता है भाभी जी ..... ?

बेला— **(दीर्घ विश्वास छोड़ती हुई)** आप लोगों ने मुझे कितना गलत समझा और मैंने आप लोगों को कितना ...

इन्दु— आप कैसी बातें करती हैं। लाइए, कपड़े लाइए। मैं दादा जी के कपड़े धोने जा रही हूँ, साथ ही आपके भी फटक लाऊँ।

बेला— **(चुप सोचती है।)**

इन्दु— भाभी जी .....

बेला— **(जैसे मन-ही-मन उसने किसी बात का निश्चय कर लिया हो)** मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी, मैं भी तुम्हारे साथ कपड़े धोऊँगी।

इन्दु— दादा जी नाराज़ न होंगे ...

बेला— मैं दादा जी से कह दूँगी।

इन्दु— भाभी जी .....

बेला— मुझे केवल भाभी कहा कर, मेरी प्यारी इन्दु।

इन्दु— **(प्यार से भरे हुए गले के साथ)** भाभी .....

बेला— चल कपड़े धोयें। धूप निकली जा रही है!

इन्दु— पर आपके कपड़े ....

बेला— मेरे कपड़े आज रजवा ने धो दिये थे, सलवार कमीज़ ही तो थी। चल मैं तेरी सहायता करूँगी।

[दोनों चली जाती हैं, कुछ क्षण बाद बरामदे में कपड़े धोने का शब्द आने लगता है। दादा गैलरी की ओर से हुक्का गुड़गुड़ाते-गुड़गुड़ाते मल्लू की अँगुली थामे प्रवेश करते हैं।]

दादा— हाँ बेटा, मेले में चलेंगे। जो तू कहेगा, वही खिलौना ले देंगे।

(सहसा बाहर के दरवाज़े के पास जा कर ठिठक जाते हैं।)

दादा (आश्चर्य से) हैं! छोटी बहू ....

इन्दु— **(बाहर से)** मैंने तो बहुतेरा कहा पर भाभी मानी नहीं।

दादा— छोटी बहू, इधर आ बेटी!

(शरमाई हुई बेला दरवाज़े के पास जा खड़ी होती है।)

—बेटा कपड़े धोना तुम्हारा काम नहीं, पढ़-लिखकर .....

इन्दु— **(जो अपनी भाभी के साथ ही आ खड़ी हुई है)** मैंने बहुतेरा कहा पर भाभी नहीं मानी .....

दादा— **(जिन्हें इन्दु के स्वर का अनादर अच्छा नहीं लगा)** इन्दु, तुझे इतनी बार कहा है कि आदर से ....

बेला— **(भावावेश के कारण रुँधे हुए कंठ से)** (दादा जी, आप पेड़ से किसी डाली का टूट कर अलग होना पसन्द नहीं करते, पर क्या आप यह चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाल सूख कर मुरझा जाय ....)

(सिसक उठती है, हुक्के की गुड़गुड़ाहट बन्द हो जाती है)

[पर्दा सहसा गिर पड़ता है।]

शब्दार्थ

तानाशाही = निरंकुश शासन; **पतोह** = पोते की बहू; **दर्प** = घमंड; **सुदृढ़** = मज़बूत; **मलमल** = बारीक कपड़ा; **अभियुक्त** = जिस पर अभियोग चलाया जाए; **वृथा** = बेकार; **अहाता** = आँगन;

मिश्रानी = मिश्र (विशिष्ट वर्गीय ब्राह्मण) की स्त्री; **बहुमूल्य** = कीमती; **अन्यमनस्कता** = अनमनापन, उचाटता; **उद्विग्नता** = परेशानी; **तिलमिलाहट** = बेचैनी; **अबरा** = लिहाफ़ के ऊपर का कपड़ा; **कस्बा** = छोटा शहर; **तहसीलदार** = तहसील का प्रधान अधिकारी; **मुरब्बा** = पच्चीस एकड़ भूमि का वर्ग टुकड़ा; **रुसूख** = प्रभाव; **फूहड़** = गँवार; **शाखा** = टहनी; **नासूर** = नाड़ी व्रण, ऐसा घाव जिसमें से बराबर मवाद निकलता हो; **खलल** = बाधा; **खिन्न** = उदास; **सुसंस्कृत** = अच्छे संस्कारों वाली; **अराजकता** = अव्यवस्था; **निन्दनीय** = निन्दा के योग्य; **कुटुम्ब** = परिवार; **आच्छादित** = ढका हुआ; **प्रभुत्व** = स्वामित्व, दबदबा; **निष्ठा** = श्रद्धापूर्ण विश्वास; **कोलाहल** = शोर; **स्नानागार** = स्नान करने का स्थान, बाथरूम; **निस्तब्धता** = चुप्पी; **स्वेच्छापूर्वक** = अपनी इच्छा से; **नीरवता** = शान्ति; **आकांक्षा** = इच्छा; **उकाब** = गरुड़, एक बड़ी जाति का गिद्ध; **परामर्श**=सलाह; **तिरस्कार**= अपमान, उपेक्षा; **ग्रेजुएट** = स्नातक; **भृकुटि** = भौहें; **आर्द्र** = नम, द्रवित।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए :—

1. दादा मूलराज के बड़े पुत्र की मृत्यु कैसे हुई?
2. 'सूखी डाली' एकांकी में घर में काम करने वाली नौकरानी का क्या नाम था?
3. बेला का मायका किस शहर में था?
4. दादा जी की पोती इन्दु ने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की थी?
5. 'सूखी डाली' एकांकी में दादा जी ने अपने कुटुम्ब की तुलना किससे की है?
6. बेला ने अपने कमरे में फर्नीचर बाहर क्यों निकाल दिया?
7. दादा जी पुराने नौकरों के हक में क्यों थे?
8. बेला ने मिश्रानी को काम से क्यों हटा दिया?
9. एकांकी के अंत में बेला रुंधे कंठ से क्या कहती है?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :—

1. एकांकी के पहले दृश्य में इन्दु बिफरी हुई क्यों दिखाई देती है?
2. दादा जी कर्मचंद की किस बात से चिंतित हो उठते हैं?
3. कर्मचन्द ने दादा जी को छोटी बहू बेला के विषय में क्या बताया?

4. परेश ने दादा जी के पास जाकर अपनी पत्नी बेला के सम्बन्ध में क्या बताया ?

5. जब परेश ने दादा जी से कहा कि बेला अपनी गृहस्थी अलग बसाना चाहती है तो दादा जी ने परेश को क्या समझाया ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए :—

1. इन्दु को बेला की कौन सी बात सबसे अधिक परेशान करती है ? क्यों ?

2. दादा जी छोटी बहू के अलावा घर के सभी सदस्यों को बुला कर क्या समझाते हैं ?

3. एकांकी के अंतिम भाग के घर के सदस्यों के बदले हुए व्यवहार से बेला परेशान क्यों हो जाती है ?

4. मँझली बहू के चरित्र की कौन सी विशेषता इस एकांकी में सबसे अधिक दृष्टिगोचर होती है ?

5. 'सूखी डाली' एकांकी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

6. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए :—

   * यह कुटम्ब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों से ही पेड़ पेड़ है और डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को बढ़ाती हैं। मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूटकर पृथक् हो जाए।

   * दादा जी, आप पेड़ से किसी डाली का टूटकर अलग होना पसन्द नहीं करते, पर क्या आप यह चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाल सूख कर मुरझा जाए ......।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए :—

प्रतिष्ठा = __________ __________

आकाश = __________ __________

वृक्ष = __________ __________

प्रसन्न = __________ __________

परामर्श = __________ __________

अवसर = __________ __________

आदेश = ____________ ____________

आलोचना = ____________ ____________

II. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :—

आकाश	____________	आज़ादी	____________
पसन्द	____________	शान्ति	____________
आदर	____________	प्रसन्न	____________
झूठ	____________	निश्चय	____________
मूर्ख	____________	इच्छा	____________
घृणा	____________	विश्वसनीय	____________

III. निम्नलिखित समरूपी भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ बताते हुए वाक्य बनाइए :—

सूखी	____________	____________________________
सुखी	____________	____________________________
सास	____________	____________________________
साँस	____________	____________________________
कुल	____________	____________________________
कूल	____________	____________________________
और	____________	____________________________
ओर	____________	____________________________

IV. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—

मुहावरा		**अर्थ**	**वाक्य**
काम आना	=	मारा जाना	____________
नाक-भौं चढ़ाना	=	घृणा या असंतोष प्रकट करना	____________
पारा चढ़ना	=	क्रोधित होना	____________
भीगी -बिल्ली बनना	=	सहम जाना	____________

मरहम लगाना	=	सांत्वना देना	____________
ठहाका मारना	=	ज़ोर से हँसना	____________
खलल पड़ना	=	किसी काम में बाधा आना	____________
कमर कसना	=	किसी काम के लिए निश्चयपूर्वक तैयार होना	____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. कल्पना कीजिए कि आप बेला हैं और दादा जी आपसे आपकी परेशानी का कारण जानना चाहते हैं। आप क्या उत्तर देंगी ?
2. आज भारत में संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं। बताइए कि इसके क्या कारण हैं ?
3. नौकरी की तलाश में आज घर के सदस्यों को देश के दूर-दराज के इलाकों में ही नहीं, विदेशों में भी जाना पड़ता है; ऐसे में दादा जी की वटवृक्ष वाली कल्पना कहाँ तक प्रासंगिक है ?
4. 'घर में नई बहू के आने पर घर के माहौल में घुल-मिल जाना जहाँ उसकी ज़िम्मेदारी है, वहीं परिवार के शेष सदस्यों की भी ज़िम्मेदारी है कि वे भी उसकी आशाओं-अपेक्षाओं के अनुसार खुद को बदलें' .... क्या आप इस कथन से सहमत हैं ? क्यों ?
5. यदि आपके घर में कोई सदस्य या कोई आपका मित्र/रिश्तेदार धूम्रपान जैसी लत का शिकार है तो आप उसकी यह लत छुड़वाने में कैसे मदद करेंगे।
6. जब दादा जी ने घर से सदस्यों को बुलाया तो घर के बालक तथा युवक तख्त और चारपाइयों पर बैठते हैं जबकि स्त्रियाँ बरामदे के फर्श पर मोढ़े और चटाइयों पर बैठती हैं— क्या आपको इस तरह की व्यवस्था उचित लगी और क्या आज भी आप स्त्रियों के साथ आप इस तरह का भेदभाव देखते हैं ? इसकी कक्षा में चर्चा कीजिए।
7. दादा जी में अनेक चारित्रिक गुण हैं किन्तु हुक्का गुड़गुड़ाते रहना तथा छोटी बहू से अपनी पोती के लिए दहेज की अपेक्षा करना उनके चरित्र की कमियाँ हैं— इस सम्बंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

1. 'सूखी डाली' एकांकी को अपने स्कूल के मंच पर खेलिए।
2. अपने पुस्तकालय से उपेन्द्रनाथ अश्क के अन्य एकांकियों को लेकर पढ़िए।
3. वट वृक्ष के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र कीजिए।
4. वट वृक्ष की भिन्न-भिन्न विशेषताओं को बताने वाले चित्र एकत्र कीजिए और उन्हें एक चार्ट पर चिपका कर अपनी कक्षा में लगाएँ।
5. लाहौर शहर के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र कीजिए।
6. **बच्चे, बूढ़े और जवान**

   बात सुनो खोलकर कान

   धूम्रपान है मौत का सामान

   है तुम्हें क्या इसका ज्ञान— इस विषय पर स्कूल की प्रार्थना सभा में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
7. दहेज एक सामाजिक कलंक है। यह प्रथा अनैतिक, अवांछनीय एवं अविवेकपूर्ण है— इस विषय पर स्कूल में निबंध/कविता अथवा चित्रकला आदि गतिविधियों का आयोजन करके उसमें सक्रिय रूप से भाग लें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

1. **1914 महायुद्ध** – 1914 ई. से लेकर 1919 ई. के मध्य चले इस भीषण महायुद्ध को प्रथम विश्वयुद्ध कहते हैं। यह महायुद्ध यूरोप, एशिया व अफ्रीका (मुख्यत: यूरोप में) महाद्वीपों और जल-थल व आकाश में लड़ा गया। इसमें भाग लेने वाले देशों की संख्या, युद्धक्षेत्र का फैलाव और इससे हुई क्षति के दिल हिला देने वाले आँकड़ों के कारण ही इसे विश्वयुद्ध या महायुद्ध कहते हैं।
2. **ग्रेजुएट** – स्नातक डिग्री प्राप्त व्यक्ति ग्रेजुएट कहलाता है। स्नातक डिग्री विश्वविद्यालय की पहली डिग्री होती है, जैसे-'बैचलर ऑफ आर्ट्स या बैचलर ऑफ साइंस' आदि। प्राचीन काल में ब्रह्मचर्य आश्रम में रहते हुए गुरुकुल में सफलतापूर्वक शिक्षा पूरी करने वाले विद्यार्थी को एक समारोह में पवित्र जल से स्नान करवा कर सम्मानित किया जाता था। इस प्रकार के स्नान को प्राप्त किया हुआ विद्वान विद्यार्थी 'स्नातक' कहलाता था।

3. **वटवृक्ष—**यह भारत का राष्ट्रीय वृक्ष है। इसे बरगद का पेड़ भी कहा जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम 'फाइकस वेनगैलेंसिस' और अंग्रेज़ी नाम 'बनियन ट्री' है। हिन्दू लोग इस वृक्ष को पूजनीय मानते हैं। भारत में वटवृक्ष को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

4. **लाहौर** – यह पाकिस्तान के महत्त्वपूर्ण शहरों में से एक है। इसे 'पाकिस्तान का दिल' भी कहा जाता है क्योंकि पाकिस्तानी इतिहास, संस्कृति एवं शिक्षा के क्षेत्र में इस शहर का विशिष्ट योगदान है। यह पाकिस्तान के 'पंजाब प्रान्त' की राजधानी भी है।

हुक्का गुड़गुड़ाना : स्वास्थ्यह्रासक व अशोभनीय कार्य

हुक्का तम्बाकू के सेवन का एक तरीका है। आज धूम्रपान तम्बाकू सेवन का माध्यम है। इसके अतिरिक्त जरदे आदि के रूप में भी तम्बाकू का सेवन किया जाता है। याद रहे तम्बाकू का सेवन करना सौ प्रतिशत स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है क्योंकि तम्बाकू में एक भी स्वास्थ्यवर्धक गुण नहीं है। परिवारजनों के मध्य या सार्वजनिक स्थलों पर तम्बाकू के सेवन से अन्य लोगों को भी भारी नुकसान पहुँचाने के साथ-साथ यह बेहद अशोभनीय भी लगता है। इसके अतिरिक्त भारत तथा अन्य कई देशों ने सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान के खिलाफ कानून का प्रावधान किया है। इसके सेवन से कैंसर, दिल के रोग, फेफड़ों के भयानक रोग आदि हो जाते हैं। यदि एक बार यह लत लग गयी तो फिर इससे छुटकारा पाना कठिन हो जाता है। अत: इसके उपर्युक्त नुकसानों को देखते हुए इससे परहेज़ ही बेहतर है।

****

पाठ–19

जयनाथ नलिन

लेखक परिचय—

पंजाब के जिन यशस्वी रचनाकारों की साहित्य-साधना से पंजाब का नाम अखिल भारतीय स्तर पर समादृत हुआ, उनमें डॉ. जयनाथ नलिन का नाम विशिष्ट है। इनकी प्रतिभा बहुमुखी है। कविता, कहानी, निबंध, समीक्षा, एकांकी आदि अनेक विधाओं में इन्होंने लिखा है और क्या खूब लिखा है ! एकांकीकार के रूप में तो इनकी प्रतिभा खूब ही खिली है। इनके दर्जनों एकांकी आकाशवाणी से प्रसारित हो चुके हैं। दिल्ली रेडियो स्टेशन से प्रसारित इनके 'नवाबी सनक' एकांकी को तो वर्षभर का सर्वोत्कृष्ट ब्रॉडकास्ट माना गया था। 'अभिनेयता' इनके एकांकियों का सर्वाधिक प्रशंसनीय तत्त्व है। सोने की हथकड़ी, साई बाबा का कमाल,फटा तिमिर उगी किरण आदि इनके चर्चित एकांकी हैं। इनके प्रमुख एकांकी-संग्रह हैं-नवाबी सनक, हाथी के दाँत, अवसान, धराशायी, शिखर।

पाठ-परिचय

नलिन जी के प्रसिद्ध एकांकी 'देश के दुश्मन' में डी. एस. पी. जयदेव के माध्यम से एकांकीकार ने हमारी रक्षा-सेनाओं की कर्त्तव्यपरायणता, वीरता, नि:स्वार्थ भावना, त्याग, बलिदान वृत्ति आदि का चित्रण किया है। केवल ये सेनानी ही नहीं, इनके परिवारजन भी इन्हीं उदात्त भावनाओं से लबालब भरे होते हैं। इन्हीं महान लोगों के कारण भारतवर्ष अपने दुश्मनों को धराशायी कर आज भी गर्व से झूम रहा है। इस एकांकी के माध्यम से नलिन जी ने ऐसे ही तेजस्वी लोगों का अभिनंदन किया है।

देश के दुश्मन

(पात्र-परिचय)

सुमित्रा :

मीना और जयदेव की माँ! आयु लगभग ५० वर्ष। बाल काले-सफेद। रंग गेहुंआ सांवला। मुख पर दुख और निराशा की झलक। सफेद रंग का कोहनी तक की बाहों वाला ब्लाऊज ; सफेद साड़ी और पैरों में चप्पल। हाथ पैर कान सभी आभूषण विहीन। लम्बा पतला शरीर।

मीना :

सुमित्रा की लड़की तथा जयदेव की छोटी बहन । आयु लगभग २०-२१ वर्ष। अर्थशास्त्र की एम॰ ए॰ भाग दो की छात्रा। लम्बी पतली, रंग गोरा, आँखों में प्रतिभा की ज्योति, मुस्कराता आनन। काले लम्बे बाल। सिर के बीचों-बीच मांग और एक वेणी। कमीज़-सलवार। कलाई में घड़ी। पैरों में काले सैण्डल।

नीलम :

मीना की भाभी। जयदेव की पत्नी। आयु २३-२४ वर्ष। सुन्दर, हँसमुख, मधुर भाषी। आनन पर गुलाबी आभा। विशाल नेत्र, घुंघराले बाल, दो वेणियां, मांग में सिंदूर और माथे पर कुंकुम का गोल टीका। गले में सोने की पतली-सी चेन और हाथों में सोने की दो-दो चूड़ियाँ। हरे गुलाबी बड़े बड़े फूलों वाली छींट की कमीज़-सलवार। पैरों में रंगीन-चप्पल। हाथ-पैरों के नाखून गुलाबी रंग से रंजित।

चाचा :

जयदेव के स्वर्गीय पिता का बचपन का मित्र। आयु ५२-५३ वर्ष। बाल काफी सफेद। चेहरे पर हल्की पतली झुर्रियां। नंगा सिर। सफेद पाजामा-कुर्त्ता। पैरों में मुंडा जूता। आंखों पर चश्मा। कद ५ फीट ५ इंच । शरीर भरा-भरा।

जयदेव :

मीना का बड़ा भाई, नीलम का पति, सुमित्रा का एक मात्र पुत्र। अमृतसर के पास बागाह* बार्डर पर डी॰ एस॰ पी॰ के पद पर नियुक्त। गठीला, स्वस्थ, गोरा, लम्बा शरीर। बड़े-बड़े तेजस्वी नेत्र, ऊंचा मस्तक, विशाल वक्षस्थल, काले सघन बाल-न बहुत लम्बे, न छोटे। काली लम्बी भंवे। तनी हुई काली सघन मूंछें। घर आने पर एक सभ्य कुलीन नागरिक के समान पतलून बुश-शर्ट, काला चमचमाता बूट। दाहिने हाथ की कलाई में घड़ी।

*** लेखक ने बागाह शब्द का प्रयोग किया किन्तु आज वाघा लिखने का प्रचलन है।**

उपायुक्त (डी ० सी ०) :

उमर लगभग ४० वर्ष। स्वस्थ, भरा-भरा मध्यम लम्बाई वाला शरीर। सांवला रंग, गोल चेहरा, ऊंचा मस्तक। नंगा सिर, पीछे को कंघा किये हुए तीन-चार इंच लम्बे काले लहराते बाल। टैरीकाट की दालचीनी रंग की बुश-शर्ट और टेरीकॉट की मेंहदी रंग की पतलून। चमचमाते ब्राऊन रंग के बूट। दाहिने हाथ की कलाई में घड़ी—आँखों पर काले गौगल्ज़।

(मंच-निर्माण)

एक सम्भ्रांत घर का डाइनिंग और ड्राइंग रूम, लम्बाई 18 फीट, चौड़ाई 14 फीट। चौड़ाई में पिछली, दर्शकों के सामने पड़ने वाली दीवार पर, फर्श से 4 फीट ऊंचा जयदेव के स्वर्गीय पिता का चित्र, जिस पर एक माला टंगी है। धरती पर एक दरी बिछी है। दरी के पिछले भाग पर दीवार से तीन फीट आगे एक गलीचा बिछा है। उसके ऊपर सोफा रखा है। सोफे के दोनों किनारों पर, सोफे और कौचों के मध्य एक-एक छोटी मेज़ रखी है। ड्राईंग रूम की बाईं दीवार में एक द्वार है, जो रसोई घर में खुलता है और दाईं दीवार में एक दरवाज़ा है, जो सटे हुए कमरे में खुलता है। दोनों पर चम्पई रंग के फूलदार पर्दे टंगे हैं। दरवाज़ों से दो ढाई फीट आगे दोनों दीवारों में खिड़कियां हैं, जिन पर झीने पर्दे पड़े हैं, जिस से सूर्य का हल्का हल्का प्रकाश भीतर आ जाता है। दाई दीवार के पास एक मेज़ और एक कुर्सी रखी है। मेज़ पर एक बुकशेल्फ में 7-8 पुस्तकें और एक-दो फाइलें, कलम-दवात आदि सामान रखा है।

(समय : सुबह के आठ-साढ़े आठ बजे। बसन्त ऋतु का अन्तिम भाग। पर्दा उठते ही मीना कंघी करने तथा कॉलेज जाने के लिए आवश्यक सामग्री एकत्र करने में व्यस्त दिखाई देती है।)

नीलम (भीतर रसोई में से)—बस, तैयार है नाश्ता। जब तक तुम अपना पर्स, पैन तैयार करो कि नाश्ता मेज़ पर आया।

मीना— भाभी, बहुत जल्दी जाना है। नाश्ता-वाश्ता कुछ नहीं चाहिए।

नीलम— तो भूखी जाओगी ? पांच-छः घण्टे किताबों में आंखें गड़ा कर और सिर खपा कर आओगी। फिर आते ही—हाय सिर फटा। हाय आंखें गई। हाय कमर टूटी—ऐसी क्या आफत आ गई कि नाश्ता तक नहीं।

मीना— (कंघी करते हुए) ठीक नौ बजे यूनिवर्सिटी पहुंचना है। बाहर से अर्थ-शास्त्र के कोई प्रोफेसर आये है उनका भाषण होगा—''तस्करी चोर बाज़ारी और आर्थिक व्यवस्था।''

नीलम— अभी तक तो रानी जी की कंघी तक हुई नहीं, और जल्दी ऐसी मचा रखी है; जैसे अब गाड़ी छुटी (नाश्ता लिए प्रवेश करते हुए) और आज तक कोई प्रोफेसर वक्त पर पीरियड लेने आया भी है ? (नाश्ता मेज़ पर रखती है।) पीरियड न लेना तो यूनिवर्सिटी के प्रोफेसरों की शान है। नाश्ता करके भागो, जल्दी।

मीना— (पर्स और फाइल उठाते हुए) नाश्ता करके बैठूंगी तो यही नौ बज जायेंगे। साढ़े आठ

तो हो चुके। अच्छा ! लाओ, जल्दी करो।

(चाय पीकर प्याला मेज़ पर रखती है। किसी के आने का शब्द)

सुमित्रा— (शिथिलता से प्रवेश करते हुए रुआंसे स्वर में) हे भगवान, यह क्या अनर्थ हो गया।

(मीना और नीलम उसे पकड़ कर संभालती हैं)

नीलम— क्या हुआ माँ जी ?

मीना— इतना घबरा क्यों गई अम्मा ?

(उसे लाकर सोफे पर बैठाती है। बाईं ओर नीलम और दाईं ओर मीना बैठती है।

नीलम— (सीने पर हाथ रखते हुए)—क्या कोई कष्ट है ? धड़कन इतनी तेज़ क्यों हो गई ?

मीना— (नाड़ी पकड़ते हुए)—डॉक्टर को बुलाऊं ? हुआ क्या अम्मा ?

(दोनों परेशानी और प्रश्नवाचक मुद्रा में एक दूसरे को आँखों में आंखें डालती हैं।)

सुमित्रा— (व्यथित-सी होकर)—कुछ नहीं बेटा, कुछ नहीं। यह खबर सुनने से पहले ही प्राण क्यों नहीं निकल गये ? हे भगवान, यह क्या वज्र-पात कर डाला।

नीलम— (घबराहट के साथ)—क्या हुआ माँ जी ? क्या हुआ ? बताती क्यों नहीं ?

मीना— (आतुरता से) आपके घबराने से तो हम भी धीरज खो देंगी। (कंधे पर हाथ रख कर अपनी ओर उन्मुख करते हुए) बताओ भी क्या हुआ ? कैसा वज्रपात ?

सुमित्रा— क्या बताऊं ? अभी-अभी माधोराम के घर रेडियो पर—खबर सुनते ही छाती क्यों न फट गई!

नीलम— रेडियो पर............रेडियो पर क्या खबर सुनी ? बताओ भी माँ जी!

सुमित्रा— बागाबार्डर पर दो सरकारी अफसर मारे गये। वहीं पर तो मेरा जयदेव भी..........हे भगवान, मेरे जयदेव की रक्षा करना।

मीना— भैया के बारे में ऐसी अशुभ बात क्यों सोचती हो अम्मा ?

नीलम— मरने वालों के नाम तो नहीं आये ? फिर वहाँ तो पचासों पुलिस वाले..............। उनका बाल बांका नहीं हो सकता। भगवान इतना निष्ठुर नहीं।

सुमित्रा— अशुभ नहीं सोचती। भगवान उसे मेरी उमर लगावे। पर कलेजा धक-धक कर रहा है। तुम्हारे पिता जी भी लुटेरों-हत्यारों चीनियों से भारत की सीमा की रक्षा करते हुए बलिदान हुए थे। उनके बाद तुम दोनों को मैंने किन मुसीबतों से पाला है—हे राम! मेरी तपस्या का यह फल ।

मीना— यह तो हमारे कुल के लिए गौरव की बात है कि हमारे पिता मातृभूमि की रक्षा करते हुए स्वर्गवासी हुए। इस बलिदान का बदला भगवान हमें दण्ड के रूप में नहीं, वरदान के रूप में देगा।

नीलम— बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता, माँ जी ! ऐसे दिव्य बलिदान पर तो देवता भी अर्घ्य चढ़ाते हैं। वे भी स्वर्ग में जयजयकार करते हुए देश पर निछावर होने वालों का स्वागत करते हैं।

सुमित्रा— गर्व और गौरव की बात तो है, बेटी ! पर अब हृदय इतना दुर्बल हो चुका है कि ज़रा सी आशंका से कांप उठती हूँ। तुम्हारे पिता जी के बलिदान पर हृदय पर पत्थर रख लिया था, पर अब हिम्मत टूट चुकी है, देह जर्जर हो चुकी है। अगर मेरे जयदेव का ज़रा भी बाल बांका हो गया...तो...मैं.. (रुआँसी सी होकर)—पल भर भी नहीं जीऊँगी।

नीलम— माँ जी, कुछ नहीं होगा। यों ही आप तो...

चाचा— **(बाहर से पुकार कर)** मीना—अरी मीना है क्या... ?

मीना— आओ, चाचा जी।

चाचा— **(प्रवेश करके साश्चर्य)**—अभी तक यहीं—नौ बज गये ! गई नहीं ? पढ़ने नहीं जाना? (निकट आकर) अरे ! भाभी को क्या हुआ ? अचानक यह क्या ? क्या कोई तकलीफ़ .... ?

नीलम— यों ही घबरा गई—दिल धड़कने लगा।

चाचा— **(बैठते हुए)**—किसी डॉक्टर को बुलाता हूँ। अभी तो चली आ रही थी, माधोराम के घर से। सोचा, पूछ आऊं, जयदेव की कुशल क्षेम की कोई चिट्ठी-विट्ठी तो नहीं आई। छुट्टी लेकर आने वाला था न ?

मीना— आज कल में आते ही होंगे।

सुमित्रा— कल आना था—15 दिन की छुट्टी पर। पर आता कहाँ से ? कोई खबर नहीं। पता नहीं, भगवान की क्या मर्ज़ी है!

चाचा— तो भाभी, इसमें घबराने की क्या बात है ? कहीं रास्ते में किसी यार-दोस्त से मिलता रह गया होगा। अफसर जो ठहरा—पल भर में प्रोग्राम बदल सकता है।

मीना— और क्या ? सरकारी नौकरी-और कितनी ज़िम्मेदारी की!

सुमित्रा— तो खैर-खबर तो भेज देता।

चाचा— आज कल के बच्चों में यही तो बड़ी लापरवाही है। यह नहीं जानते मां-बाप के दिल पर क्या गुज़रती है। मेरा ही बलुआ देखो...दो-दो महीनों में, वह भी यहाँ से 4-5 चिट्ठी जाने पर एक आध-पत्र लिखता है और उल्टे हमें ही शिक्षा, 'आप तो यों ही दो-चार दिन में घबरा जाते हैं। काम बहुत रहता है। समय ही नहीं मिलता। और आज कल तो ड्यूटी बड़ी कड़ी है। दम मारने को टाइम नहीं। भला, यह भी कोई बात हुई! निरे बहाने ही चलने लगे हैं।

नीलम— बहाना नहीं, चाचा जी। इन तस्करों से निपटना आसान नहीं—जान पर खेलना पड़ता है।

मीना— कभी-कभी इन लोगों से डाकुओं की तरह भिड़ंत भी हो जाती है—गोलियाँ तक चल जाती हैं।

सुमित्रा— यही तो मैं कहूँ। इसीलिये तो मेरा कलेजा धक-धक कर रहा है। न जयदेव आया, न उसकी कोई खैर खबर।

नीलम— रेडियों पर आज सवेरे खबर आई है कि बागाह-बार्डर पर स्मगलरों का मुकाबला करते हुए दो सरकारी अफसर मारे गये। यह खबर सुनकर...तभी से माँ जी को दिल का दौरा सा पड़ने लगा।

मीना— हम बहुत समझा रही हैं—कि...।

चाचा— हं-हं-हं वाह री मेरी वीरांगना भाभी ! अरे, वह खबर तो मैं भी अभी-अभी सुनकर आया हूँ—पौने नौ वाली खबरों में। जयदेव का बाल भी बांका नहीं हुआ। दो सरकारी अफसर जो मारे गये, उन में एक हैड कांस्टेबल था और दूसरा सब इंस्पैक्टर।

सुमित्रा— कितने हत्यारे-कसाई हैं, ये स्मगलर ! इन बेचारों के बाल बच्चों का क्या होगा ? मेरा जयदेव तो ....।

मीना— चाचा कह तो रहे हैं, कि उनका बाल भी बांका नहीं हुआ।

चाचा— अखबार में भी खबर आ गई। जयदेव की वीरता और सूझ बूझ की बड़ी प्रशंसा छपी है। उसने तस्करों से किस बहादुरी और चतुराई से मोर्चा लिया; किस तरह उनको मार भगाया और किस तरह उनके चार आदमियों को गोलियों का निशाना बनाया तथा पांच लाख का सोना उनसे छीन लिया। **(अखबार देते हुए)** लो, पढ़ लो।

सुमित्रा— (प्रसन्न होकर) सच ? क्या यह सब सच है ? मेरा बहादुर बेटा, जयदेव ! अरी मीना, सुना न, क्या लिखा है अखबार में ? और बेटी नीलू...अपने चाचा जी के लिये कुछ...**(अभी लाई कह कर नीलम का प्रस्थान)**

चाचा— ना ना भाभी !... बेटी ! बहुरानी ! नहीं। इस समय तो कुछ भी नहीं। अभी-अभी तो नाश्ता....।

नीलम— (रसोई घर में से)—चाचा जी, ऐसे नहीं जाने देंगे। आपको मेरी सौगंध, जो....।

चाचा— तुम लोगों में यहीं बड़ा एब है, बात-बात में सौगंध। एक तो पहले ही पेट तना है, ऊपर से सौगंध।

सुमित्रा— क्या हुआ भैया, बालकों का मन रखना बड़ों का काम है। ये बच्चे जितनी सेवा करेंगे, उतना आप लोगों का आशीर्वाद लेंगे। (मीना चाय की ट्रे मेज़ पर रख देती है)

चाचा— **(चाय पीते हुए)**—मीना बेटी, भाभी को अखबार की पूरी खबर सुना देना। यही छोड़े जाता हूँ। जयदेव भी एकाध दिन में आता ही होगा। **(प्याला मेज़ पर रखता है)**

मीना— और क्या ?

चाचा— अच्छा, मैं चला। **(प्रस्थान)**

मीना— **(समाचार सुनाते हुए)**—अंधेरी रात थी। तस्करों के गिरोह ने किसी तरह बिजली भी फेल कर दी थी।

सुमित्रा— अच्छा! हाँ, परसों अमावस ही तो थी।

मीना— 2-4 संतरी धीरे-धीरे गश्त लगा रहे थे। और कुछ अफसर और भैया कैम्प में चौकन्ने बैठे थे। कुछ देर बाद रात के सन्नाटे में संतरियों ने आकर खबर दी कि सीमा से कुछ मील दूर लाइट सी नज़र आई है। क्षण भर में फिर बन्द हो गई।

नीलम— तब इसके बाद क्या हुआ ?

मीना— भैया तुरन्त टैण्ट से निकले और जवानों को जगह-जगह तैनात कर दिया। कैम्प से करीब आधा मील की दूरी पर एक जीप आकर रुकी और 6-7 आदमी उसमें से उतरे।

सुमित्रा— अमावस की घोर अंधियारी में इन लोगों को साँप-बिच्छू का भी डर नहीं लगता। कैसे भयंकर निडर राक्षस है।

नीलम— मां जी, लाखों रुपये कमाने का लालच इन्हें इतना निडर और अन्धा बना देता है कि ये लोग न कानून से और न ही साँप-बिच्छू तथा शेर-चीते से डरते हैं। अपने ही स्वार्थ में लगे होने के कारण ये अपने देश और समाज के हित को भी नहीं देख पाते।

मीना— तो मां, फिर भैया ने उन पर टार्च से रोशनी डाली और आदेश दिया—''खबरदार! हैंड्ज अप। भागने की कोशिश की तो गोली मार दी जायेगी।'' जवाब में उन लोगों ने पुलिस पर गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। पुलिस ने भी गोलियों से जवाब दिया।

सुमित्रा— हे भगवान, इतनी हिम्मत! जयदेव को तो चोट नहीं आई ?

मीना— नहीं। पन्द्रह मिनट तक गोलियाँ चलती रही। दो पुलिस के आदमी मारे गये और तीन उन के। बाकी 3-4 रात के अंधेरे में छिपकर अपनी जान बचा कर भाग गये। हमारी पुलिस जब लाशों के पास पहुंची तो दो बैग पड़े मिले, जिन में 5 लाख का सोना था।

जयदेव— **(सहसा प्रवेश करके)** क्या गप्पें मार रही है ? यह रिसर्च हो रही है यूनिवर्सिटी में ?

मीना— (दौड़कर जयदेव की ओर जाते हुए) भैय्या ! अम्मा ! भैय्या ! (जाकर उस से लिपट जाती है। माँ भी फुर्ती से उठती है ''मेरा बेटा'' कहकर आलिंगन के लिए बांहें फैलाती है और जयदेव तेज़ी से आकर उसकी बांहों में बंध जाता है। नीलम शर्मीली ढली पलकों से अभिवादन करती है। कुछ क्षण बाद मां के आलिंगन से मुक्त होकर)

जयदेव— **(नीलम से)**—नमस्ते, जनाब !

नीलम— चलो, हम नहीं बोलते। न कोई चिट्ठी न पत्री, न खैर-खबर। सबको मुसीबत में डाल दिया। माँ जी तो इतना घबरा गई कि दिल का दौरा ही....।

मीना— और क्या ? छुट्टी लिये तीन दिन हो गये और अब आये हैं, श्रीमान जी ! सबको परेशान कर मारा !

जयदेव— तुम लोगों को बे-बात घबराना आता है ! आखिर ऐसी क्या मुसीबत आ गई जो सभी इतना परेशान....।

नीलम— स्मगलरों के साथ मुठभेड़ में दो पुलिस वाले मारे गये थे, न ?

जयदेव— हाँ, तब ?

मीना— यह खबर सुनकर अम्मा को तो दिल का दौरा ही पड़ गया। वह तो अच्छा हुआ जो

अचानक ही चाचा जी आ गये। यह अखबार भी दे गये, जिससे सच्ची खबर का पता चल जाये।

नीलम— जब इन्हें विश्वास हो गया कि आप कुशल से हैं, तब कहीं जी ठिकाने आया।

जयदेव— वाह, मेरी प्यारी अम्मा ! (कहकर उससे लिपट जाता है। सुमित्रा की आंखों में प्रेम के आंसू छलक उठते हैं।)

सुमित्रा— **(हथेली से आँसू पोंछते हुए)**—अरे खड़ा कब तक रहेगा ? बैठ जा, बेटा, सफर करके आया है, थक गया होगा।

(उसे कंधे से पकड़ कर सोफे पर बैठाती है) जा बेटी, नीलू जयदेव के लिये चाय तैयार कर। मैं तब तक मन्दिर में जा कर भगवान के चरणों में माथा टेक आऊं।

(सुमित्रा प्रस्थान करती है। 'चाय ले आऊं' कहते हुए नीलम उठना चाहती है। जयदेव उसे रोक लेता है।)

जयदेव— अभी रहने दो। सब साथ पियेंगे। और रास्ते भर चाय ही चाय पीता आया हूँ।

नीलम— थोड़ी देर अपने भाई साहब की वीरता की गप्पें सुन लो। पेट में बहादुरी की अनेक कहानियाँ भरी है, वे बाहर निकलें, तभी तो चाय के लिए जगह बने।

मीना— तुम सुनो अपने पतिदेव की कहानियाँ। मुझे तो क्लास अटैण्ड करनी है। (पर्स हिलाती हुई प्रस्थान करती है।)

नीलम— **(मान भरी मुद्रा में)**—अब बताइये, इतने दिन कहाँ लगाये ? यहाँ तो राह देखते-देखते आँखे पथरा गई, वहां जनाब को परवाह तक नहीं कि किसी के दिल पर क्या बीत रही है।

जयदेव— चाहे कभी याद भी न किया हो कि हम पर वहां क्या बीतती है। रात दिन प्राणों की आशंका....। स्मगलरों-तस्कारों से प्राणों की बाजी...।

नीलम— **(उलाहने भरे स्वर में)**—अरे जाओ भी ! मर्दों का दिल तो पत्थर होता है। और विशेष कर रात-दिन चोर डाकुओं तथा मौत से खेलने वालों, और गोलियों की बौछार करने वालों का। नारी का हृदय सदा प्रेम से लबालब रहता है। उस के मन में सदा अपने पति की प्रतिमा स्थापित रहती है। हां, बाकायदे, कैफियत दीजिये कि तीन दिन लेट क्यों हो गये ?

जयदेव— मैं जो कहूंगा खुदा को हाज़िर नाज़िर जान कर कहूँगा। सरकार के दरबार में अपनी जानकारी के मुताबिक कोई बात गलत नहीं कहूँगा।

नीलम— हाँ, दीजिए सही-सही बयान-तीन दिन लेट क्यों हुए ?

जयदेव— हुआ यह, कि घर की ओर आने से दो-तीन घण्टे पहले गुप्तचरों ने समाचार दिया कि

रात की अंधेरी में पुलिस पिकिट से एक डेढ़ मील दक्षिण की तरफ से, कुछ लोग बार्डर पार करने वाले हैं। ऐसा शक है कि वे सोना स्मगल करके ला रहे हैं।

नीलम— अच्छा! आप की सी. आई. डी. इतनी सतर्क है—इतनी तेज़ है ! यह जानकर सचमुच बड़ी प्रसन्नता होती है।

जयदेव— यह मौका हाथ से न निकल जाये, यह सोच कर मैंने छुट्टी कैंसिल करा ली। इन बदमाशों को पकड़ने का पक्का इरादा किया। भाग्य ने साथ दिया। जो अन्दाज़ा हमने लगाया था, वही हुआ। आधी रात के बाद वे हमारी चौकी से दो मील दूर एक खतरनाक घने ढाक के ऊबड़-खाबड़ रास्ते से बार्डर पार करने लगे—तभी हमने उन्हें चैलेंज किया। उन्होंने बदले में गोलियाँ चलायीं, जिससे हम घबरा जायें और उन्हें बचकर भागने का मौका मिल जाये ?

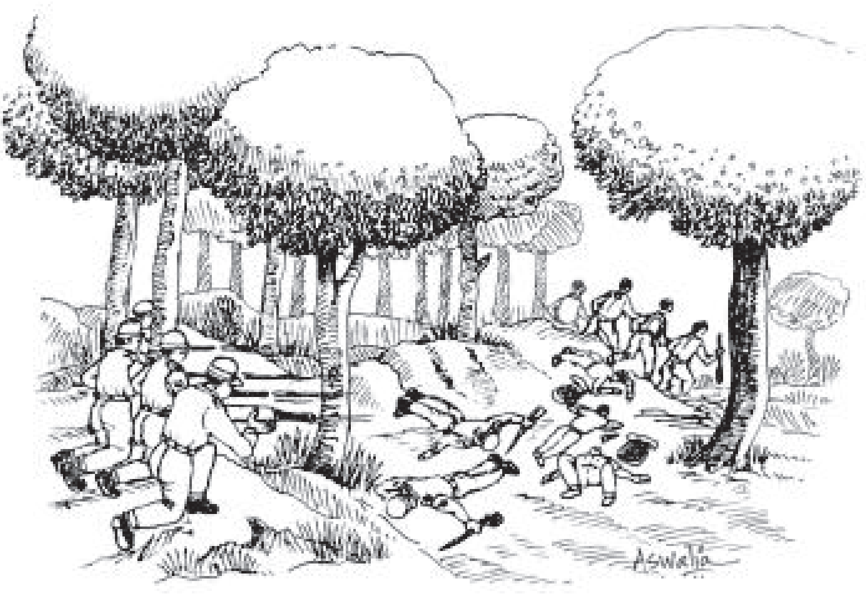

नीलम— तब वे भाग क्यों न गये ?

जयदेव— भागने की कोशिश तो की। हमारी चुनौती सुनकर वे अपनी जीप लेकर भागने लगे। लेकिन हमारी दो तीन जीपों ने उनका पीछा किया। मैंने ऐसा निशाना मारा कि उनकी जीप का पहिया उड़ गया। वह लुढ़क कर एक खड्डे में जा गिरी। कोई चारा न देख जीप से उतर कर उन्होंने गोलियाँ चलानी शुरु कीं। हमारे जवानों ने भी ....टेलीफोन की घण्टी बजती है। मोर्चाबन्दी कर ली। देखना, कौन है ? (नीलम उठकर टेलीफोन सुनती है)

नीलम— (टेलीफोन पर हथेली रखकर जयदेव से) डी. सी. साहब है। पूछ रहे हैं, आप आ गये कि नहीं ? अभी मिलने आना चाहते हैं।

जयदेव— आ जायें।

नीलम— (टेलीफोन पर) आ जाइये। वह आप की प्रतीक्षा करेंगे। (टेलीफोन रख कर पास आते हुए) अभी सफर के कपड़े तक तो बदले नहीं, हाथ मुँह को पानी तक छुआया नहीं। यह भी कोई बात है ! कह देते, अभी ज़रा थका हूँ, दोपहर बाद आ जायें।

जयदेव— पुलिस और सेना में भी थकना ! यह एक डिसक्वालिफिकेशन है। हां, यह कह देता तो शायद अधिक उपयुक्त था कि मैं अभी अपनी प्राण प्रिया से बातें कर रहा हूँ इसलिये.....

नीलम— चलो हटो। ज़्यादा बातें न बनाया करो। जाके दो-दो महीने कभी चिट्ठी तक तो........

(कार के आने की और रुकने की आवाज़)

लगता है, वह आ भी गये।

सुमित्रा— **(प्रवेश करते हुए)**—अरे अभी तुम ने चाय-वाय कुछ नहीं पिलाई। मैं ही चलती हूँ रसोई में....!

नीलम— **(सकपकाकर उठते हुए)**—नहीं, माँ जी! आप नहीं—! मैं..... मैं ज़रा बातों में.........अभी बना कर लाई।

(दोनों जाने लगती हैं। डी. सी. का प्रवेश। जयदेव फुर्ती से उठकर स्वागत के लिए बढ़ता है। दोनों मुड़कर उनकी ओर देखकर रसोई में चली जाती हैं।)

डी. सी.— बधाई, मि. देव ! **(हाथ मिलाने को आगे बढ़ता है)**

जयदेव— (हाथ मिलाते हुए)—थैंक्यू, सर।

डी. सी. — सर बैठा होगा ऑफिस की कुर्सी में। खबरदार जो यहाँ सर वर कहा। मैं वही तुम्हारा बचपन का दोस्त और क्लास मेट हूँ, जिससे बिना हाथापाई किये तुम्हें रोटी हजम नहीं होती थी।

जयदेव— बिल्कुल ! बिल्कुल ! असल में यह सर कहने कहलाने की तो आदत सी पड़ गई हैं। खैर, सुनाओ भाभी और बेटा ठीक है ? कब ट्रांसफर हुआ ?

(दोनों आकर सोफे पर बैठ जाते हैं)

डी. सी.— अभी चार पांच दिन हुए।

(नीलम और सुमित्रा चाय लाती है। डी. सी. खड़ा होकर)

नमस्ते माँ जी। नमस्ते भाभी।

सुमित्रा— **(मेज़ पर सामान रखते हुए)**—जीते रहो, बेटा।

नीलम— **(मेज़ पर सामान रखते हुए)**—नमस्ते !

डी. सी.— माँ जी, मैं अपने लंगोटिये यार की वीरता और सूझ बूझ पर आपको और भाभी को बधाई देने आया हूँ। साथ ही एक खुशी की खबर भी.... आज शाम हम शहर की तरफ से देव का सम्मान कर रहे हैं। साथ ही...........

जयदेव— **(बीच में ही टोककर)**—यार, इसकी क्या ज़रूरत है ?

डी. सी.— मेरी तरफ से नहीं, यह गवर्नर साहब का फोन आया है। साथ ही दस हज़ार का इनाम भी उसी स्वागत सभा में घोषित किया जायेगा।

(जयदेव विचार मग्न हो जाता है)

सुमित्रा— (खुशी से) अच्छा!

जयदेव— तो मेरी ओर से घोषणा कर देना कि यह रुपया दोनों मृत पुलिस अफसरों की विधवा पत्नियों में आधा-आधा बाँट दिया जाये।

डी. सी.— अरे देव। यह तुम क्या कहते हो ? दस हज़ार की रकम पर यों ही ठोकर मार रहे हो। क्यों माँ जी, यह ठीक है क्या ?

सुमित्रा— बेटा, यह ठीक है कि दस हज़ार की रकम कम नहीं होती। लेकिन उन विधवाओं और मृत अफसरों के परिवारों के बारे में भी तो सोचो, उनकी क्या हालत होगी ?

नीलम— मैं अपने पति की वीरता पर ही नहीं, उनके त्याग और उन की करुणा पर भी गर्व कर सकती हूँ। यह उनके कुल की मर्यादा है।

डी. सी.— सचमुच, आज मैं अपनी पूज्य माँ पर, अपनी प्यारी भाभी पर, अपने लंगोटिये यार पर गर्व से छाती फुला सकता हूं। देव, तुम्हारा त्याग सचमुच अन्य अफसरों के लिये

अनुकरणीय है। अच्छा! मैं चलता हूँ **(सुमित्रा से चिपट कर)** मेरी प्यारी मां!

सुमित्रा— **(प्यार से कमर पर हाथ फेरती है)** जियो मेरे बेटे ! दोनों भाइयों की लम्बी उमर हो!

(डी. सी. जाने के लिए उठ खड़ा होता है। सब लोग खड़े हो जाते हैं। एक दूसरे का अभिवादन करते हुए डी. सी. को विदा देते हैं।)

शब्दार्थ

सम्भ्रांत = रईस, धनी; **चंपई** = चंपा के फूल के रंग का, पीला; **रुआँसी** = रोने को होने वाली; **बाक़ायदा** = ढंग से; **कैफियत** = हाल, समाचार, विवरण; **निछावर** = न्योछावर, बलिहारी; **गश्त** = पुलिस कर्मचारियों का पहरे के लिए घूमना; **जर्जर** = कमज़ोर; **पुलिस पिकिट** = पुलिस का घेरा; **डिस्क्वालिफिकेशन** = अयोग्यता; **कुशल क्षेम** = राज़ी खुशी; **आनन** = मुख; **कुंकुम** = सिंदूर; **नेत्र** = आँख; **मस्तक** = माथा; **पतलून** = पैंट; **गौगल्ज़** = धूप में लगाया जाने वाला चश्मा; **गौरव** = सम्मान; **सभ्य** = शालीन, सुशील; **हित** = भलाई; **वीरांगना** = वीर स्त्री; **आलिंगन** = गले लगाना; **सतर्क** = चौकन्ना

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए—

(1) सुमित्रा के पुत्र का नाम बताइए।

(2) वाघा बॉर्डर पर सरकारी अफसरों के मारे जाने की ख़बर सुमित्रा कहाँ सुनती है ?

(3) जयदेव वाघा बॉर्डर पर किस पद पर नियुक्त था ?

(4) जयदेव की पत्नी कौन थी ?

(5) वाघा बॉर्डर पर मारे जाने वाले दो सरकारी अफसर कौन थे ?

(6) जयदेव ने तस्करों को मार कर उनसे कितने लाख का सोना छीना ?

(7) जयदेव को स्वागत-सभा में कितने रुपए इनाम में देने के लिए सोचा गया ?

(8) मीना कौन थी ?

(9) नीलम क्यों चाहती थी कि डी.सी. दोपहर के बाद जयदेव को मिलने आएँ।

(10) डी. सी. आकर सुमित्रा को क्या खुशखबरी देते हैं ?

(11) जयदेव इनाम में मिलने वाली राशि के विषय में क्या घोषणा करवाना चाहता है ?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में दीजिए :—

(1) सुमित्रा क्यों कहती है कि अब उसका हृदय इतना दुर्बल हो चुका है कि ज़रा-सी आशंका से काँप उठता है ?

(2) नीलम जयदेव से मान-भरी मुद्रा में क्या कहती है ?

(3) जयदेव को गुप्तचरों से क्या समाचार मिला ?

(4) जयदेव ने अपनी छुट्टी कैंसिल क्यों करा दी थी ?

(5) एकांकी में डी. सी. के किस संवाद से पता चलता है कि डी. सी. और जयदेव में घनिष्ठता थी ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह-सात पंक्तियों में दीजिए :—

(1) चाचा अपने बेटे बलुआ के विषय में क्या बताते हैं ?

(2) चाचा सुमित्रा को अखबार में आई कौन सी खबर सुनाते हैं ?

(3) जयदेव ने तस्करों को कैसे पकड़ा ?

(4) नीलम अपने पति से उलाहना भरे स्वर में क्या कहती है ?

(5) डी. सी. को अपने मित्र जयेदव और उसके परिवार पर गर्व क्यों होता है ?

(6) पुलिस और सेना के अफसरों या सैनिकों के घरवालों को किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है ?

(7) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए—

* बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता, माँजी! ऐसे दिव्य बलिदान पर तो देवता भी अर्घ्य चढ़ाते हैं। वे भी स्वर्ग में जयजयकार करते हुए देश पर निछावर होने वाले का स्वागत करते हैं।
* बेटा, यह ठीक है कि दस हज़ार की रकम कम नहीं होती। लेकिन उन विधवाओं और मृत अफसरों के परिवारों के बारे में भी तो सोचो, उनकी क्या हालत होगी ?

* पुलिस और सेना में भी थकना ! यह एक डिस्क्वालिफिकेशन है।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—

निराशा	____________	____________
सभ्य	____________	____________
सूर्य	____________	____________
गौरव	____________	____________
हित	____________	____________

II. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

स्वार्थ	____________	आशीर्वाद	____________
रात	____________	आसान	____________
दण्ड	____________	निश्चय	____________
टूटना	____________	जल्दी	____________
अनर्थ	____________	सभ्य	____________
हित	____________	दुर्बल	____________

III. निम्नलिखित अनेकार्थक शब्दों के दो-दो अर्थ बताइए—

सोना	____________	____________
मुद्रा	____________	____________
माँग	____________	____________

IV. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य**
वज्रपात होना	अचानक बहुत बड़ा दुख आ पड़ना	____________
छाती फटना	असहनीय दुख होना	____________

बाल बाँका न होना	ज़रा-सा भी नुकसान न होना	____________
दिल धक-धक करना	भयभीत होना	____________
हृदय पर पत्थर रखना	चुपचाप सहन करना	____________
हिम्मत टूटना	हताश या निराश होना	____________
आँखें पथरा जाना	बहुत इन्तज़ार कर थक जाना	____________

(ग) रचनात्मक अभिव्यक्ति

(1) जयदेव की जगह यदि आप होते तो इनाम में मिलने वाली राशि का आप क्या करते ?

(2) मातृप्रेम और देशप्रेम में से कौन सा प्रेम आपको अपनी तरफ आकर्षित करता है और क्यों ?

(3) एकांकी पढ़ने के बाद क्या आपके मन में भी जयदेव जैसा सरकारी अफसर बनकर देश की सेवा करने का विचार आया ? यदि हाँ तो क्यों ? यदि नहीं तो क्यों ?

(4) यदि आपको वाघा बॉर्डर पर जाने का मौका मिला हो तो अपने रोमांचक अनुभव से अपने सहपाठियों को परिचित कराइए।

(घ) पाठ्येतर सक्रियता

(1) देश के लिए शहीद होने वाले कुछ शहीदों के विषय में पुस्तकालय या इंटरनेट से जानकारी एकत्र करें।

(2) इन शहीदों के चित्र एकत्र करें और उन्हें एक चार्ट पर चिपका कर अपनी कक्षा में लगाएँ।

(3) अपने स्कूल के वार्षिक उत्सव में इस एकांकी का मंचन करें।

(ङ) ज्ञान-विस्तार

(1) **अमृतसर**—यह भारत के पंजाब प्रान्त का एक शहर है। यह पंजाब का सबसे महत्त्वपूर्ण शहर माना जाता है क्योंकि सिक्खों का सबसे बड़ा गुरुद्वारा 'स्वर्ण मंदिर' यहीं है।

(2) **स्वर्ण मंदिर**—स्वर्ण मंदिर (Golden Temple) अमृतसर का सबसे बड़ा आकर्षण है। इसे हरमंदिर साहिब भी कहते हैं। यह गुरुद्वारा एक सरोवर के बीचोंबीच बना हुआ है। इसके गुम्बद आदि पर सोना मढ़ा होने के कारण इसे स्वर्ण मंदिर कहा जाता है। स्वर्ण

मंदिर में प्रतिदिन हज़ारों पर्यटक आते हैं। यह सभी धर्मों के लोगों के लिए अटूट श्रद्धा और विश्वास का केन्द्र है।

(3) **जलियाँवाला बाग**—यह भी अमृतसर का एक प्रमुख दर्शनीय स्थल है। परतंत्र भारत में 13 अप्रैल, 1919 ई. को इस बाग में भीषण नरसंहार हुआ। बैसाखी का दिन होने के कारण कई तीर्थयात्री उस दिन यहाँ आए हुए थे। इसके अलावा अंग्रेज़ों द्वारा की गई कुछ गिरफ्तारियों का विरोध करने के लिए बड़े ही शांत और अहिंसक ढंग से एक सभा यहां चल रही थी, तभी जनरल डायर ने इस बाग में उपस्थित लोगों पर अंधाधुंध गोलियां चलवा दीं। सैंकड़ों की संख्या में लोग मारे गए और हज़ारों घायल हो गए। यह क्रूरतापूर्ण घटना ब्रिटिश शासन की निर्दयता और अमानवीयता की साक्षी है।

(4) **वाघा बॉर्डर** — वाघा बॉर्डर एक सैनिक चौकी है जो अमृतसर और लाहौर के बीच जी.टी. रोड पर स्थित है। यह अमृतसर से 32 किलोमीटर और लाहौर से 22 किलोमीटर दूर स्थित है। शाम के वक्त यहाँ होने वाली परेड को देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

****

हिंदी पुस्तक-10

(दसवीं कक्षा के लिए)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

प्रथम संस्करण : 2016...................1,56,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

लेखन एवं संपादन	:	**डॉ.नीरू कौड़ा**
	:	**डॉ. रविदत्त**
	:	**डॉ. मीनाक्षी वर्मा**
	:	**श्री विनोद कुमार**
संपादन एवं संशोधन	:	**डॉ. सुनील बहल**
विषय संयोजन	:	**श्रीमती मनजीत कौर**
चित्रांकन	:	**अमरजीत सिंह वालिया**

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य : ₹ 78.00

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा मैस: होलीफेथ इंटरनैशनल प्रा. लि. जालन्धर द्वारा मुद्रित।